दिन दहाड़े....

मन्मथनाथ गुप्त



साहित्य सहकार
दिल्ली-110 051

मूल्य : पचीस रुपये

प्रथम संस्करण : 1985

प्रकाशक
साहित्य सहकार
ई-10/4, कृष्णनगर
दिल्ली-110 051

आवरण : चेतनदास

पुस्तक बंध : वी० एस० एसोसियेट्स, दिल्ली-32

मुद्रक : शांति मुद्रणालय, दिल्ली-32

DIN DAHARE... (Novel)
By Manmathnath Gupta Rs. 25.00

एक

इंदरसिंह को अपने कानो पर विश्वास नही हुआ। वह सन्न से रह गया। उसे ऐसा लगा कि उसके पैरो के नीचे से धरती खिसक गई।

कही यह एक दुःस्वप्न तो नही है। ऐसा होता है कि किसी अति प्रिय वस्तु को खोने का स्वप्न दिखाई दे जाता है। इसे मनोविज्ञान की भाषा मे ऐंगजाइटी ड्रीम (दुश्चिन्तामूलक स्वप्न) कहते हैं। उसने अपने को टटोल-कर देखा। हां वह जग रहा था। उसके सामने ट्राजिस्टर रखा हुआ था। बहुत से लोग पान-सिगरेट वाले की दूकान पर जमा थे। वह भीड़ देखकर अनायास खडा हो गया था। यद्यपि वह न पान खाता था न सिगरेट पीता था।

उसको यह मालूम तो था कि स्वर्ण मंदिर का काफी बड़ा नमूना बनाकर देहरादून के पास चकरावा छावनी मे सैनिक अभ्यास हो रहा था। पर सैनिको मे तो यह सब तमाशा चलता रहता है। यह उनके सबक शिक्षाक्रम के अतर्गत है। बनिया बैठा-बैठा क्या करे। वह बाटो को तौलता रहता है। सैनिक एक साथ रूस और अमेरिका से लडाई का अभ्यास करते रहते हैं, क्योकि उनका ध्येयवाक्य है—हर समय तैयार रहो। हर आफत के लिए।

उसके मन मे ये बातें कौध गई, पर कान तो ट्रांजिस्टर पर लगे थे। समाचार देने वाला ऑल इंडिया रेडियो था। अतएव अविश्वास की कोई बात नही थी। घटना तो ठीक ही देता था, टिप्पणी चाहे जैसी दे।

इंदरसिंह ने देखा कि सुनने वालो की भीड़ मे जो दो-तीन सिख थे, वे खबर खत्म होते ही सिर नीचा करके चल पड़े। इंदरसिंह भी उनके साथ चल पड़ा। उसे ऐसा लगा कि खड़े सारे हिन्दू श्रोता बहुत खुश थे।

एक बोला—यह तो होना ही था, लाओ इसी बात पर खलीफा बढ़िया पान लगाओ···

आगे उसने नहीं सुना। एक बार इच्छा हुई कि लौटकर अपनी भरी हुई पिस्तौल निकालकर पान खाने वाले को तथा सारी भीड़ को तड़तड़ करके वहीं सुला दे। पर नहीं, यह उचित नहीं होगा। फिर क्रांति रह जाएगी। उसे तो इस क्षेत्र की क्रांति का इन्चार्ज करके भेजा गया था। वह एक जिम्मेदार व्यक्ति है न कि एक जोशीला स्वयंसेवक। वह इंग्लैंड से पढ़ाई छोड़कर आया है।

वह फौरन अपने अड्डे पर पहुंचा, जहां वह रात को सोता था। उस घर में प्रवेश करने से पहले उसने चुप रहकर आहट ली। खबर तो यहां भी पहुंची होगी। पर कोई आवाज नहीं आ रही थी। घर में सन्नाटा था। घर की मालकिन बुढ़िया या अधेड़ औरत तो जल्दी सो जाती थी, अपना कमरा बन्द कर। पर बाकी साथी कहां गए? इस समय तो रोज यहां अपने साथियों की चहलपहल रहती थी। शराब चलती थी। बतकही होती थी। अखबारी खबरों की चीरफाड़ होती थी।

वह कुछ देर रुका। फिर मकान में संभलकर दाखिल हुआ। उसने मकान मालकिन को जगाया—माताजी, माताजी!

महिला दरवाजा खोलकर बोली—क्या है काका (बेटा)! कितनी रात हुई?

—हमारे साथी कहां गए?

महिला बोली—थोड़ी देर पहले सब आए थे। उनके पास कोई तार आया था, कोई मर गया। वे अमृतसर चले गए। अपना सब सामान मेरे कमरे विच रख गए। जल्दी में थे।

इदर महिला के कमरे में घुस गया। चारों तरफ देखता हुआ बोला—क्या सामान?

देखा दो बड़े-बड़े परिचित बक्स हैं। वह समझ गया। ये हथियारों के बक्स थे, जो क्रांति के दिन काम आने वाले थे। कार्यक्रम यह था—कश्मीर के रास्ते पाकिस्तानी आते, कश्मीर से आते कश्मीर फ्रन्ट वाले जो भारतीय कर्मचारी म्हात्रे की हत्या कर चुके थे, ऐन ब्रिटेन में। सैनिक

विद्रोह होते, पीछे से हम लोग फायर करते। फिर भारतीय सेना कहां जाती ? पाकिस्तान के दोस्तों ने वादा किया था कि वे ननकाना साहब और पाकिस्तान मे स्थित सारे पवित्र स्थान खालिस्तान के हवाले कर देंगे।

इंदर को बड़ा बुरा लगा कि साथी उससे बिना पूछे अमृतसर चल पड़े। वह यहां का इंचार्ज था। उसके लिए कुछ देर रुकते तो। पर शायद उन्होंने पहले सुना होगा। छै बजे की खबर सुनी होगी या उससे भी पहले दो बजे की। उसे और भी बुरा लगा कि वह इंचार्ज होते हुए भी पीछे रह गया। सारे कीमती अस्त्र और खजाना इस हिन्दू औरत के हवाले कर गए। माना कि यह बुढ़िया राजनीति से बहुत दूर है, पर है तो आखिर हिन्दू। कहती है कि इसकी एकमात्र लड़की का ब्याह एक सिख से हुआ है। कौन जाने ?

उसने तय कर लिया कि बुढ़िया के हाथों मे इस प्रकार सब कुछ छोड़ जाना उचित न होगा। यदि हम लोग देर से लौटे या न लौटे तो बुढ़िया लालच मे या घबड़ाकर इन बक्सों को खोल सकती है। उसने बुढ़िया से कहा—माताजी ! तुसी तैयार हो लो। आप भी अमृतसर चलिए। वहा दुर्गियाना का दर्शन भी हो जाएगा। फिर वहा हम भी मातम में शरीक होंगे। कोई बड़ा साधु महात्मा मरा लगता है।

बुढ़िया तैयार नही हुई। बोली—काका, मै कहां जाऊगी, तुम जाओ। फिर रात का वक्त है, सवेरे देखा जाएगा। घर किसके भरोसे छोड़ जाऊंगी ?

पर इन्दर नही माना। एक बार सोचा इसे यही मार कर बाहर से ताला लगाकर छोड जाऊं। पर फौरन ही याद आया, यदि लाश यहां रही, तो सड़ेगी, फिर मुहल्ले वाले मकान खोलेंगे। वह ठीक न होगा।

उसने कहा—माताजी, हम ताला लगाकर चल देंगे। दो दिन में लौट आएंगे। आप अगर डरती हो, किराए का क्या होगा, सो अभी ले लो—कहकर उसने सौ रुपए के दो नोट निकाले।

महिला ने झपट्टा मार कर नोट रख लिए, बोली—सवेरे चलूगी, बेटी को खबर करके।

—नहीं-नहीं, अभी चलो। कहीं लाश जला दी तो दर्शन न होगा।

महिला एक कदम पीछे की ओर लेकर बोली—तू जा। मैं भला क्या दर्शन करूंगी, मुझे दिखाई बहुत कम देता है।

पर इंदर नहीं माना। उसने महिला के पैर पकड़ लिए—माताजी, तुसी चलो!

महिला को अच्छा नहीं लगा। वह अपने दीर्घ तजुर्बे से जानती थी कि साधु सन्त भीतर से कैसे होते हैं। यह भी कमाने-खाने का एक ढंग है। पर वह हरमंदिर देखना चाहती थी। बहुत तारीफ सुन रखी थी। अंतिम दिनों में फोकट में दर्शन हो जाए तो क्या बुरा है? फिर घलुए में दुर्गियाना का दर्शन। बोली—तांगा ले आ।

अमृतसर का दुर्गियाना हिन्दू मन्दिर है, जो स्वर्ण मंदिर के मुकाबले में बना है।

एक घंटे के अन्दर वे रेल पर सवार थे। पर वह गाड़ी अमृतसर नहीं जम्मूतवी जाती थी। किसी प्रकार का कोई आरक्षण नहीं था, न टिकट। पर गाड़ी चल देने के बाद इंदर ने रेल के डब्बे के बाबू से क्या खुसर-पुसर की कि रामदेई को नीचे का एक बर्थ मिला और इंदर को सबसे ऊपर का।

दोनों अपने-अपने स्थान पर लेट गए। गाड़ी तेजी से चल रही थी। इंदर लेटे-लेटे सारी स्थिति पर सावधानी से जुगाली करता रहा। रामदेई को साथ कहां ले जाएगा। लगभग रात दो बजे या तीन बजे वह पेशाब करने निकलेगी। घर में यही उसका टाइम रहता था। जब वह उठेगी तो इंदर उसके पीछे हो लेगा। जब वह बाथरूम में घुस जाएगी, तो वह डब्बे का दरवाजा खोलकर रखेगा। उस समय सब यात्री सोए होते हैं। किसी को होश नहीं होता। जब रामदेई पेशाबखाने से निकलेगी, तो वह बगल से आकर उसे धक्का दे देगा। वह नीचे गिर जाएगी, किसी को पता नहीं लगेगा। चलती गाड़ी से गिरने पर वह बच थोड़े ही सकती है। जब लाश मिलेगी, तो उसकी शनाख्त नहीं हो सकेगी। यदि हुई भी तो कौन जानेगा कि उसके साथ कौन था, कोई सहयात्री था या नहीं।

इंदर ने केवल एक बार एक क्षण के लिए सोचा इस औरत को मारना

कहां तक उचित है। उसे भिंडरावाले का एक कथन याद आया—काका कोई किसी को मार नहीं सकता। रब्ब की इच्छा के बिना कुछ नहीं हो सकता। शायद कृष्ण ने अर्जुन को यही कहा था। आक्सफोर्ड के एक भाषण में शायद राधाकृष्णन् ने यह कहा था। फिर यह औरत जीकर क्या करेगी? इसे तो बस जिन्दगी-भर किराया लेना है। इसे और कोई काम नहीं। एक-एक पैसे को दांत से पकड़ती है, जैसे साथ ले जाएगी। यह मरी तो क्या, जीती रही तो क्या? फैसला हो गया।

यह उसकी दूसरी हत्या होगी। उसने इससे पहले एक निरंकारी नेता को मारा था। महज़ अभ्यास के लिए। निरंकारी सिख हैं, पर वे सिख नहीं हैं। वे सिखों के सबसे बड़े दुश्मन हैं। जैसे अहमदिया इस्लाम के दुश्मन हैं। पाकिस्तान ने तो संसद में कानून बनाकर अहमदियों को गैर-मुस्लिम घोषित किया है। अपना खालिस्तान बनेगा, तो उसका भी पहला कानून होगा निरंकारियों को गैर सिख घोषित करके उन्हें निकाल बाहर करना। खालिस्तान में सिर्फ सिख होंगे। न कोई निरंकारी होगा न हिन्दू। उसमें मुसलमान कोई होगा या नहीं इस पर उसने कुछ सोचा नहीं था, न भिंडरावाले ने कुछ कहा था। यदि पाकिस्तान वाले खालिस्तान को ननकाना साहब दे देंगे तो उसके बदले में वे कुछ मांगेंगे। उन्हें राजस्थान का कोई हिस्सा दिया जा सकता है। कश्मीर तो खैर उनका है ही। जैसे लद्दाख चीन को देना पड़ेगा।

एक और कांटे का सवाल था कि गुरु ग्रंथ साहब में फरीदी आदि मुस्लिम सन्तों के जो वचन हैं, वे तो रहेंगे, पर हिंदू सन्तों के जो वचन हैं, उनका क्या होगा?

माना कि यह सैकड़ों वर्ष पुरानी बात है, पर सवाल तो खटकता है।

इंदर सिंह दिल्ली से एम० ए० करके कैम्ब्रिज गया था, पर वहां पढ़ाई में दिल नहीं लगा था। डाक्टर चौहान और ढिल्लों से भेंट हुई और वह खालिस्तानी हो गया। घर वालों ने पसन्द नहीं किया और उसके पिता ने लन्दन में एक अच्छी लड़की ले जाकर शादी करवा दी। पर इंदर ने पत्नी के साथ रहना स्वीकार नहीं किया। उसके पास एक ही तर्क था कि मैंने तो खतरे का रास्ता अपनाया है। पता नहीं, कब क्या हो जाए! मैं शादी

को स्वीकार नही करता। इसके बाद वह लन्दन से लापता होकर कहां गया, ज्ञात नही। शायद अमेरिका गया या पाकिस्तान। वहां उसे कमान्डो प्रशिक्षण मिला। वहां से वह भारत मे आकर स्वर्ण मदिर मे रहने लगा। वहां से कुछ दिनों के लिए झुवल थाने के पास गोलवड गांव में रहा, जहां वह नित्य भाषण देता रहा। जब-तब एकान्त मे जाकर बन्दूक चलाने का प्रशिक्षण भी दिया जाता। वहां एक बाबा विधिचन्द थे, जिन्हें वह भिंडरांवाले के बाद इज्जत करता था।

ऊपर के बर्थ पर जाने से पहले उसने अपनी दस गोलियों वाली भरी पिस्तौल बुढ़िया रामदेई के झोले मे रख दी थी और बुढ़िया के कान में कह दिया था—माई, कोई पूछे तो कह देना तेरे साथ कोई नही है।

रामदेई झटका देकर बोली थी—मैं कोई बेवकूफ थोड़े ही हूं। मैं कह दूगी मेरे साथ कोई नही। क्या मैं जानती नही कि तुम लोग खतरनाक काम मे लगे हुए हो? तुम लोग शायद भगतसिंह के साथी हो। है न?

भगतसिंह के नाम पर इंदर को बड़ा क्रोध आया था। पर मौका ऐसा था कि कुछ कह नही सकता था। फिर यह तो मरने वाली है, इसे समझाकर दिमाग का पेट्रोल क्यो खर्च करना। ये लोग अभी तक भगतसिंह को लिए पड़े है। तब से रावी, सतलज, गगा, यमुना में कितना पानी बह गया, पर ये अभी भगतसिंह के भूत को लेकर ख्याली शहद के साथ चाट रहे हैं। भगतसिंह हिन्दुओं और रूसियों के बहकावे मे आया हुआ गुमराह युवक था। मरते-मरते लिख गया 'मैं क्यों नास्तिक हू।' उसे गुरु ग्रंथ साहब के अमृत रस का पता नही था, नही तो वह मार्क्सवाद की सूखी हड्डी के पीछे न दौड़ता। इंदर को विश्वास था कि वह और उसके साथी भगतसिह से कही बड़े ऐतिहासिक वीर हैं। यदि भगतसिंह ने एक अग्रेज मारा था, तो उसने भी एक निरंकारी को नरक भेज दिया था। निरंकारी अंग्रेज से घटिया है।

ऊपर से बोला—माई, तूसी सो जा। जब तू रात को उठे, तो मुझे आवाज दे देना। मैं तुझे सहारा दे दूगा।

कहकर वह ऊपर बर्थ पर जाकर लेट गया था। उसे लगा कि सिखों

के दिमाग से भगतसिंह के कोड़े को जड़-मूल से निकाले [illegible] काम न चलेगा। एक दफे उसने भिंडरांवाले के सामने भगतसिंह की बात उठाई थी। इंदर ने कहा था कि भगतसिंह पर जाने कितनी किताब निकली है, इतनी किताबें गुरु गोविन्द सिंह पर भी नहीं निकली और न नानक पर।

इस पर भिंडरांवाले ने कहा था—संसार में काका किताब सिर्फ एक है, गुरु ग्रंथ साहब, बाकी सब रद्दी है।

भिंडरांवाले के किसी दरबारी ने डाढ़ी हिलाते हुए कहा—

पोथी पढि पढ़ि जग मुआ, पंडित भया न कोय,
ढाई आखर प्रेम का, पढ़ें सो पंडित होय।

इंदरसिंह चुप हो गया था, पर उसे लगा था कि प्रश्न का सही उत्तर नहीं मिला। पर वह बोला नहीं। इंदर ने देखा था कि गांवों तक में भगतसिंह का फोटो टंगा है। उसकी मूर्तियां जाने कहां-कहां है।

यही सब सोचता हुआ वह कब सो गया पता नहीं। रात दो बजे उसकी आंख खुली। घड़ी देखकर जमुहाई लेते हुए उसने नीचे देखा। महिला अभी सो रही थी। सांसों की आवाज आ रही थी। जब तीन बजे तो वह उठ बैठा। सब यात्री सो रहे थे, मुर्दों की तरह। बुरी बास आ रही थी—पसीने की, पाउडर की, पाद की, पान-तम्बाकू की। हिन्दू न जाने क्या खाते हैं, पादते बहुत है। सन्नाटा था। यही मौका था महिला को ठिकाने से लगाने का। वह नीचे उतर पड़ा। बुढ़िया चादर ओढ़े थी। उसने धीरे से मुंह पर से चादर हटा दी। अरे, यह तो कोई और था। बोला—अरे! इस बर्थ पर तो मेरी माताजी लेटी थी, आपने उन्हें कहां भेज दिया?

वह आदमी नाराज होकर उठ बैठा। बोला—कौन माताजी? यह बर्थ तो खाली था। मुझे बाबू ने दिया था। पांच रुपये दे चुका हूं। वह किसी और बर्थ में होंगी। तुम कौन हो जी? रात को जगाते फिरते हो।

इंदर की समझ में नहीं आया कि मामला क्या है। बोला—उनके पास एक झोला था।

तब तक बीच के बर्थ का यात्री जग चुका था। वह बोला—हां-हां, आपकी माताजी थी। वह किसी स्टेशन पर उतर गईं; तभी यह साहब आए।

—मेरा झोला ?

बीच के बर्थ वाला बोला—वह झोला ले गईं।

इतने मे जालंधर स्टेशन आ गया। साढ़े तीन बज चुके थे। इंदर ने सोचा, क्या मैं उतरकर मकान मालकिन का पीछा करूं? कुछ समझ मे नही आया।

लोगो ने देखा जब गाड़ी चल पड़ी तो सरदार ऊपर के बर्थ पर जाकर सो गया। बीच के बर्थ का यात्री तथा नीचे के बर्थ का यात्री दोनों आश्चर्य मे रह गए कि मां गायब हो गई और वह हजरत सो रहे हैं, पर सोचा कि कलियुग में सब कुछ चलता है। मां बिना बताए चली गई। बेटा चैन से सो गया। वाह !

गाड़ी चल रही थी। खट, खट···झट पट···

दो

गाड़ी दिन के ग्यारह बजे जम्मू पहुंची। इंदरसिंह ने सोचा था, बहुत यात्री होंगे, पर बहुत थोड़े यात्री थे। जो थे उनमे भी अधिकांश स्थानीय लगे, शौकिया यात्रा करने वाले नही। उसके मन पर इसका एक निरुत्साह-जनक प्रभाव पड़ा। पृष्ठभूमि में स्वर्ण मंदिर में भारतीय सेना का प्रवेश (न जाने क्या हुआ) और महिला का उस प्रकार दस गोलियों वाली पिस्तौल लेकर रात के अंधेरे मे गायब हो जाना था।

वह पूछकर अखबारों की स्टाल (दूकान) पर पहुंचा। पहले दूकानदार ग्राहक का स्वागत करते थे। अब मुंह फेर लेते हैं। दूकानदार ने उसे देखकर मुंह फेर लिया। इंदर के मन मे चोर था। उसे लगा, सिख होने की वजह से। पर यह भी हो सकता है कि अखबार न हो। उसे बड़ा बुरा लगा कि दूकानदार ने उसे कोई महत्त्व नहीं दिया। वह इतना बड़ा आदमी और यह व्यवहार !

वह कुछ समय तक सजी हुई पत्रिकाएं देखता रहा। सब साप्ताहिक या मासिक थे। जब स्थिति हर मिनट बदल रही है, तो ये साप्ताहिक किस

खेत की मूली हैं। उसे तो पता करना था कि सेना का क्या हुआ? क्या वह कुछ कर पाई या मार खाकर लौट पड़ी अपने घावों को थूक लगाकर चाटने और मरहम पट्टी के लिए। उसे यही आशा थी क्योंकि सेनापति शाहबेग का, जो गुरिल्ला युद्ध के सबसे बड़े विशेषज्ञ थे, यही कहना था। शाहबेग पहले गोरखा रेजिमेंट के अफसर थे, बाद को वह पैराशूट ब्रिगेड और पंजाब रेजिमेंट में रहे। जब 1970-71 में बांगला देश का स्वतंत्रता संग्राम चला, तो उस अवसर पर शाहबेग ने मुक्ति वाहिनी के प्रशिक्षण में अच्छी सेवा की थी। उस अवसर पर शाहबेग ने जनरल जगजीत सिंह अरोरा के अधीन उपयोगी काम किया था। बांगलादेशियों की तरह उसने भी लुंगी पहनकर मुस्लिम टोपी पहन ली थी। फिर मेजर जनरल के रूप में जबलपुर मुख्यालय, मध्यप्रदेश क्षेत्र के सेनाध्यक्ष रहे। मध्यप्रदेश में सेनापति शाहबेग पर भ्रष्टाचार का अभियोग लगा, और जांच-पडताल के बाद उनसे कहा गया कि वह सेवा छोड जाएं।

इस प्रकार जनरल शाहबेग भिंडरांवाला की शरण मे आ गया। शाहबेग ने कहा—सन्त जी, लड़ाई करना अब एक विज्ञान बन चुका है। महज जोश से कुछ नही बनने का। आप मुझे आज्ञा दें। मैं सेवा करूं।

भिंडरावाले ने शाहबेग और अमरीक सिंह को पूरी आजादी दी। इन्ही की देख-रेख मे गुरुद्वारे की कमाई और विदेशी चन्दे से जहा-जहां जरूरी समझा गया पिलबाक्स बनाए गए, मंदिर की दीवारों मे छेद किए गए, बालू के बोरे रखे गए ताकि कोई घुसना चाहे तो उसे छलनी बनाया जा सके। तस्करों और दोस्ताना पुलिस अफसरों की सहायता से चीनी, अमेरिकी, पाकिस्तानी अस्त्र मंगाकर जहां-तहा अस्त्रशाला बनाई गई। हथगोले भी प्रचुर मात्रा में आए। इंदरसिंह पांच दिन पहले तक स्वर्ण मंदिर में था। केवल एक अवसर पर वह बाहर गया था, उस निरंकारी नेता को मारने। मारने तो निरंकारी बाबा के पुत्र को गया था, पर जब वह नही मिला (कायर कही का, कही छिपा होगा) तो खाली हाथ लौट-कर अपनी निराशा व्यक्त करने की बजाय, वहा जो भी बड़ा नेता लगा, उसे धांय-धांय करके सुलाकर वह मोटर साइकिल पर निकल आया था।

बाबा ने एक प्रवचन में कहा था—अगर राह चलते सड़क पर एक निरंकारी मिले और दूसरा सांप, तो पहले निरंकारी को मारो फिर सांप से निपटना।

इंदर बिलकुल अचल अटल (शायद ड्रग का सेवन कर रखा हो) दूकानदार से पूछा—कोई अखबार?

दूकानदार बिलकुल विचलित न होकर बोला—कश्मीर टाइम्स—कहकर कश्मीर टाइम्स की ढेरी दिखा दी। फिर मुह फेर लिया।

इंदरसिंह ने उस ढेरी को देखा जैसे सांप प्लास्टिक के मेंढक को देखता है, बोला—दिल्ली या चंडीगढ का कोई अखबार?

दूकानदार बोला—नहीं—फिर ध्यान में गोता लगा गया।

तब इंदर ने कश्मीर टाइम्स की एक प्रति उठा ली और दाम देकर बस स्टैंड पहुंच गया।

कश्मीर टाइम्स मे कोई नई खबर नही थी। वही रात की खबरें थी। निराशा हुई, पर साथ ही आशा हुई कि शायद सेनापति शाहबेग के पिलबाक्स, गोलियां चलाने के छेद और बालू भरे बोरे काम आए हो और भारतीय सेना अरदब मे आकर खड़ी हो। उधर से इस समय पाकिस्तान हमला कर दे, चीन लद्दाख पर चढ़ आए, और कश्मीर मे बखेड़ा खड़ा हो जाए, तो बहुत कुछ हो सकता है। पर उसने चारो तरफ देखा यह जम्मू है तो कश्मीर का ही अंग, पर यहां तो किसी प्रकार की कोई धड़कन नहीं है। सारा बुझा-बुझा दीखता है। उसे याद आया कि जम्मू तो हिन्दू-प्रधान है। हिंदू, हिंदू, हिंदू। सर्वत्र हिंदू । यही वह महासागर है जिसमें सिख यहूदियों की तरह सारे क्षेत्रों मे आगे बढ़े हुए होने पर भी उनकी नाव डूबती दिखाई पडती है। लालबहादुर शास्त्री ने भारत में अपने अन्तिम व्याख्यान मे कहा था—क्या खूबी है इनकी कि इनके कंधे पर हल रख दो तो ये हैं सबसे अच्छे किसान और बंदूक रख दो तो ये हैं सबसे अच्छे सैनिक। लालबहादुर ने यह बात सब पंजाबियो के लिए कही थी, पर भिंडरांवाला प्रचारक इसे ऐसे उद्धृत करते थे मानो लालबहादुर ने यह सिखों के लिए कहा हो। इसी नाते भिंडरांवाला मार्का इतिहास में लालबहादुर को भारत का सबसे बड़ा निष्पक्ष नेता करार दिया गया था।

हर युद्ध के साथ नया इतिहास लिखा जाता है। ऐतिहासिक व्यक्तियों का पुनर्मूल्याकन होता है।

उसने बस का टिकट लिया तो सबसे कीमती टिकट लिया सुपर डीलक्स बस का। मिनी बस से कुछ बडी थी। सुना कि यह रात आठ बजे तक श्रीनगर पहुंच जाएगी। जितना जल्दी पहुंच जाए उतना अच्छा। अफसोस कि वह कश्मीर में अपने साथियों के पते लेकर नही आया था। कश्मीर में डा० फारूक अब्दुल्ला की कृपा से अपने लोगों के कई प्रशिक्षण शिविर चल चुके थे। कश्मीर मोर्चा (म्हात्रे के हत्यारे) और खालिस्तानी मोर्चा का संयुक्त शिविर। भारत सरकार ने समझ क्या रखा है। हरेक सिख और हरेक मुसलमान (सिवा कुछ जूते चाटने वालों के) हमारे साथ है।

पर उसे निराशा हुई कि जहां जम्मू बस स्टैंड में लोग ऐसे व्यवहार कर रहे थे मानो अमृतसर मे स्वर्ण मंदिर में हिन्दू सेना का आक्रमण हुआ तो कुछ हुआ ही नहीं। अपनी बस में कोई सिख नही था।

वह व्याकुल हो रहा था कि पता लगे कि ताजी से ताजी परिस्थिति क्या है। इंदिरा गांधी ने सारा गुड़ गोबर कर दिया। और पन्द्रह दिन मिल जाते तो क्रांति हो जाती। उधर से जीया हमला कर कश्मीर ले लेता और चीन लद्दाख दबा जाता। अपने लिए हरियाना और राजस्थान का उत्तरी हिस्सा काफी था। अपनी खेती की बदौलत हम भारत का मिजाज दुरुस्त कर देते। पर इस औरत ने सारा काम बरिवंड कर दिया।

उसे लग रहा था कि बस बहुत धीरे चल रही है। बस में सुना कि मंदिर पर चढ़ाई के प्रतिवाद मे श्रीनगर में कश्मीर मुक्ति मोर्चा और सिखों का जुलूस निकला था। उस पर गोली चलाई (किसने?) और सात या नौ आदमी मारे गए। तो क्या डा० अब्दुल्ला धोखा दे गया? उसे शायद क्रांति से कोई मतलब नही, उसे अपनी गद्दी से मतलब है। सिद्धान्तहीन दोस्त ऐसे ही होते हैं।

वह कान खड़े करके सुनता रहा। पर ड्राइवर ने शायद कन्डक्टर को आंख मार दी। कंडक्टर कश्मीरी में बातें करने लगा। भाषा बदल गई

और जहां तक समझ में आया विषय भी बदल गया। वह कुछ पूछ नहीं सका। उसे पता था कि कश्मीर सरकार की चश्मपोशी या सहयोग से कश्मीर में गुरमत (गुरुमत) शिविर चल चुके थे, जहां धुआंधार भाषण होते थे। बंदूक आदि चलाने का तथा कमांडो प्रशिक्षण होता था। बैंक लूटने की शिक्षा दी जाती थी। यह सब वर्षों से चल रहा था। 6 मई 1984 को छेहर्टा गुरुद्वारा में सिख छात्र संघ का एक सम्मेलन किया गया, जिसके जुलूस में यह अनोखा नारा था—बैंक लूटेगा खालसा। पूंच, बरख, बारमूल्ला में शिविर हुए थे। बारामूला में 600 सिख थे।

डा० अब्दुल्ला एकाध शिविर में गए थे और वहां उनका स्वागत खालिस्तान जिन्दाबाद, पाकिस्तान जिन्दाबाद से हुआ था। इन शिविरों में सिखों को अलग जाति (नेशन) के रूप में बताया जाता था और भिंडरांवाले की प्रशंसा की जाती थी। यह कहा जाता था कि सिखों ने न कभी संविधान को स्वीकारा न राष्ट्रीय गीत को कोई महत्त्व दिया। 1981 में एक सिख करनसिंह ने एक भारतीय हवाई जहाज का अपहरण (हाइजैक) किया था। उसे व्याख्यानों में महावीर करके चित्रित किया जाता रहा। अफसोस है कि सिख भी उसे नहीं जानते थे क्योंकि प्रचार के साधनों पर हिन्दुओं का एकाधिकार है।

यह सब डा० अब्दुल्ला की जानकारी में होता रहा। पर अब गोली क्यों चलाई जब कश्मीर मुक्ति मोर्चा (म्हात्रे के हत्यारों) और अकालियों ने हरमंदिर पर फौजी चढ़ाई के प्रतिवाद में जुलूस निकाले।

डा० अब्दुल्ला कई बार अमृतसर जाकर अकाली नेताओं यहां तक कि भिंडरांवाला से मिल चुके थे। 14 नवम्बर 1982 को जब डा० अब्दुल्ला स्वर्ण मंदिर आए थे, उस समय इंदरसिंह वहां मौजूद था। वह अभी-अभी विदेश से आया था। वह नेताओं की उस गुपचुप सभा में मौजूद नहीं था। लोंगोवाल, तोहरा, बादल, बलवंतसिंह डा० अब्दुल्ला से एक साथ मिले, पर भिंडरांवाला ने कहा—मैं अकेले मिलूंगा।

डा० अब्दुल्ला उससे अकेले में मिले थे। यही नहीं, जब जम्मू कश्मीर विधान सभा का चुनाव हुआ था, तो बादल वगैरह कश्मीर जाकर उन

चुनाव क्षेत्रों मे अब्दुल्ला के पक्ष मे भाषण दे आए थे, जहां सिखो के कुछ वोट थे।

1983 के 27 दिसम्बर को इंदरसिंह स्वयं जाकर डा० अब्दुल्ला को भिडरांवाले का एक गुप्त पत्र दे आया था। उसमें क्या लिखा था पता नही, पर उसके बाद से अस्त्रशस्त्र (जिन पर पाकिस्तानी या चीनी छाप थी) जल्दी-जल्दी आने लगे थे। इंदरसिंह को जम्मू मे ही उस अवसर पर पता लगा था कि 10 दिसम्बर को कांग्रेसी नेता मुफ्ती मुहम्मद पूंच मे एक सभा मे भाषण देने जा रहे थे तो नाना गगली साहब गुरुद्वारे के पास सिख फेडरेशन के छात्रों ने नंगी तलवार दिखाकर गाडी रोक ली थी। सुनाने वाले ने हंसकर सुनाया था कि मुफ्ती साहब थरथर काप रहे थे और शायद उनकी पेशाव (या टट्टी ठीक याद नही, या दोनो) निकल पड़ी थी। उसी वक्त कुछ कांग्रेसी आ गए, तो वह भीगी बिल्ली से कैसे तुरन्त शेर हो गए थे सुनकर इंदरसिंह खूब हंसा था। शिकायत करने पर भी डा० अब्दुल्ला ने कोई कारवाई नही की थी।

इंदरसिंह इन घटकों के आधार पर यह समझने में असमर्थ रहा कि अब्दुल्ला सरकार ने गोलिया कैसे चलाई, पर कही फौजी चढ़ाई से घबड़ाकर वह बदल तो नही गई। उसने सोचा कंडक्टर से पूछ ले।

बोला—कडक्टर जी।

—क्या बात है सरदारजी ? घबराओ मत बटोट में ठहरेंगे, वहां चाय वगैरह पी लेना।

—नही, चाय को नही पूछ रहा हूं।

—तो क्या पूछ रहे हो ?—कहकर उसने मुह फेर लिया, बोला—श्रीनगर में कर्फ्यू लगा है, दफा 144···

ड्राइवर की ओर से तिरस्कारपूर्ण इशारा पाकर कंडक्टर चुप हो गया। पर ड्राइवर ने थोडी देर रुककर एकाएक कहा—श्रीनगर मे सरदार गिरफ्तार हो रहे है। अगर चाहो तो बटोट में उतर जाना। तुम्हारे पास सामान भी तो कुछ नही है। कोई पिस्तौल वगैरह हो तो तूसी सानु (तुम हमको) दे जाना। हमें शौक है इन चीजों का।

सुनकर इंदरसिंह रोए कि हंसे समझ मे नही आया। दूसरे यात्रियों

का ध्यान इस ओर आ चुका था, देखकर इंदरसिंह ने कहा—मुझे पिस्तौल-इस्तौल से क्या मतलब? मैं सरकारी नौकर हूं।

एक यात्री मसखरेपन से बोला—यह भी तो हो सकता है कि आप खालिस्तानी सरकार के नौकर हों।

इस पर सारे यात्री हहराकर हंस पड़े। इंदर समझ गया कि आगे बोलना खतरे से खाली नहीं है।

कंडक्टर बोल पड़ा—दफा 144 लगा है, आप लोग पोलिटिकिल बात-चीत न करें, नहीं तो मेरी नौकरी चली जाएगी।

कहकर उसने मुंह फेर लिया और ड्राइवर से कश्मीरी में बातें करने लगा। सब यात्री चुप हो गए क्योंकि सब को यह फिक्र हो गई कि रात नौ बजे श्रीनगर पहुंचकर कैसी दुर्दशा होगी। परिस्थिति की कालिख को और गहरी करते हुए एक बच्चा रो पड़ा। इंदरसिंह का मन भी रोने लगा। प्रकृति सुन्दर थी। पहाड़ एक-दूसरे से हाथ मिलाकर सन्ताली नृत्य में लगे थे। पर उस तरफ इंदर का ध्यान नहीं था। एक दस दिन का समय और मिल जाता तो क्रान्ति हो जाती। दिल्ली सरकार ने खालिस्तान, पाकिस्तान और चीन के सारे सपनों की इमारत को एक चाबुक से चकना-चूर कर दिया। यह औरत बड़ी भयंकर है। इसी ने पाकिस्तान के दो टुकड़े करके उसका बधिया बैठा दिया। किसी ने क्या खूब कहा कि गांधी होते तो वह अहिंसा के कारण बांगला देश की मुक्ति सेना की मदद में अपनी सेना न भेजते और नेहरू होते तो अन्तर्राष्ट्रीय कानून के चक्कर में पड़कर कान में तेल डालकर सो जाते। पर यह औरत, वाजपेयी की भाषा में रणचंडी बनकर इसने क्रान्ति की ज्वालामुखी सुलगा दी। भिंडरां-वाला को चाहिए था कि सम्पादकों (जगतनारायण, रमेश और प्रीत लड़ी से सुमीतसिंह) की बजाय सबसे पहले इसको खतम•••। संपादकों के टर्र-टर्र से कोई फफोले थोड़े ही पड़ते हैं।

बटोट आ गया। अरे बटोट तो शहर हो गया। पाइन पीछे पें पें कर रहे हैं। चूल्हों के धुएं उमड़-घुमड़ रहे हैं। सब यात्री चाय-पानी के लिए उतर पड़े। ड्राइवर ने कहा—पन्द्रह मिनट।

इंदर भी उतर पड़ा।

प्रश्न यह था कि क्या वह यहीं रह जाए ?

चाय पीते-पीते वह सोचने लगा। रात नौ बजे कर्फ्यू लगे श्रीनगर में पहुंचना ठीक न होगा, पर यहां भी क्या करेगा ? यदि वह टूरिस्ट सेंटर में उतर कर डा० अब्दुल्ला के घर पर यह आशा करे कि वह उसे पहचान लेंगे क्योंकि वह कुछ महीने पहले भिंडरांवाले का खत लेकर आया था, तो यह दुराशा होगी। और किसी का नाम याद नहीं था। फिर कर्फ्यू में कौन उसे जाने देगा।

ड्राइवर ने हार्न दिया।

हां, उसी की बस का ड्राइवर था।

वह पैसे देकर जल्दी से बस में बैठ गया।

सबने उसे देखा। पर कोई कुछ नहीं बोला। गाड़ी चलने लगी।

कभी यह यात्रा बहुत सुन्दर लगी थी। पहाड़ की परतों के साथ मन की परतें खुलती जाती थीं। नदियों, झरनों के साथ मन दौड़ता था। बादल पहाड़ों की आड़ में लुकाछिपी खेलने लगते थे। पाइन की गंध में हवा बोझिल हुआ करती थी, पर अब बड़ा टचरस और बकवास लग रहा था। अजागलस्तन की तरह सारा निरर्थक था। ज्यों-ज्यों श्रीनगर पास आ रहा था, दिल बैठता जा रहा था। भय नहीं, ग्लानि। शायद पराजय के चाबुक की मार थी। हाय बसा-बसाया फूलों-भरा चमन उजड़ गया। आशाओं के अंकुरों पर बर्फ का हथौड़ा पड़ गया।

टूरिस्ट सेन्टर में बस ठहरी, तो इंदर उतर पड़ा। चारों तरफ पुलिस ही पुलिस थी। तो क्या ? वह गिरफ्तार किया जाएगा।

तीन

पाकिस्तान के प्रधानमंत्री जुल्फिकार अली भुट्टो को फांसी देने वाला ईसाई जल्लाद तारा मसीह ने जब से फांसी लगाई थी, तब से उस पर मुसीबत के पहाड़ टूट पड़े थे। उसकी पहली बीवी एक दिन मर गई थी। दूसरी बीवी एक मुस्लिम के साथ भाग गई थी।

साल बाद यह तीसरी बीवी जैसे-तैसे हाथ लगी थी। फातिमा जान ने, जो बताती थी कि उसका बाप अंग्रेज था, उससे इस शर्त पर शादी की थी कि वह अपना पुश्तैनी फांसी देने वाला गन्दा नामाकूल पेशा जल्दी से जल्दी छोड़ देगा और कोई भले आदमियों वाला काम करेगा। पर तीन साल निकल गए थे, कोई वैकल्पिक पेशा सामने नहीं आया था।

फातिमा को खुश रखने के लिए उसे हर वक्त शराब में मट्ट रहना पड़ता था। उसका कथित अंग्रेजी बाप (फोटो से चमरेशियन लगता था) बहुत शराबी था। शराब के नशे में उसने (वह ड्राइवर था) गाड़ी लड़ा दी थी, जिसमें वह खुद भी मारा गया था। कम्पनी ने उसकी बीवी को क्षतिपूर्ति के रूप में पचास (मां कहती थी बीस) हजार रुपये दिये थे। इस रकम से उसकी मां ने अपने से कम उम्र एक मुसलमान से शादी कर ली थी। वह खुद शादी के पहले कलमा पढ़कर मुसलमान बन गई थी। पर बेटी को मुसलमान न बना सकी थी। मां ने बहुतेरा समझाया कि धर्म परिवर्तन में क्या रखा है, सब खुदा के बन्दे हैं, या तो सारे धर्म उसी के रास्ते हैं या सारे फॉड (धोखे की टट्टी) हैं, पर फातिमा नहीं मानी। बोली—तुमने पापा को छोड़ दिया पर मैं उन्हें छोड़ नहीं सकती।

अगर सब खुदा के बन्दे हैं, तो उसका सौतेला बाप ईसाई क्यों नहीं बन जाता। इस पर मां ने कहा कि मजहबी मामलों में तर्क वर्जित है। फातिमा ने इस पर यह धमकी दी कि अगर ज्यादा कहोगी तो मैं नाम बदलकर *मरियम या मेरी हो जाऊंगी*। ईसाई होते हुए मैंने फातिमा नाम छोड़ा नहीं।

पाकिस्तानियों को खुश करने के लिए बाप ने उसका नाम फातिमा रखा था। मां-बेटी में बड़ा झगड़ा हो गया था। मां ने कहा—बड़ी आई है पितृभक्त। वह तो शराबी था।

फातिमा ने डपटकर कहा—शराबी था तभी तो तुम्हें पचास हजार रुपये मिले जिससे गुलछर्रे उड़ा रही हो! नहीं तो तुम्हें कोई एक हजार भी तो नहीं देता। और शराबी कह रही हो, सो ईसाई धर्म में शराब पीने पर कोई रोक-टोक नहीं है। इस्लाम में तो शराब हराम है, पर तुम दोनों

पापा के पैसे से रोज शराब पीते हो। मै देखती हूं। तुम्हें मुसलमानी से इश्क नही, तुम्हे मूसल चाहिए, सो मिल गया।

उसी दिन फातिमा जान यंग वूमेन्स क्रिश्चन एसोसिएशन में कमरा लेकर घर से अलग हो गई। उसे बाप की कम्पनी मे नौकरी तो मिली ही थी। इसी मनोवैज्ञानिक मुहूर्त में तारा मसीह प्रेमिक के रूप में सामने आया। उसके पास एक छकड़ा कार थी और नकद साठ हजार रुपये। लता को सहारे की जरूरत थी, सो वह जैसा भी पेड़ सामने मिला उस पर चढ़ गई। तारा मसीह ईसाई तो था ही।

एक साल पहले फातिमा ने जिद पकड़ी कि मैं पितृभूमि इंग्लैंड (असली पितृभूमि बहराइच यू० पी०) देखूगी, तब तारा मसीह के जूते इस्लामाबाद सचिवालय मे दौडते-दौड़ते फट गए। किसी दयालु जीया--भक्त भुट्टोद्वेषी ने उसका इग्लैंड मे टूर बना दिया कि वहां से ही हमने फासी की प्रथा ली है, हम तो वही पड़े है, वहां इस बीच क्या उन्नति हुई है उसे देखने, समझने, अपनाने के लिए मिस्टर तारा मसीह एक महीने तक डार्टमूर आदि जेलों का दौरा करे। पर इस टूर मे फातिमा की कोई गुजाइश नही निकली। तब मिस्टर मसीह को जूतो का एक दूसरा जोड़ा सचिवालय को न्यौछावर करना पड़ा। उन्ही दिनो एक सांस्कृतिक शिष्ट-मंडल इंग्लैंड जा रहा था, उसमे फातिमा मसीह को किसी न किसी रूप में यद्यपि वह शिल्प-साहित्य-कला विहीना थी (यह नौकरशाही के लिए बाएं हाथ का खेल था) फिट कर दिया।

नतीजा यह है कि फातिमा अपनी पितृभूमि (हाय बहराइच) देखने गई। वहां बहुत खोजा पर पिता विक्टर जान के जन्मस्थान का इंग्लैंड मे पता नहीं मिला। जिस पुराने पीले पडे हुए पुर्जे के बल पर वह खोज रही थी उसमे लिखा था—रसेल स्ट्रीट, बहरा। पर सारे इंग्लैंड मे बहरा नाम का कोई स्थान नही था। किसी ने कहा, वेल्स मे ऐसे नाम होते है। पर वहां भी पता नही। एक लाल बुझक्कड़ अंग्रेज ने कहा, तुम्हारे वालिद बहरीन (अरब) के होंगे। असल में उस पुर्जे में इच उड़ गया था। इंग्लैंड मे बहरा-इच कहां मिलता। वहां से आकर वह रोजा रम के बदले स्काच व्हिस्की की शौकीन हो गई जैसा कि होना ही चाहिए था, होता है। हाय शेक्सपियर ?

फातिमा का तो यह रहा। उधर मिस्टर टारा मसीह लन्दन में स्वनामधन्य डाक्टर चौहान से टकरा गया था।

डाक्टर चौहान बड़े तपाक से टारा मसीह से मिला। एक व्हिस्की की बोतल खोलकर दो गिलास तैयार किए—आप तो बड़े मशहूर हैं। भुट्टो को आपने…

मसीह नाराजी से बोला—मुझे अपनी शोहरत से नफरत है। उसी से बचने के लिए मैं यहां इंग्लैंड आया हूं। मेरी बीवी फातिमा मसीह एक सांस्कृतिक शिष्टमंडल में आई है। यह क्या कहते हैं एक अदाकार है।

डाक्टर चौहान ने कहा—सारे इतिहास में आप उसी तरह अमर और मशहूर रहेंगे जैसे भुट्टो। इस मामले में आपका मुकाबला एक ही आदमी से हो सकता है, वह है गोडसे, जिसने गांधी की हत्या की थी। पर मैं चाहता हूं आप गोडसे से आगे बढ़ जाएं। आप अब तक एक ही प्रधानमंत्री को फांसी पर चढ़ा चुके हैं। मैं चाहता हूं कि आप भारत की प्रधानमंत्री को और घलुए में राष्ट्रपति जैलसिंह को फांसी पर चढ़ाएं। इस तरह आप इतिहास के सबसे बड़े जल्लाद होंगे। उस वक्त आप देखेंगे कि अमेरिका में—जहां पत्रकारिता सबसे अधिक ऊंचाई पर पहुंच चुकी है, आपकी पुस्तक (मैं लिखूंगा) कम-से-कम पांच लाख डालर में जाएगी और आप पर फिल्म करोड़ डालर की होगी। लीजिए और व्हिस्की लीजिए।

यह सब सुनकर मसीह को विशेष खुशी नहीं हुई, बोला—मैं कुजा, पिद्दी न पिद्दी का शोरबा। अन्धे के हाथ बटेर लग गया। यह कहिए कि जनरल ज़ीया की ऐसी मर्जी हो गई कि उन्होंने भुट्टो को पाकिस्तान के दो टुकड़े करने की सजा दे दी। यों तो मुकदमा और चलाया। एक पाकिस्तानी ताल्लुकेदार के खून का। पर आप तो जानते हैं कि सियासत (राजनीति) में हमेशा से खून खच्चर का बोलबाला रहा। बदनाम मैं हूं जबकि मैं उन्हीं को मारता हूं, जिनको कानून से इस काबिल पाया जाता है कि वे जिन्दा न रहें। असली हत्यारा तो जज है, मैं तो महज उसकी ख्वाहिश को अमली जामा पहनाता हूं।

डाक्टर चौहान ने मसीह को कीमती सिगार पेश करते हुए कहा—आप हमारे साथ हो जाइए। मैं आप पर ऐसी फिल्म बनाऊंगा जो ऐटेन-

चारो के गान्धी से ज्यादा कामयाब [illegible] मालामाल हो जाएंगे।

मसीह को कुछ ताज्जुब हुआ कि [illegible]
पीता है, पर मसीह को [illegible]
बोला—मेरे पास कारूं का खजाना हो जाए, तो भी, मुझे खुशी न होगी। मेरी बीवी मुझे कहती है कि मैं अपना काम छोड़ दूं। वह जब नाराज होती है तो मुझे कसाई कहती है। कहती है तुम ईसाई नहीं कसाई हो।

डाक्टर चौहान ने समझा कि मसीह शायद यह समझ रहा है कि मैं झांसा दे रहा हूं। तब उसने खालिस्तान का पूरा नक्शा उसके सामने उडेल कर रख दिया। बोला—स्वर्ण मन्दिर में हमारा हाई कमान है। वहां पिलबाक्स, बालू के बस्ते, गोलियां चलाने के ऐसे छेद बनाए गए हैं कि उसके सामने दिल्ली-आगरा के लाल किले और फोर्ट विलियम हेच हैं। जून में क्रान्ति होगी। एक तरफ से चीन आएगा, दूसरी तरफ से पाकिस्तान। सबको वह सब कुछ मिलेगा, जो उसे चाहिए। चीन को लद्दाख मिलेगा, पाकिस्तान को कश्मीर, पंजाब में हम राजस्थान, हिमाचल और हरियाने के टुकड़े मिलाकर खालिस्तान बना देंगे। इस हिस्से से हम सारे हिन्दू निकाल देंगे। हम भारत को भूखा मारकर उसके टुकड़े करा देंगे और सुन लो, हम उत्तर पूर्व में मिजोरम, नागालैंड, आसाम, बांगला देश के हिस्से लेकर ईसाइस्तान बना देंगे। आपको हम संसार प्रसिद्ध बना देंगे।

पर मसीह खुश नहीं हुआ। वह जब रात को फातिमा (कार्ड पर मेरी) से मिला और चौहान से सारी बातचीत की रिपोर्ट दी, तो सब कुछ सुनकर वह गंभीर हो गई। व्हिस्की की कुल्ली करके पीती हुई बोली—तुम अहमक हो, निहायत अहमक हो...

सुनकर मसीह के कान सनसना गए। ऐसे ही एक दफे उसकी पहली पत्नी ने किसी बात पर (अब याद नहीं कौन-सी बात) कहा था—यू आर ए फूल—तुम अहमक हो—तो उसने उसे कसकर एक चांटा मारा था। बोला था—मैं बड़े-बड़े डाकू और बदमाशों को फांसी पर चढ़ाता हूं और तू मुझे फूल कहती है, तेरी यह मजाल—कहकर उसने दूसरे गाल पर चांटा मारा था क्योंकि ईसाई होने के नाते वह दूसरे गाल पर ही चांटा मार सकता था। ईसा के सम्बन्ध में उसकी समझ यही थी।

तब से सतलुज और रावी में बहुत पानी वह गया था। तीसरी शादी के बाद अब अपने में वह दम कहां था।

मेरी ज़ोर के साथ बोली—तुम अहमक हो और माफ करना तुम्हारा वह डाक्टर चौहान तुम से बढ़कर अहमक है। वह गधा भी है।

मसीह को गुस्सा दिखाने का मौका मिल गया, बोला—इतनी बड़ी तहरीक चला रहा है। वह खालिस्तान का वजीरे आजम बनने वाला है और तुम उसे अहमक कहती हो?

मसीह साफ पी गया कि उसे भी अहमक कहा गया है। बोला—तुम इतने बड़े आदमी को अहमक कह रही हो? मैंने अपनी आख से देखा, दूसरे कमरे में उसकी अंग्रेज माशूका सो रही थी।

यद्यपि अंग्रेज नाम सुनकर मेरी कुछ प्रभावित हुई, पर अगले ही क्षण वह बोली—मुझे यह सब न पढ़ाओ। मैं ब्रैडला हाल की लाइब्रेरी में जहां बड़े-बड़े स्कॉलर (विद्वान) मोटी-मोटी किताब पढ़ने आते हैं लाइ-ब्रेरियन हूं। वह माशूका नहीं, वह उस गधे चौहान के कान पकड़कर उसे चलाती होगी, ऐसा करो, वैसा करो। वह कुतिया बास है और चौहान उसका गिगोलो (मर्द वेश्या) है।

मसीह ने ढेर-सा पानी पीकर भी तैरना न छोड़ा, बोला—तुम्हें-हमें इससे क्या मतलब कि चौहान किसका एजेंट है। हमें फल खाने से मतलब न कि पेड़ों के पत्ते गिनने से। मैं पालिटिक्स (राजनीति) नहीं समझता। मैं किसी लाइब्रेरी के अन्दर नहीं घुसा, पर मैं बड़े-बड़े आलिम को फांसी पर चढा चुका हूं। सारे आलिमों की पोल कोई मुझसे पूछे। मौत के सामने वे कैसे गिड़गिड़ाते हैं। सब धरी रह जाती है मोटी-मोटी किताब। भुट्टो तो बड़ा आलिम (विद्वान) था, पर उसे घसीटकर फांसी पर चढ़ाना पड़ा। वह बस यही कहता रहा—ड्रामा बन्द करो, यह ड्रामा बन्द करो। वह यही ख्याल लेकर मर गया कि ज़ीया उसके साथ नाटक कर रहा है। उसका ख्याल था, असल में ज़ीया उसका दोस्त है क्योंकि कई जनरलों की बारी मारकर भुट्टो ने ज़ीया को फौज का आला जनरल बनाया था। पहली बार मुझे किसी को फांसी देते वक्त हंसी आई थी और मैंने उसके गले में फन्दा डाल दिया था। उधर से उसी वक्त रूमाल

का इशारा मिला था और भुट्टो एक बार तड़प कर नीचे चले गए ।

फातिमा उर्फ मेरी यह किस्सा कई बार सुन चुकी थी, फिर भी जब सुनती थी तो उस पर एक प्रकार का सरूर चढ जाता था। बोली—यह डाक्टर चौहान भी समझता है कि ड्रामा हो रहा है, पर वह कठपुतली है जिसकी रस्सी उस मेम के हाथ में है। वह कोई कम अस्ल अंग्रेज होगी, मेरे पापा की तरह असली अंग्रेज (हाय बहराइच) न होगी। अंग्रेज कभी एजेंट नही हो सकता। मेरे पापा एजेंट होते तो हैड ड्राइवर से ऊंचे निकल जाते।

मसीह को अच्छा नही लगा कि खामख्वाह अपने बाप को बातचीत मे घुसेड दिया। औरतों मे यह ऐब होता है कि अपने आप को अफलातून (महाज्ञानी प्लेटो) मानती हैं। बोला—जो कुछ भी हो, यह बताओ कि कल चौहान से क्या कहूं ?

—यह कहो—कहकर मेरी रुक गई, फिर बोली—तुम सर्मन (खुतवा, उपदेश) दे सकते हो ?

मसीह को शक हुआ कि यह उसकी बीवी मेरी नही बल्कि बोतल बोल रही है, बोला—सर्मन तो धार्मिक व्याख्यान को कहते हैं। मुझसे क्या मतलब ? मै कोई पादरी हूं ?

—पादरी हो नही, पर हो सकते हो। बी० ए० पास हो।

—मैं, पादरी ?

—हां, तुम पादरी। क्या पादरी के सींग होते हैं ?

घबराहट में मसीह ने कहा—मै एक पादरी को फांसी पर चढा चुका हूं।

—क्यों ? उस बिचारे ने क्या गुनाह किया था ?

—वह बेचारा नही था। उसने एक मुस्लिम औरत से जना (बलात्कार) किया था, कई दिनों तक, अन्त मे उसे मार डाला था। अंग्रेजों का जमाना होता, तो वह छूट जाता, पर यह पाकिस्तान बनने के बाद की बात है।

मेरी कुछ नही बोली। उसने व्हिस्की का एक घूंट पीकर एकाएक गीयर बदलकर कहा—तुम मुझसे प्यार करते हो न ?

—बेशक

मेरी बोली—तो तुम वह पादरी बन जाओ, तुम मेरे साथ जना करो।

इतना कहना था कि जाने क्या हो गया, मसीह ने छलांग लगाकर मेरी को दबोच लिया और उसके सारे कपड़े फाड़ डाले। गिलास की बाकी शराब मेरी के सिर पर गिलास समेत दे मारी। मेरी रोने लगी, पर उसने छोड़ा नहीं। इंग्लैंड की महिमा कहिए या टेम्स के पानी की, यहां आकर तारा मसीह फिर जवान हो गया था।

घंटे-भर बाद दोनों आमने-सामने बैठे थे मेज पर, नंगधड़ंग। पर सामने गिलास थे, व्हिस्की के जो चौहान ने विदाई के समय सौगात में दिए थे।

दोनों चुप रहे। क्या अपराध की अनुभूति थी? नहीं। मेरी बहुत खुश थी, उसका चेहरा खुशी से तमतमा रहा था। गिलास जहां माथे पर लगा था वहां खून निकला था, पर अब बन्द हो गया था, पर मेरी को कुछ परवाह नहीं थी।

मसीह उस चोट को देखकर कुछ लज्जित-सा था। पर लग रहा था उसकी मरहमपट्टी करना सैक्रिलेज अपवित्र कार्य होगा। वह केवल पछता रहा था कि और कुछ दिन इंग्लैंड में रहे तो गरम छुरी मक्खन के अन्दर और अधिक गहराइयों को छू लेती।

एकाएक जैसे स्वप्न से जगकर मेरी ने कहा—तुम मामूली पादरी नहीं, तुम बिशप हो।

मसीह सोच नहीं पाया कि यह प्रशंसा है कि निन्दा, तब तक मेरी फिर बोली—तुम उस चौहान के बच्चे से कहो कि अगर खालिस्तान बना, वह कहता है जून 1984 में बनेगा, तो तुम्हें वह चंडीगढ़ का बिशप बना दे। कहकर उसने बत्ती बुझा दी, बोली—तुम सो जाओ। मुझे छूना मत।···

छूना मत से जाने क्या बिजली दौड़ गई, मसीह कूदकर एक शिम्पांजी की तरह मेरी पर चढ़ गया। मेरी रो पड़ी, पर उसने कदम पीछे नहीं हटाए। वह गहराई के बाद और अधिक गहराई में प्यास बुझाने कुएं के

अन्दर उतरता चला गया। वह रोती रही साथ ही उस [illegible] गई।

चार

अगले दिन दस बजे मसीह चौहान से मिला। वह टाई बांधकर बाक़ायदा साहब बनकर पहुंचा था। बहुत कीमती सूट था, जो उसकी दूसरी सास ने दिया था। वह खास मौकों पर ही इस सूट को पहनता था। तीसरी शादी में कुछ नहीं मिला था। उलटा सास-ससुर को सूट देने पड़े थे।

वह कल वाली मेम भी मौजूद थी। चौहान ने परिचय दिया—मिस क्रिस मेरी सेक्रेटरी है।

सुनकर मसीह के मन में बिशप वाले प्रस्ताव के संबंध में जो थोड़ी-बहुत उधेड़बुन या झिझक थी, वह जाती रही। अगर चौहान की सेक्रेटरी एक अंग्रेज (या अमेरिकन कुछ पता नहीं लगता) सुंदरी हो सकती है तो मैं भी बिशप बन सकता हूं। यह कविता उसे याद आई—

Begot by Bishop. by butcher bred
His Highness holds his haughty head

अंग्रेजी में बोला—मेरी बेगम यह पूछ रही थी कि क्या खालिस्तान में अल्पसंख्यक होंगे?

मेम ने बीच में बात को रोककर कहा—ईसाई होंगे। पर हम ऐसी दहशत की स्थिति पैदा कर देंगे कि हिंदू पहले ही भाग चुके होंगे। जो थोड़े-बहुत संपत्ति-लोभी हिन्दू रह जाएंगे, उनसे खालिस्तान आशा करेगा कि वे सिखों को अपनी बेटियां देकर नेशनल इंटिग्रेशन में सहायता दें। क्यों डा० चौहान, मैं ठीक कह रही हूं न? यही फिलॉसफी (दर्शनशास्त्र) है न?

चौहान ने सिर हिलाकर सहमति प्रकट की। चौहान बोला—किसी देश में अल्पसंख्यकों का होना उसके लिए खतरे की बात है। सन्त भिंडरा-वाले, जो हमारे सब से बड़े आइडियोलाजिस्ट (विचार नेता) हैं, उनका

यही मत है। यही असली इंटिग्रेशन है।

—इसके माने ईसाई···

—ईसाइयों के लिए अलग नीति होगी क्योंकि हम ईसाइस्तान मिजोनागिस्तान चाहते है। ईसाइस्तान का बनना इस बात की गारंटी होगी कि खालिस्तान बना रहेगा।

मसीह सामने के गिलास से क्रीम काफी का एक घूंट पीते हुए बोला —मुझे अहले हनूद, हिन्दुओं से कोई मतलब नहीं।

अगली बात के लिए उसने पत्नी का हवाला देते हुए कहा—मेरी पत्नी एक अंग्रेज की बेटी है, जो भारतीय उपमहादेश में बस गए थे। वह चाहती है कि मैं···

—आप क्या ?

—वह चाहती है कि जो फिल्म आप बनाना चाहते हैं या जो किताब आप लिखना चाहते हैं, उसका नाम हो, फ्राम हैंगमैन टु हाईप्रीस्ट From hangman to highpreest (जल्लाद से जगद्गुरु)।

—कोई हर्ज नहीं, सुझाव अच्छा है। शीर्षक का अंतिम चुनाव तो हमेशा पुस्तक प्रकाशक और फिल्म निर्देशक के हाथों में होता है। आप राजी हैं न, प्रधानमंत्री और राष्ट्रपति को फांसी पर चढ़ाने के लिए ?

अब मौका मिल गया। मसीह ने पूरी बात कह दी—बशर्ते कि खालिस्तान बनने पर आप मुझे चंडीगढ़ का बिशप बना दें।

चौहान इस लंबी छलांग के लिए तैयार नहीं था। उसके पैर डगमगा गए। उसने कथित सेक्रेटरी से दृष्टि-विनिमय किया।

मेम ने सोचकर कहा—पर आप तो शादीशुदा हैं।

—मैं चर्च आफ इंग्लैंड का बिशप बनूंगा। उसमें शादी की इजाजत है। मैं हूं भी उसी चर्च का ईसाई।

चौहान हिचकिचाते हुए बोला—मैं अंतिम रूप से कुछ नहीं कह सकता। सन्त भिंडरांवाला हमारे राष्ट्रपति और विचारनेता हैं। पक्का वादा वही कर सकते हैं। पुस्तक और फिल्म की दृष्टि से आपका बिशप बनना ठीक है, बड़ा रोमांटिक है, फ्राम हैंगमैन टु हाइप्रीस्ट, पर व्यावहारिक जगत में क्या ठीक होगा यह हमारे राष्ट्रपति तय करेंगे। आप

यहा से लौटें तो भारत जाएं। वहां अमृतसर में आप हमारे नेताओं से मिलें। मैं वायरलेस से आपका ब्यौरा भेज दूगा।

मसीह आश्चर्य के साथ बोला—मेरी बीवी लायब्रेरियन है। उसकी सूचना के अनुसार खालिस्तान के राष्ट्रपति तो आप होंगे। आप नेशनल काउन्सिल आफ खालिस्तान के प्रेसिडेंट है। आप प्रसिडेंट है और बलबीर सिंह सन्धु हैं सेक्रेटरी जनरल। वह कहती है आपका भारतीय पासपोर्ट 1981 में रद्द हो गया। अब आप खालिस्तान के पासपोर्ट पर सारी दुनिया में घूमते हैं। 1982 मे आपने लंदन से अकाली दल को हुक्म दिया कि वह करबंदी, सिविल नाफरमानी करें, पर वे कायर निकले। आप तिरंगा और भारतीय सविधान जलाने के आंदोलन के प्रवर्तक हैं। आप यू० एन० ओ० भी गए। आप मुझे चाहे तो चंडीगढ का बिशप बना सकते हैं।

तब चौहान ने सावधानी से कहा—आप मनुष्य प्रकृति को जानते हैं। किया तो मैंने सब कुछ, पर जब खिचडी पक जाएगी, तो सैकड़ों साझेदार पैदा हो जाएंगे। खुशवन्त कूदेगा और जाने कौन-कौन कूदेगा! भिंडरांवाला तो सन्त हैं, पर वह गजब के वक्ता हैं। सुना है, अताउल्ला शाह बुखारी और लाजपतराय बहुत अच्छे बोलनेवाले थे। भिंडरांवाला को गुरबानी कंठस्थ है, वह एक-एक उदाहरण देकर ऐसे बोलते है कि लोग मत्रमुग्ध हो जाते है। वही हमारे राष्ट्रपति होंगे। मैं प्रधानमत्री बनकर ही खुश रहूंगा। आप जानते होंगे, मेरे ही कारण ननकाना साहब फाउन्डेशन के गंगासिंह ढिल्लो (अमेरिकन नागरिक) हमारे साथ हो गए। इन लोगों के कारण हम आजाद कश्मीर मुस्लिम कान्फ्रेंस के अध्यक्ष सुलतान मुहम्मद चौधरी के साथ मोर्चा बना चुके हैं। दल खालसा भी हमारे साथ आ गया और जसवन्तसिंह ठेकेदार हमारे साथ हो गए। इस संस्था ने 1981 के 29 सितम्बर को एक भारतीय हवाई जहाज हाइजैक किया था। शिरोमणि अकाली दल तो इंदिरा से समझौता करने के लिए तैयार था, तब हम सबने मिलकर उनको चेतावनी दी कि हम तुम लोगों को निरंकारियों की तरह तलवार के घाट उतार देंगे। सपादक जगतनारायण की हत्या हमने कराई। श्रेय राष्ट्रपति भिंडरांवाले को मिला। कोई बात

नही। मुझे श्रेय नही चाहिए।

तारा मसीह कोई राजनीतिज्ञ नही था। पर वह सौदा करने मे पीछे हटने वाला नहीं था, बोला—मैं राजनीति का आदमी नही हू। मुझे राजनीति से ही नहीं सब तरह की नीति से सख्त नफरत है, पर मेरी बीवी अदाकार है, दिन-भर लाइब्रेरी में बैठी रहती है, बड़े-बड़े आलिमो की डाढी पकड़कर पढाती है। जनरलो से रणनीति डिसकस करती है। वह जानती है कि बिशप होने पर लोग सब भूल जाएंगे। वह बार-बार कहती है जनता की याददाश्त बहुत कमजोर है।···वह बहुत जल्दी भूल जाती है। यदि मैं चडीगढ का बिशप हो गया, और मैंने बीवी के द्वारा तैयार किए हुए सर्मन (धार्मिक व्याख्यान) दिए, तो लोग मेरे कायल हो जाएगे।

चौहान ने दिलचस्पी के साथ कहा—आपकी बीवी से मिलकर मुझे खुशी होगी। आज शाम को डिनर···पर क्यों न ?

पर कथित सेक्रेटरी ने बीच में टोकते हुए कहा—चौहान, तुम भूल रहे हो, आज हमको एक अमेरिकी सीनेटर से मिलना है···

—हां-हां, गलती हुई। मैं तो भूल ही गया था। हां तो खालिस्तान में हम तब तक ईसाइयों को रहने देंगे जब तक कि मिजोनागिस्तान न बन जाए। आपको हम खुशी से चंडीगढ का बिशप बना देंगे और आपकी अदाकार बीवी के लिए भी कुछ सोचेंगे। क्यों स्वीटी ?

उस मेम ने अदाकार बीवी की बात पसद नही की क्योकि चौहान को जानती थी कि औरत कैसी भी हो वह उस पर लट्टू हो जाता है। उसने झिडक-सी देते हुए कहा—तुम जानते हो कि भिडरांवाला सास्कृतिक शुद्धता चाहते हैं। वह गुरवाणी से एक कदम भी बाहर जाना नही चाहते। खालिस्तान में कोई सिगरेट-तम्बाकू नही पी सकेगा। मिसेज मसीह सिगरेट पीती होगी।—संभलकर बोली—लन्दन में पीना और बात है। यहां तो चौहान भी पीते है। पर खालिस्तान में। क्यों ठीक कह रही हूं न ?

तारा मसीह चंडीगढ के बिशप का वादा लेकर चला गया।

ब्रिटेन की जेलों के दौरे के बाद तारा मसीह अपनी पत्नी के साथ भारत पहुंचा। वहां गुरद्वारो मे उसका स्वागत हुआ बिशप के रूप मे।

भीतर ही भीतर लोग कानाफूसी करते रहे कि इन पर अमेरिका में फिल्म बन रही है।

भिंडरावाला ने बंदूकों, स्टेनगनों से घिरे रहकर मसीह दम्पति का स्वागत किया, कहा—खालिस्तान में हम कोई अल्पसंख्यक नहीं चाहते, वे विदेशी के रूप में रह सकते हैं। हम यू० पी०, बिहार से लेबर मगाएंगे, पर उन्हें वोट का अधिकार नहीं रहेगा। ईसाई तब तक रह सकते है जब तक कि उत्तर-पूर्व में हम ईसाइस्तान न बनवा दें। ईसाइस्तान गारंटी होगी खालिस्तान के अस्तित्व की।

स्वर्ण मंदिर के सारे लोगों को यह तो मालूम हुआ कि एक बिशप भी अपने साथ है, उसका स्वागत हो रहा है, पर किसी को यह पता नहीं लगा कि वह कहां के बिशप है। हां भिंडरांवाले, अमरीकसिंह को और जन-रल शाहबेग को पता लगा कि यह चंडीगढ़ के होने वाले बिशप है। मिस्टर तारा मसीह और श्रीमती मेरी मसीह को शिरोपा और साड़ी भेंट की गई। मेरी को यह देखकर ताज्जुब हुआ कि वहां जितनी भी स्त्रियां दिखाई पड़ी सब गर्भवती थी। उसने मौका पाकर अपने पति से यह बात कही, तो मसीह बोला—यह तो जगत-व्यवहार है, चाहे अकाली हो या हिन्दू। इसके अलावा ये चाहते होंगे कि आबादी बढ़ाकर हिन्दुओं पर हावी हो जाएं।—कहकर वह हंसा।

ग्रं डला हाल की लाइब्रे रियन के नाते मेरी दबने वाली नही थी। बोली—लेबनान में यह हुआ कि पहले ईसाइयों की अक्सरियत (बहुसख्या) थी, पर मुसलमानों ने बाहर से मुसलमान मगाकर यह स्थिति बदलकर झगड़ा शुरू कर दिया। तब से लेबनान तबाह है।

तारा मसीह बिना दबे बोला—संख्या बड़ी चीज है, पर संख्या से बढ़कर है कि लोग कैसे हैं। अरब बारह करोड़ हैं, पर कुछ लाख इजरायली उनकी नाक में दम किए हुए हैं।

ग्रं डला हाल की लाइब्रे रियन बोली—यह सब अमेरिका की मेहर-बानी है। अगर अरब न लड़े, अगर हिन्दुस्तान पाकिस्तान न लड़े तो अमेरिका के हथियारों के व्यापारी भूखों मर जाएंगे अमेरिका तबाह हो जाएगा। धरा रह जाएगा सब कला, साहित्य, टेक्नोलाजी···

चंडीगढ़ के भावी बिशप ने कहा—हमे हरमंदिर के अंदर सियासी (राजनैतिक) बहस नही करनी चाहिए···यह धर्मस्थान है।

मेरी हंसी—ठीक है, जो करना चाहिए सो करिए, आइए मेरे पालतू जनाकार (बलात्कारी) आप मेरे कपड़े फाड़िए, आइए,···बिशप आफ चंडीगढ।

पर चंडीगढ के भावी बिशप ने कनखी से मेरी को देखकर कहा—धर्मस्थान मे यह सब ठीक नही।

इस पर मेरी चिढ गई, बोली—यहां की औरतों के पेट पंप से नही फूले हैं। आइए, अपना पंप मुझ पर आजमाइए।

जब पम्प काम कर रहा था, तो मेरी ने सांस लेते हुए प्रश्न पूछा—मुझे ऐसा लगा कि इन औरतो को अलग-अलग नाप के पम्पो का सामना करना पडता होगा।

चंडीगढ के भावी बिशप ने कहा—चुप-चुप हरामजादी, किसी ने सुन लिया तो ये कीमा बना देंगे—कहकर उसने मेरी के मुह को कर्कश चुम्बनो से बन्द कर दिया। मेरी रोने लगी। उस ने बिशप को कसकर जकड़ लिया।

उन्ही दिनों सांसद स्वामी भी भिंडरावाले का अतिथि था। उसकी बड़ी आवभगत हो रही थी। सदा दो स्टेनगनवाले उसके आगे-पीछे पहरे पर रहते थे। स्वामी ने सब से छिपे और खुले तौर पर पूछा—यह बिशप कहां के हैं?

एक सिख युवक ने कहा—शायद बिशप इनका नाम है। चेहरे से तो यह लगता है···—कहकर वह रुक गया।

—क्या लगता है?

—कांग्रेसी या कसाई।

अन्त में आजिज आकर सांसद स्वामी ने स्वयं भिंडरांवाले से पूछा—संतजी, ये बुजुर्ग कहां के बिशप हैं?

भिंडरावाले ने अमरीकसिंह से आंख मार कर इशारा कर दिया—तूसी कहो।

अमरीकसिंह ने तोते की ही तरह कहा—ते तारीखी हस्ती (ऐतिहा-

सिक व्यक्तित्व) हैं। इन्होंने 998 दुष्ट मारे हैं, दो और मारेंगे तो खलीफा हो जाएंगे।

स्वामी को इससे ज्यादा किसी ने नहीं बताया। उसने तय किया कि स्वयं बिशप से पूछेंगे, पर जब वह उसके कमरे मे पहुचा तो पंछी उड़ चुके थे। स्वामी की पुरतकल्लुफ बिदाई हुई, 21 बन्दूकों की सलामी दी गई। जनरलशाहवेग ने उस एक किरपान भेंट कर दिया। स्वामी ने दिल्ली पहुंच कर प्रेस सम्मेलन मे बयान दिया—स्वर्ण मंदिर मे कोई अस्त्र नहीं है, किरपानों के सिवा।—कहकर उसने किरपान दिखा दिया जो उसे भेंट मे मिला था।

भिंडरांवाले ने अखबार पढकर कहा—सब हिंदू मूर दा पुत्तर (सूअर के बच्चे) नहीं। एक आध सच बोलते हैं।

जब ब्रिटेन और भारत के दौरे के बाद मसीह दम्पति पाकिस्तान पहुंचा, तो मेरी ने फौरन एक नया राग छेड़ दिया। बोली—मैं लंदन मे एक बूढे अंग्रेज वकील से मिली थी, जो अंग्रेजों के जमाने में प्रिवी कौन्सिल में भारतीयों के मुकदमे करता था। उसने कहा कि मेरे मरहूम (स्वर्गीय) पापा के 50 हजार रुपये मुझे मिल सकते है क्योंकि मेरी मां धर्म बदल कर मुसलमान बन गई और उसने एक मुसलमान से शादी कर ली। बस अदालत में जाने की देर है।

सुनकर मसीह ने इधर-उधर देखकर जल्दी से दरवाजा बन्द कर लिया, बोला—बेअकली का नाम औरत है। क्या तुम समझती हो, तुम इंग्लैंड में हो?—या भारत मे हो? क्या तुम भूल गई हो कि यहा कट्टर इस्लामी राज्य है। उस गधे अंग्रेज को क्या पता कि पाकिस्तान में मुस्लिम बनना सबसे बडा पुण्यकार्य है। यदि तुम ऐसी शिकायत लेकर मुल्लों की अदालत मे जाओगी, तो तुम्हारी वही हालत होगी कि नमाज छुड़ाने गए रोजा गले पड़ गया। तुम्हें वे यही कहेंगे कि तुम फौरन मे पेश्तर मुसलमान हो जाओ और किसी मुसलमान से शादी कर लो, तुम्हे रकम का हिस्सा मिल सकता है। मुसलमान से शादी करना इसलिए जरूरी समझा जाएगा कि कहीं तुम दिखाने भर के लिए रुपये के लालच में मुसलमान न बनी हो। क्या तुम तैयार हो?

—बिलकुल नहीं। मैं मरहूम पापा को धोखा नही दे सकती, जैसे मेरी मां ने दिया। मैं पापा के लिए तो मां से अलग हो गई।

उस वक्त मामला टल गया, पर शाम के समय शराब का दौर चलाते समय मेरी (पाकिस्तान के अंदर फातिमा) घसलते-घसलते बिलकुल मसीह से सटकर बैठ गई। मसीह समझ गया। वह आज सवेरे एक को फासी पर चढा चुका था। वह कैदी शायद जीया के विरुद्ध विद्रोही था। जब से जीया आया, तब से डाकुओं और हत्यारो को कम, जीया के राजनैतिक विरोधियों, जम्हुरियत (लोकतत्र) की माग करने वालो को अधिक फांसी होती थी। उसे ऐसे मौको पर भुट्टो के वे अन्तिम वाक्य याद आते थे—यह ड्रामा बद करो, बहुत हो चुका।—ड्रामा नही तो क्या है। शेक्सपियर ने कहा भी है, संसार एक मंच है और सारे पुरुष और स्त्रियां अदाकार हैं। इतना शेक्सपियर तो मसीह को भी आता है।

आज सवेरे भुट्टो का अन्तिम वाक्य इतना स्पष्ट सुनाई पड़ा था कि मसीह के मुंह से यह वाक्य बेतहाशा निकल पड़ा था—हजूर, यह ड्रामा नही है।

फासी के लिए तैनात सैनिक अफसर ने कहा था—मसीह, कुछ कह रहे हो?

मसीह सम्हल गया था, बोला—हजूर, मैं मुजरिम से कह रहा था—खुदा को याद करो···

—ओह!

मसीह को दो ओह सुनाई पड़े। एक सैनिक अधिकारी का, दूसरा फासी चढ़ने वाले का। यंत्रचालित की तरह बात की बात में फांसी की सारी रस्म अदा कर दी। जीया के नाम एक और लाश लिख गई। मसीह के कानो में भुट्टो के वे अन्तिम वचन गूज रहे थे। शराब पीने पर हमेशा मन का स्लेट साफ हो जाता था। इसीलिए शायद अंग्रेजों के जमाने से जल्लाद के लिए चांदी के चंद सिक्कों के साथ एक बोतल शराब निर्दिष्ट थी। पर आज पूरा अद्धा पी जाने पर भी मन के स्लेट पर लिखा मिटा नही था।

—यह ड्रामा बंद करो, बहुत हो चुका।

—हजूर, यह ड्रामा नहीं है। नहीं है···नहीं है अ अ अ···।

मेरी सटकर बैठ गई। कुछ बेरुखी से मेरी को जरा-सा अलग करते हुए मसीह ने कहा—अभी तो बहुत जल्दी है।

—नहीं, वह बात नहीं।

—फिर क्या बात है? कोई और आमन?

—नहीं।—रुककर बोली—कहने में शर्म लग रही है।

—मुझसे कैसी शर्म?

—नहीं, तुम हामी भर दो।

—हां, हां, जो कहोगी, सो करूंगा, कहो तो सही।

—आवाज नीची करते हुए बोली—तुम अकालियों से कहो···

बीच में वाक्य काटते हुए मसीह बोला—पहले खालिस्तान बनने दो। उनके मुताबिक हफ्ते-भर की देर है। उसके बाद ही मैं बिशप बन सकता हूं। पहले कैसे बनूंगा।

फातिमा उर्फ मेरी ने कहा—बात पूरी सुन तो लेते। मर्दों में बस यही ऐब है। बात सुने बिना जवाब दे देते हैं। पहले ही से बात काटने लग गए।

—बोलो—टारा मसीह डरते-डरते बोला।

मेरी आवाज फिर नीची करते हुए बोली—तुम्हारे पास खालिस्तानी आते रहते हैं।

—हां, तुम को ऐसा लगता है। ये हैं कश्मीर फ्रन्ट के लोग जिन्होंने इंग्लैंड में म्हात्रे को मारा था।

—हां, यही मैं कह रही थी।

—क्या कह रही हो? क्या तुम उनसे मिलना चाहती हो? आज वह आदमी मिलने आया था, जिसने कई आदमियों से मिलकर भरे लदन में म्हात्रे की हत्या की। बड़े खूखार लोग हैं।

—खूखार हैं तभी तो मेरा काम बनेगा।

—कौन काम?—शंकित होकर मसीह बोला।

मेरी बोली—जैसे एक कत्ल वैसे दो। तुम उससे कहो कि खां साहब को जहन्नम पहुंचा दे।

मसीह एकदम खड़ा हो गया—कौन खां साहब ?

मेरी ने धीरे से कहा—अनजान न बनो । मै खां साहब किसे कहती हूं ? मेरी मां के खसम को मैं खां साहब कहती हूं । ममी ने बहुत कहा कि खा साहब खां साहब क्या कहती हो, कम-से-कम अंकल तो कहो। पर मैंने अकल नही कहा । मैंने कहा, अकल कहूगी, तो तुम आन्टी हो जाओगी। कश्मीर फ्रन्टवाले खूंख्वार हैं नौजवान से कहो—खां साहब को लिक्विडेट कर दें—जैसे कम्युनिस्ट करते हैं ।

मसीह खड़े-खड़े हाथ झमकाकर बोला—यह कैसे हो सकता है ? ये पोलिटिकल लोगो को मारते हैं, उसमें तुम जाती दुश्मन खां साहब को कहां घुसेड़ लाई ? लन्दन जाने के बाद से तुम ज्यादा बेअक्ल हो गई हो। टेम्स का पानी तुम्हे ठीक नही रहा। कही तुम्हारी इन जिदों से मेरा चंडीगढ वाला काम मझधार मे न रह जाए। मैं कहता हूं कि मुझे एक बार विशप बन जाने दो, फिर खां साहब को कहो या जिसे कहो मरवा दूगा।

अब मेरी भी खड़ी हो गई । गुस्से में तमतमाकर बोली—आए हो मुझे पालिटिक्स सिखाने ? बस से निकालकर लाइन लगवाकर हिंदू मार दिए । क्या वे पोलिटिकल लोग थे ? जाने कितनी औरतो और बच्चो को मारा। 85 साल के सरदार को मारा। वह तो सिखो का धर्मगुरु था । उसे मारना पालिटिक्स है ?

अपनी पत्नी मेरी की रणचंडी मूर्ति देखकर चंडीगढ के होने वाले विशप की सिट्टीपिट्टी गुम हो गई। उसने मिमियाते हुए कुछ कहना चाहा, पर मेरी की वाक्यधारा बाढ की तरह जारी रही। बोलती गई—निरकारियों से झगड़ा क्यो है ? धर्म से कोई मतलब नही । सारा झगड़ा चढ़ावे का है । निरकारियों के कारण गुरद्वारों का चढावा कम हो गया । इसलिए 1978 के अप्रैल में दोनों पक्षो में लड़ाई हुई। कुछ लोग मर गए । फिर निरंकारी बाबा गुरबचन सिंह को 1980 के अप्रैल मे मार दिया । भक्तो से साल में 8 करोड रुपये आते हैं। होना तो यह चाहिए था कि यह सब धन सिखो के स्कूलों, अस्पतालों, छात्रवृत्तियो मे खर्च होता, पर यह नई किस्म के महन्तों पर खर्च होता है जो शराब पीते और रंडीबाजी करते हैं।

मेरी कहती चली गई—इसके अलावा बाहर से डालर आते हैं।

सरकार को चाहिए था कि इस फंड पर कब्जा करे।—फिर वह फुफकारती हुई बोली, तुम्हें चाहे वे बिशप न बनाएं, मैं कहूंगी कि ब्रिगेडियर पुरी, ए० एस० अटवाल, हरबंशलाल खन्ना, विश्वनाथ तिवारी को मारना अगर पोलिटिक्स है, तो खां साहब को मारना भी पालिटिक्स है।

मसीह को अपनी तीन बीवियों से नारी-चरित्र का जो बजर्बा हासिल हुआ था, उससे वह इस नतीजे पर पहुंच चुका था कि स्त्रियों से तर्क करना व्यर्थ है, स्त्री के सामने तर्क करना अरण्य में रोदन या अंधे के आगे रोने की तरह है, उनके सामने रोए अपना ही दीदा खोए, जहां कोई सुनने वाला नहीं। फिर भी पुरुष होने के नाते क्षीण प्रतिवाद करते हुए मसीह बोला—अरे बाबा, तुम तो खालिस्तानियों के कारनामे बता रही हो, पर यहां कश्मीर में तो कश्मीर मोर्चा वाले हैं और यह न भूलो हम पाकिस्तान में हैं।

मेरी पर इस तर्क का कोई दृश्यमान असर नहीं हुआ। वह बोली—कश्मीर फ्रन्टवाले म्हात्रे को मार सकते है, तो खां साहब को भी मार सकते हैं। तुम जरा जोर तो डालो। भूलो मत कि तुम चंडीगढ़ के होने वाले बिशप हो। तुम अपना रंग अभी से दिखाओ। तुम इतने दब्बू क्यों हो?

मसीह की समझ में आ गया कि बकझक करना झख मारना है। बला को टालने के लिए इसकी बात को मान लेने के सिवा कोई चारा नहीं है। बोला—अब मेरी समझ में आ गया कि तुम ठीक कह रही हो।—आवाज नीची करके बोला—पर इसके लिए कुछ तैयारी चाहिए।

—क्या?—मेरी कान पास लाकर बैठ गई। दोनों बैठ गए।

मसीह ने ऐसे कहा जैसे कोई बहुत गूढ़ बात कह रहा हो—खां साहब के फोटो चाहिए। चेहरा देखा नहीं तो कत्ल किसका करेंगे। आंख से न देखा तो फोटो तो देखें।

मेरी उठकर फोटो लाने लगी, बोली—मां के साथ निकाह के वक्त के फोटो हैं।

—वह तो मैं जानता हूं। उनसे काम न चलेगा। सेहरा वगैरह के बिना सादा फोटो चाहिए कई ऐंगल से। किसी को कानोकान खबर न हो।

—नहीं होगी।—मेरी बोली।

दोनों फिर शराब पीने लगे। तय हुआ कि मम्मी और खां साहब को दावत देकर उनके फोटो लिए जाएं। दावत का दिन तय हो गया। मेरी चाहती थी दावत कल हो, पर मसीह टालना चाहता था। अन्त में समझौता हो गया, तीन दिन बाद दावत होगी। खाद्य सूची भी तय हो गई। गौमांस होगा, पर शूकर मांस नहीं।

पांच

इंदरसिंह पहली रात को टूरिस्ट सेन्टर के बरामदे में सो गया था। कई दिन एक होटल में था।

सवेरे उठकर वह मुंह-हाथ धोकर नाश्ता कर चुका था। अखबार नहीं मिला था। अखबार दिन में दो बजे आते हैं।

वह नाश्ता करके सोच रहा था कि आगे क्या हो। ऐसा लगता था कि उसे एक आदमी, जो खुफिया लगता था, बार-बार उसे कई कोणों से देख रहा है। उसे भरमाने के लिए वह टूरिस्ट सेन्टर में लगे मानचित्रों को बड़े ध्यान से देख रहा था। वह नित्य यहां आता था।

देखते-देखते वह खुला पाकर एयर लाइन्स के दफ्तर जाकर एक कुर्सी में धम्म से बैठना ही चाहता था कि उसके सामने एक गोरा खड़ा था, जिसे वह दूसरी दृष्टि से पहचान गया।

बोला—हाई

—हाई

इंदरसिंह को जैसे किनारा मिल गया। दोनों को मिलते देखकर कुछ लोगों ने दिलचस्पी के साथ उन्हें देखा।

गोरे ने कहा—मैं नाश्ता करने जा रहा था, चलो, अभी फ्लाइट में देर है।

कहकर वह इंदरसिंह को टूरिस्ट सेन्टर से बाहर ले जाकर तीन पहिए की टैक्सी पर बैठकर बोला—डल लेक।

इंदर ने देखा (वह कई साल बाद इधर आया था) इस झील के किनारे कनाट प्लेस उतर आया है। बड़े-बड़े होटल, बड़ी-बड़ी दूकानें। एक रेस्टोरेंट में घुसकर बैठते हुए उस गोरे ने कहा—डिजास्टर, भयंकर विपत्ति हो गई'''

इंदर बोला—मैंने थोड़ा ही सुना। अखबार कई मेल की खबरें दे रहे हैं। बताइए क्या हुआ ?—कहकर उसने तमोली की दूकान के रेडियो से लेकर महिला का पिस्तौल लेकर भाग जाने की सारी कहानी सुना दी, यहां तक कि यहां रातें कैसे काटीं। सुनकर, लन्दन टाइम्स को खरीदने वाले रूपर्ट मरडोक नामक आस्ट्रेलियावासी के भतीजे माइकेल ने (इंदर उसे माइक नाम से जानता था) कहा—यह बहुत अच्छा हुआ कि महिला पिस्तौल ले गई। अब तुम इस डाढ़ी से छुट्टी कर लो'''

इंदर को एक धक्का-सा लगा, बोला—आप ऐसा कहते हैं ? पर मुझे पहले खबरें बताइए। मैं खबरें जानने के लिए मर रहा हूं।

माइक ने छै-छै अंडों के दो आमलेट और सासेज, काला काफी मंगाया, बोला—क्या बताऊं, कुछ रह गया हो तो बताता। All is lost save honour (इज्जत के सिवा सब कुछ लुट गया)।

फिर उसने कांटा-चम्मच से आमलेट तोड़ते हुए जो कुछ कहा, वह संक्षेप में यों है—तुम्हें मालूम न होगा, पर मुझे मालूम था कि जैलसिंह का कार्यक्रम उत्तर-पूर्व में था, पर वह रद्द हो गया और सेनापति वैद्य श्रीनगर से जल्दी में बुलाए गए। मैंने उसी वक्त सन्तजी से कहा—दुश्मनों को क्रांति की खबर लग चुकी है। पर सन्तजी ने कहा—रब (ईश्वर) हमारे साथ है। जनरल शाहबेग सिंह ने कहा—कोई यहां घुस नहीं सकता, और घुसेगा तो देश के सारे सिख विद्रोह में उठ खड़े होंगे। मेरी बात सुनी नहीं गई।

माइक ने कुछ और आर्डर देते हुए बीयर की बोतलें मंगाईं। काफी पड़ी रह गई।

बोला—*मैंने कहा—संत जी सब ठीक है*, पर अगर इस औरत ने हमला कर दिया तो पता नहीं कौन जिए कौन मरे। आप इस वक्त चीन चले जाइए या पाकिस्तान। आप जिंदा रहेंगे तो फिर से सब कुछ हो

जाएगा।

पर वह नही माने। यहां तक कि अमरीकसिंह, जनरल शाहबेग सबने समझाया। पर संत जी टस से मस नही हुए।

मैंने स्वर्ण मंदिर से निकलकर चीन मे और पाकिस्तान में अपने दोस्तों को खबर दी। उन सबने कहा—संत को निकालो। असली बात तो यह है इंदिरा को कुछ खबर नही थी। काबुल ने क्रांति की खबर दी है।

मैं फिर गया, संत से मिला। पर वही बात, रब्ब हमारे साथ है।

मैं निराश होकर लौट आया। अमृतसर में ही रहा। वायरलेस से बातचीत करता रहा। एक जून को रात नौ बजे पवित्र नगरी पर जब कर्फ्यू लग गया, तो मैं समझ गया कि घड़ी आ चुकी है। हमारे जासूसों ने खबर दी कि सत्तर हजार फौजी पंजाब के 12 हजार गांवों मे पूर्व निश्चय के अनुसार स्थान ले चुके हैं। अमृतसर नही सारे पंजाब पर हमला था। 2 जून को इंदिरा ने रेडियो, दूरदर्शन में भाषण दिया, जिसमें कंपित क्रोध-भरे कंठों से कहा कि हिंसा और आतंकवाद को दबाया जाएगा। प्रधान-मंत्री ने अकाली नेताओं से कहा कि वे अनाज का चालान न रोकें। पर साथ ही राष्ट्रपति से मिलकर कुछ अध्यादेश जारी कर दिए जिनके द्वारा विदेशियों को फौरन प्रान्त छोड़कर चले जाने का आदेश हो गया। लेफ्टि-नेन्ट जनरल रनजीतसिंह दयाल, एक सिख सेनापति राज्यपाल के सुरक्षा परामर्शदाता हो गए।

मैं फौरन चल पड़ा और श्रीनगर पहुंच गया। अधिकांश विदेशी दिल्ली गए।

—फिर? फिर क्या हुआ? इंदर ने पूछा।

—धन्यवाद है बी० बी० सी०, पाकिस्तान रेडियो, रेडियो फ्री काबुल, रेडियो फ्री ईरान और मेरे अपने यंत्र को कि मैं पूरी तरह सब बातें जानता रहा।

3 तारीख को लाउडस्पीकरों से ऐलान होता रहा—आत्मसमर्पण कर दो। कोई आशा नही…नही, नही। पर उधर से गोलों का जवाब गोलो से दिया जाता रहा। बांगला देश में पाकिस्तानी सैनिकों ने चेतावनी सुनकर आत्म-समर्पण कर दिया था। इनको इस कारण यही आशा थी,

पर सिख और चीजों के बने थे। वे पाकिस्तानी सैनिकों की तरह कायर नहीं थे। भारतीय सेना के लोग कुछ ही देर मे समझ गए कि आत्म-समर्पण नही होगा। धर्म के कवच के कारण उन तक कोई सरकारी तर्क नही पहुंच सकता था। गांवो मे खबर पहुंच चुकी थी और जत्थे अमृतसर की तरफ आने की तैयारी मे थे।

माइक ने रुककर कहा—तुम बाबा विधिचन्द को जानते होगे?

—हां, बाबा विधिचंद महत झूदल के इलाके के मशहूर नेता हैं। उनको सब लोग संत मानते हैं।

—हां तो उनके नेतृत्व मे तीस हजार सिख गाववाले तैयार थे। लोगों के पास थोड़ा-बहुत अस्त्र-शस्त्र था। ये अमृतसर जाना चाह रहे थे। इनका उद्देश्य घेरा तोड़कर स्वर्ण मंदिर को मुक्त कराना था। इधर हिन्दू भी तैयार हो रहे थे। बडा भारी हिन्दू-सिख झगड़ा हो जाता, पर उसी समय सेना का एक हेलीकॉप्टर आ मरा, जिससे दोनों के बीच में सेना आ गई। झगडा न हो सका। होता तो सारे पंजाब में झगड़े हो जाते। फिर भारतीय सेना न संभाल पाती। हरियाणा, राजस्थान से हिन्दू आ जाते। पर रूसी हिदायत के अनुसार भारतीय सेना ने (इंदिरा को इतनी अकल है कहां) हिन्दू-सिख झगड़ा होने नही दिया।

मैंने जम्मू से बेतार के जरिए सब लोगों से (जहां भी मैं पहुंच सका) यह कहा कि मंदिर को बचाने का एकमात्र उपाय यह है कि दगे शुरू हो जाएं, पर रूसियों ने सब गुड़ गोबर कर दिया। भारतीय सेना ने कहीं भी दंगा होने नही दिया। हम दोनों तरह से पिट गए।

इंदर बोला—मैं फिर बात करूंगा कि नास्तिक रूस केवल हमारा नही सारे संसार का दुश्मन है। आप बताइए फिर क्या हुआ?

माइक ने नई बोतल खोलकर दो गिलासें भर दी, झाग उठने लगा। वह पनीर के टुकडे चबाता हुआ बोला—सेना समझ गई तुरन्त हमला करना चाहिए ताकि गाव वालों को मौका न मिले। रेल, बस सब बंद कर दी गई। लोग पैदल ही आ-जा सकते थे। रूस ने पूरी योजना दी होगी। मुझे बाद को पता लगा 5 जून की रात को लेफ्टिनेन्ट कर्नल मुहम्मद इसरार के नेतृत्व मे बुलेटप्रूफ (गोलियों से अभेद्य) जैकेट और हेलमेट

पहने हुए, छंटे हुए सौ जवान सराइयों में घुस गए जहां लोंगोवाल, तोहरा और दल के प्रवक्ता बलवंतसिंह रामुवालिया थे। अभेद्य जैकेटों के बावजूद कई सरकारी जवान हमारे बहादुरों की गोलियों से मारे गए, पर वे रात के समय लोंगोवाल आदि भगोड़ों को बचा कर ले आए। गुरुचरण सिंह और बग्गासिंह भी लोंगोवाल के साथ भाग रहे थे, पर वे हमारी गोली से मारे गए।

इसके बाद रात-भर भयंकर युद्ध हुआ। मैंने बेतार से अपने साथियों से बात करने की कोशिश की, पर किसी ने उत्तर नहीं दिया। संत भिंडरांवाला, जनरल शाहबेग सिंह, अमरीकसिंह मारे गए।

इंदरसिंह खाना बंद कर चुका था। वह फफक-फफककर रोने लगा। खैरियत यह है कि वे पर्दा पड़े हुए कमरे में थे। फिर भी माइक ने नैपकिन बढ़ा दिया, बोला—मर्द रोया नहीं करते। धीरज धरो।

इंदरसिंह ने चेहरा पोंछकर कहा—इसके माने क्रांति नहीं होगी, खालिस्तान नहीं बनेगा ?

—पीते जाओ, बहरहाल स्थिति यही है। अगर हमको एक महीना और समय मिल जाता, तो हम खालिस्तान बना लेते। हमारी तैयारी पूरी थी। हमने असली खबर इंदिरा के कान तक पहुंचने नहीं दी। सरकार में हमारे आदमी थे। पुलिस दिल्ली को रिपोर्ट दे रही थी कि स्वर्ण मंदिर में कुछ पटाके इकट्ठे हैं, पर रूस ने इंदिरा को आगाह कर दिया कि तैयारी कितनी है। रूस ही ने यह भी बता दिया कि गांवों में भयंकर साम्प्रदायिक दंगे होंगे जैसे मुस्लिम लीगियों ने पाकिस्तान बनने के पहले कलकत्ता में कराए थे। क्रांति न होती, न सही, कसकर सारे पंजाब, हरियाणा, दिल्ली में दंगे हो जाते, तो वह भी ठीक रहता, जमीन तो तैयार होती। रूस के बदमाशों ने सब मटियामेट कर दिया। वे हर मुल्क में हमारी मुखालिफत (विरोध) कर रहे हैं। असल में हम चूक गए। बुरी तरह चूक गए।

—कैसे ?

—बताता हूं—कहकर घंटी बजाई, बेयरे के सलाम पर हाथ से लिखने का इशारा देकर मूक भाषा में कह दिया—बिल लाओ। बेयरा चला गया।

इंदरसिंह ने पूछा—हमारे कितने आदमी मारे गए?

—जलियानवाला से ज्यादा, एक हजार। खुशवंतसिंह ने कहा—यह दूसरा जलियानवाला बाग हुआ।

—खुशवंतसिंह? वह तो अपने को ऐग्नोस्टिक (अज्ञेयवादी) कहता है। मुझे इस कारण उससे बहुत नफरत थी। वह तो अश्लील लिखकर मशहूर हो गया है जैसा कि युनुस कहता है।

वेयरे को दो सौ का नोट पकड़ाकर (बिल 190 रुपये का था) माइक उठ खड़ा हुआ। वेयरे ने पैर जोड़कर लंबी सलामी दी। सड़क पर जाकर माइकेल ने कहा—आखिर खून पानी से गाढ़ा है। खुशवंतसिंह ने तो भिंडरावाला को गालियां देकर, जाहिल आदि कहकर हिन्दुस्तान टाइम्स में एक लेख लिखा था। यह सब चलता है। यदि मैं कहूं कि वह लेख मैंने लिखा था, जो उसके नाम से छपा, तो कोई विश्वास नहीं करेगा। राजनीति में तिरछी चाल भी होती है। घोड़ा अढ़ाई घर चलता है। वजीर सीधे भी चलता है, तिरछे भी। खुशवंतसिंह अब शायद अकाली सांसद होना चाहता है। दलबदलू बना है।

वहां से निकलकर माइक और इंदर एक शिकारा में बैठकर डल झील की सैर करते हुए नेहरू पार्क होते हुए चार चिनार की तरफ चले। सब लोग इस जोड़ी को देख रहे थे। यह बात माइक को खली। बोला—एक बात कहूं?

—क्या?

—कह चुका हूं, फिर कहता हूं, तुम फौरन डाढ़ी कटा लो। गुरुओं ने कब, क्यों, कैसे पंच ककार चलाया, तुम जानते होगे, मैं नहीं जानता। पर अब इस जमाने में गुप्त कार्य के लिए यह अत्यन्त बाधक है। तुम्हारे भगतसिंह ने भी डाढ़ी कटवा दी थी।

—वह तो धर्म से अलग होकर नास्तिक दिखाई पड़ने के लिए।

—ठीक कहते हो, पर दूसरा कारण कहीं प्रबल होगा। गुप्त कार्य का सबसे बड़ा तकाजा यह है कि किसी का ध्यान तुम पर न जाए। ध्यान गया कि मारे गए। नामी चोर मारा जाए कहा है न···

अभी नेहरू पार्क दूर था। माइक बोला—मैं नेहरू पार्क में उतर

जाऊंगा । सचिवालय में जाना है । तुम्हें याद होगा, लेनिन ऐसे नेता होते हुए भी 1905 मे क्रांति असफल रही । क्रांति के लिए 12 साल प्रतीक्षा करनी पडी ।

इंदर घबड़ाकर बोला—तो क्या हमें भी बारह साल प्रतीक्षा करनी पड़ेगी ? बारह साल बहुत होते हैं ।

नेहरू पार्क आ चुका था । इशारे से नाव को खड़ी रखने की आज्ञा देकर माइक बोला—अभी हमने कहा था कि हम चूक गए । वह यों कि सबसे पहले अमेरिका के पास अणु बम आया । उस समय रूस के पास यह बम नही था । हमारे सबसे बड़े चिन्तक बर्ट्रेन्ड रसेल ने उस समय कहा था—यही मौका है रूस को खतम कर दो ।

माइक बोलता गया—हमने उनकी बात नही सुनी । रूस ने बम का फार्मूला चुरा लिया और अब यह स्थिति है कि रूस हर जगह हमे उंगरिया रहा है ।

शिकारे से उतरने के लिए खडा होकर माइक बोला—तुम कुछ दिन ब्रिगेडियर वरियाम सिंह के यहा हिबर्नेट (शीतनिद्रा) करो ।

इंदर खड़ा होकर बोला—वह तो लुधियाना मे हैं और मैं इस संबंध को स्वीकार नही करता क्योंकि मेरी पत्नी से मेरे विचार नहीं मिलते ।

माइक हंसकर बोला—क्या पत्नी से विचार मिलना जरूरी है ?

वह बैठ गया । फिर हंसा । इन्दर भी बैठ गया, बोला—सर, यह हंसी की बात नही है, बहुत सीरियस (गंभीर) मामला है ।

हंसी रोककर माइक बनावटी गांभीर्य के साथ बोला—क्या मतभेद बहुत गभीर है ? क्या तुम्हारी बीबी खालिस्तान के खिलाफ है ?

—नही भी, हां भी ।

—क्या मतलब ?

—मतलब यह कि मेरी शादी मेरी मर्जी के खिलाफ हुई । मैं सारा समय इस काम को देना चाहता था । फिर भी लन्दन में मेरी शादी कराई गई । ब्यौरे मे नही जाता । शादी के बाद सुहागरात के दिन मैंने पत्नी से अपनी सारी बात कही । सब कुछ सुनकर वह बोली—जैसा-जैसा तुम कहोगे, मैं करूंगी ।

बार-बार वह यही कहती रही।

मैंने चिढकर कहा—यदि मैं खालिस्तान के विरुद्ध हो जाऊं तो तुम भी वैसी हो जाओगी ?

—हां, मैं हो जाऊंगी, तुम हिन्दू हो जाओ, तो मैं हिन्दू हो जाऊंगी।

हिंदू होने की बात से मैं इतना नाराज हो गया कि मैं वहा से निकल कर स्काटलैंड चला गया। तब से मैं उन लोगों से अलग हूं। मैं चाहता था कि वह कहे कि तुम खालिस्तान का विरोध करोगे तो मैं तुम्हे जान से मार डालूंगी।

सुनकर माइक हो-हो करके हंस पड़ा। उसने शिकारेवाले से इशारे से कहा—चलो। अब मैं नही उतरूंगा। यह मामला बहुत दिलचस्प है। तुम एक बच्चे हो। ऐसी स्त्री पाने के लिए तो तपस्या करनी पड़ती है और तुमने उसे छोड़ दिया। हा-हा-हा-हा'''

—आप यह क्या कह रहे है ?

—मैं ठीक कह रहा हूं। हरेक अपने तरीके से बात कहता है। उसने जो कुछ कहा उसका मतलब वही है जो तुम चाहते हो। ऐसी साथिन मिलना गौरव की बात है। मैं ऐसी स्त्री के लिए क्या वह शेर है समरकंद बुखारा न्योछावर करता हूं। तुम्हारा जोश सराहनीय है, पर one track mind एक रुख वाला दिल ठीक नही। मेरी बात मानो, जिद मत करो। तुम जाओ, तुम्हे इस वक्त इसी की जरूरत है। वे श्रीनगर मे हैं—कहकर माइक ने उनका पता दे दिया।

—नही, मैं वहां नही जाना चाहता। वह समझेंगे कि सकट में पड़ के हमारे पास आए हैं।

माइक गंभीर हो गया। दुखी भी। ऐसे लोगों से भला क्या काम होगा ? ये पूर्वी देश के लोग अजीब है। माइक एक साल पहले ईरान में था। जब खुमैनी ने कम्युनिस्टों पर प्रहार किया, तो ऐसा लगा कि अपना काम बन गया, अब यह हमारी गोद में बैठेगा, पर अगले ही हफ्ते उसने अमेरिका पर बौछार शुरू कर दी। लेबनान मे ऐसा ही हुआ। बडे शौक से वहां गए थे सेना लेकर। फ्रांस को भी ले गए। पर जल्दी ही वहां वियतनाम की बदबू आ गई। वहां से भाग खडे हुए। फ्रांस और अमेरिका।

दोनों दुम दबाकर भागे ।

माइक बोला—यों तुम चाहो तो दूसरा पता दूंगा। पर वहां तुम्हें शायद ही राहत मिले । शरीर को न भूलो । कभी निराश न होना । कुछ नहीं होगा, तो अपने चाचा से कहकर तुम्हें लंदन टाइम्स में रखवा दूंगा। तुम जानते हो न लंदन टाइम्स आस्ट्रेलियनों के हाथों में आ चुका है । अब सारे देश एक हैं, केवल भारत ऐसे कुछ देश हमसे अलग हैं । अगर खालिस्तान बनता, तो वह हमारे साथ होता, पर…वह तो स्वप्न हो गया ।

चार चीनार आ चुका था । माइक ने कहा—अब्दुल्ला गनी का पता रख लो । तुम बस इतना कहना कि स्वस्तिक ने भेजा है । कोई पैसा न देना और न राजनैतिक बात करना । वह अन्तर्राष्ट्रीय तस्कर है, पर हमारे लिए अस्त्र लाता है । वह समझता है कि भारत के टुकड़े-टुकड़े हो जाएं, तो उसका काम अच्छा चलेगा । वह सिखों और डाढ़ी रखने वाले मुसलमानों को शायद इस कारण पसंद करता है कि डाढ़ी के अंदर भी सौ ग्राम तक हैरोइन आ-जा सकता है । पर वह स्वयं डाढ़ी नहीं रखता ।

जब चार चीनार घूमकर शिकारा शहर के पास पहुंचा तो एकाएक माइक ने अपने बैग से एक पैकेट निकालकर इन्दर को दिया ।

—रख लो । होटल में जाकर देखना । मैं तुमसे सम्पर्क करूंगा । लंदन टाइम्स वाली बात याद रखना ।

कहकर माइक बगल में ठहरी एक नाव में उतर गया जिसमें लोग (कई गोरे थे) सुल्फा पी रहे थे । सब की आंखें लाल थीं और उनमें दूसरे जगत की झलक थी । माइक ने एक चिलम खींच ली और फक-फक धुआं छोड़ने लगा ।

इंदर की समझ में नहीं आया । उसने सम्हाल कर पैकेट रख लिया। शिकारा चलने लगा था । माइक ने मुड़कर फिर इंदर की तरफ नहीं देखा ।

छह

तारा मसीह से कहा गया था कि तुम रिटायर (सेवा निवृत्त) होना चाहते हो, यों तो इस काम में सेवानिवृत्ति है नही, तो किसी को यह काम सिखाओ। तुम अपने बेटे को यह काम सिखाओ। बेटे तो होंगे?

—एक बेटा है।

—तो उसे सिखा दो। तुम्हारे पिदर बुजुर्गवार (पिता महोदय) तो यही काम करते थे।

—जी हां, पर मेरा बेटा आवारा है।

वह अफसर बोला—आवारापन से कोई फर्क नही पड़ता। दस मिनट का तो काम है, सो भी रोज नही।

मसीह ने मन ही मन सोचा, मुझे इस काम में रुचि नही। मै उस दिन की बाट जोह रहा हू जब भारत के प्रधान मंत्री और राष्ट्रपति को फासी पर चढाकर मेरा पुनर्जन्म चंडीगढ़ के बिशप के रूप मे होगा। बोला—मैं समझाकर हार गया, पर वह मानता नही।

—क्या काम करता है? कितनी उम्र है?

—उम्र 25 के करीब होगी। काम का पता नही। जब से मैंने नई शादी की है तब से उसके साथ कोई संबंध नही।

अफसर बोला—पहली बीवी मर गई?

—हां'''

मसीह दूसरी बीवी की बात बिलकुल गोल कर गया।

अफसर चुप रहा। फिर बोला—उसने कहां तक तालीम पाई है?

—एम० ए० तक। मैं भी बी० ए० तक पढा हूं।

—ओह!

अफसर चिंतित हो गया, बोला—आपने बेटे को इतना क्यो पढा दिया? ज्यादा पढकर लोग जिस्म से और दिमाग से बेकार हो जाते हैं। वे दिन को कुर्सी और रात को खटिया तोड़ने के काबिल ही रह जाते हैं।

मसीह ने सोचा बिशप बनूगा तो पहले सर्मन (धार्मिक व्याख्यान) के लिए यह अच्छा विषय रहेगा। बोला—मैं समझ रहा हूं, पर करता क्या?

उसकी मा की यही ख्वाहिश थी।

अफसर हंसा, बोला—आप अपने बेटे का पता दीजिए, मैं उसे समझाऊंगा।

मसीह ने अफसर को बेटे का पता दे दिया।

अगले ही दिन जब मसीह सचिवालय से लौटा तो देखा, जोसफ अपनी सौतेली मां से घुलघुलकर बात कर रहा है। सामने चाय आदि है।

—तुम कैसे एकाएक ?

—कल आपके नाम से तार गया।

—ओह—कहकर वह बैठ गया, पूछा—शादी वगैरह की ? क्या काम करते हो ?

—शादी नही की। काम भी कुछ खास नही करता। यों कार्ड पर जर्नलिस्ट (पत्रकार) लिखा रखा है। आवारगी छिपाने के लिए अपने को फ्री लांस जर्नलिस्ट बताने से लोगों के मुह पर ताला पड़ जाता है। कभी-कभी कुछ लिखता हूं—शेर भी कहता हूं।

मसीह को लगा, बेटे से नही, एक आवारा से सड़क पर मिल रहा है। बोला—होम डिपार्टमेंट (गृह विभाग) के और संस्कृति के सेक्रेटरी तुम से बात करना चाहते हैं। अभी चले जाओ।

जोसेफ मसीह ने कहा—क्या जल्दी है ? कल मिल लेंगे। आज मूड आ गया, कोई शेर कहूंगा। कुछ पता तो हो कि हजरत कहना क्या चाहते हैं। कोई दो कौड़ी का आदमी होगा। शायद उसका लड़का सहपाठी था।

तारा मसीह ने सोचा इसे क्यों बताऊं। यह कुछ गालियां न दे बैठे। बोला—मुझे कुछ पता नहीं।

तारा को बेटे का रंगढंग कुछ पसंद नही आया। लगा जैसे कुछ गुन-गुना रहा है। शायद शराब भी पी रखी है।

पूछा—तुम्हारा सामान कहां है ?

—ममी ने बगल के कमरे में रखवा दिया।

तारा मसीह को यह पसंद नही आया। कहां तो शादी के प्रतिवाद मे घर छोड गया था और कहां ममी-ममी कर रहा है। उसके भीतर किसी

ने कहा—बंद करो यह ड्रामा। बहुत हो चुका।

तारा ने कहा—हम लंदन और अमृतसर होकर आए हैं।

जोसेफ मुस्कराकर बोला—ममी सब बता चुकी है। उन लोगों ने आपको चंडीगढ़ का बिशप बनाने का सब्जबाग दिखाया है! पर यह ख्वाब छोड़ दीजिए। रूस के रहते यह राब नहीं होने का।

तारा मसीह को गुस्सा आ गया। बोला—तुम हाई पोलिटिक्स (ऊंची राजनीति) की बातें क्या जानो। चीन, पाकिस्तान, अमेरिका जो चाहते हैं, वह होगा या तुम्हारी आवारगी चलेगी? मालूम होता है तुम कम्युनिस्टों के चक्कर में आ गए हो। अगर यह बात है तो तुम जाकर किसी होटल में ठहरो। मैं ठहरा इस्लामी राज्य का वफादार नौकर। मेरे घर में तुम नहीं रह सकते। मेरी, तुमने गलत काम किया, इसे यहां ठहरा लिया। मैं कई कम्युनिस्टों को फांसी पर चढा चुका हूं। बडा मजा आता है इन्हें फांसी देने में, क्योंकि मौत के डर से ये मुसलमान बनकर अल्ला-अल्ला करते हैं।

मां और बेटा दोनों को आश्चर्य हुआ कि मसीह जरूरत से ज्यादा क्रोध कर गए। जोसेफ बोला—पापा, आप बिल्कुल गलत समझे। आप यह समझे कि मैं शायरी में फंसा रहा। आपकी आंखों में शायरी माने लोफरी। उधर आपकी आंखों में कम्युनिज्म माने लोफरी। इसलिए आपके हिसाब से शायरी माने कम्युनिज्म बिलकुल गलत। मैं न तो कम्युनिस्ट हूं न हो सकता हूं।

फिर जोसेफ ने बताया—आपके अफसर साहब को मालूम नहीं, न आपको मालूम है कि मैं पाकिस्तान की तरफ से बर्बक करमाल के खिलाफ लड़ने के लिए गया था। मैंने सुन्नत करा ली और जोसेफ से युसुफ हो गया। क्या फर्क पड़ता है? 1979 के दिसम्बर की एक काली बर्फीली रात में करमाल की दावत पर 80 हजार रूसी काबुल पहुंच गए और यह समझा गया कि काबुल रूस के लिए वियतनाम साबित होगा। जीया को अच्छा मौका, बहाना मिल गया अमेरिका को दुहने का। मैं बेकार था (शायरी तेरा दूसरा नाम बेकारी है), मैं भागकर आए हुए अफगानों के साथ ट्रेनिंग लेकर अफगानिस्तान पर छापा मारता रहा। रेडियो फ्री काबुल

में बोलता रहा। पर कुछ दिनों में हमारे साथ के असली अफगान (रईस या फोकट खाने वाले तबके के थे) पस्त हो गए, पर खर्च आता रहा, मैं लड़ने का बहाना करता रहा। ऐसे लोगों के लिए जान क्यों देता जो अपने लिए भी लड़ना नही चाहते। करमाल रूसी कठपुतला भर नही था, वह हफीजुल्ला अमीन के जमाने में सरकार की मर्जी के खिलाफ दो बार चुनाव जीत चुका था।

मैं पजशीर घाटी की लड़ाइयों में भी था। पर क्या करता? विद्रोही अफगानों का कोई मुत्तहिदा (संयुक्त) मोर्चा नही बना सका। 1982 के दिसम्बर में पेशावर, क्वेटा और फ्लोरेंस (जहां राजा जहीर शाह को मिलाने की कोशिश की गई) में सम्मेलन हुए, पर कुछ नतीजा नही निकला। तब मैं इस तमाशे से अलग हो गया, क्योंकि मैं समझ गया कि कुछ होने-हाने का नही। जगजीत सिंह लंदन की जिस जगह से खालिस्तान टाइम्स निकालता है, वहीं से पाकिस्तान की जमायतें इस्लामी अफगान विद्रोहियों की एक समाचार सेवा चलाती है। असल में सब विदेशी माया है। सीधा रूसियों के बहाने से अपना काम बना रहे हैं। मैंने भी पचासेक हजार बना लिया। मैं जब-तब लंदन में खबर भेज देता हूं कि इतने रूसी मरे। अब काबुल हाथ में आने वाला है।

मसीह ने कुछ विश्वास किया, कुछ नही किया। चाय पीते-पीते मसीह ने कहा—तो तुम अब शादी क्यों नही कर लेते? पैसा भी है, रहने की जगह भी है।

अगले दिन जोसेफ उस अफसर के पास पहुंचा। सब कुछ सुनकर बोला—फिलहाल मेरे वालिद (जिंदा) हैं, उनके बाद मैं सोचूंगा। फांसी देना सीखना थोड़े ही पड़ता है। यों मुझे इस काम से नफरत है, पर कोई भुट्टो ऐसी तारीखी शख्सियत (ऐतिहासिक व्यक्तित्व) मिल जाए, तो क्या कहना।

अफसर को भुट्टो से कुछ (शौकीनी आराम कुर्सी वाली) सहानुभूति थी। बोला—तुम भुट्टो से क्यों चिढ़े हो?

—अगर गिनाऊं तो बहुत-सी वजहें निकलेंगी। मेरे डैडी कहते हैं कि पाकिस्तान के दो टुकड़े कराने वाला वही था। अगर भुट्टो चुनाव के नतीजे

मानकर बंगाली लीडर मुजीब को पाकिस्तान का वजीरे आजम (प्रधान-मंत्री) बनने देता, तो पाकिस्तान न टूटता।

—तुम तो बडे पालिटिशियन (राजनीतिज्ञ) हो।

जोसेफ ने कहा— आप मेरे कागजात देख चुके हैं। मैं सचिवालय मे बैठा हुआ कुर्सी तोड़ नही रहा हूं, मैंने फील्ड में गोली चलाई है। कई तमगे जीत चुका हूं। रैंक (पद) से कैप्टेन हूं। आप अपने लड़के को वालिद साहब के यहां अप्रेंटिस क्यों नही लगा देते?

सुनकर अफसर बहुत नाराज हुआ, तमतमाकर बोला—तुम्हे बात करने की तमीज नही है? तुम किससे बात कर रहे हो?

—मैं भुट्टो के एक मुअतकिद (अनुयायी) से बात कर रहा हूं। अभी मैं रिपोर्ट कर दू तो बधे-बंधे फिरोगे। मै फौजी हूं, मुझसे टाय-टाय न करो। यह सोचो मेरी रगों में किसका लहू है।

कहकर वह गुस्से मे उठ खड़ा हुआ। पर अफसर ने कहा—कैप्टेन साहब, आप यों ही नाराज हो गए। बैठिए, बैठिए। चाय आ रही है—कहकर उसने बड़े जोर से घंटी बजाई।

जोसेफ बैठ गया। बोला—माफ कीजिए मैं आप के बेटे के साथ कालेज में था। मालूम हुआ कि आपने उसे कई नौकरियो मे लगाया, पर वह हर जगह निकाला गया।

—बात ऐसी ही है—अफसर का पारा उतर चुका था, बोला—मैंने उसे अफगानों के खिलाफ पी० आर० ओ० लगवाया, पर वहां से वह कम्युनिस्ट करके निकाला गया।

—कम्युनिस्ट नही था, शराबी था। मैं भी पीता हूं, पर पीकर बहकता नही हू। बहककर वह कुछ सच कह गया होगा, इसलिए वह कम्युनिस्ट समझा गया। कम्युनिस्टों का और हिसाब है। वे पीकर ही सच बोलते हैं। बाकी हर वक्त झूठ बोलते हैं। मैंने यही बात रेडियो की काबुल मे कही, तो तीन सौ तेरह चिट्ठियां आईं।

—माफ करना, एक बाप की क्यूरिअसिटी (कौतूहल) है, उसने क्या कहा था?

—यह कहा था कि कोई काज cause (सही लक्ष्य) हो तो प्रोपेगांडा

करूं, यहां तो हमारे साथ जितने अफगान हैं वे युद्ध लड़ना नहीं चाहते हैं, चाहते हैं कि पाकिस्तानी सेना जाकर अफगानिस्तान को रूस रूपी राहु से मुक्त करे।

दोनों चाय पीने लगे। अफसर ने कहा—बात कुछ ऐसी ही है। सारे अरब चाहते है कि हम इस्रायलियों से और उनके घरेलू दुश्मनों यानी उनकी जनता से लड़ें। कैप्टेन साहब, आप जानते होंगे कि कई अरब देशों में हमारी सेना के रेजिमेंट हैं, जो क्रांति से वहां के सुलतानों की रक्षा करती है। अगर हमारी सेना लौट आए, तो उन देशों में कहीं खुमैनी टाइप की, कहीं रूसी ढंग की क्रांति हो जाए। पाकिस्तान उन देशों में इस्लाम की रक्षा कर रहा है। हमारे फौजी बहुत अहम काम कर रहे हैं।

अफसर से इतनी घनिष्ठता हो गई है कि विदाई के वक्त जोसेफ को 'मिर्जा गालिब' सिनेमा के तीन पास दिए। बोला—जरूर देखो। मैं इसे कई दफे देख चुका हूं। मिर्जा गालिब की गजलों में सुरैया ने क्या जान डाल दी है। हर शेर तड़पा देता है। आप तो शायर हैं, ज्यादा पसंद करेंगे।

जोसेफ टैक्सी लेकर घर पहुंचा क्योंकि 3 बजे का शो था। मसीह घर मे नहीं था। मसीह के लिए एक पर्ची लिखकर साथ में एक टिकट रख दिया आर मेरी और जोसेफ सिनेमा के लिए चल पड़े।

पर्ची में लिखा था—

माई डियर पापा,

तजम्मुल हुसैन साहब ने मिर्जा गालिब के तीन पास दिए। आपके लिए एक पास छोड़ रहा हूं। थर्मस में चाय है। पीकर तुरन्त आ जाएं। वहा से निकल कर हम कहकशां रेस्टोरेंट में बैठेंगे। वहीं खाना खाएंगे।

आपका

जोसेफ

मसीह को जब यह पर्ची मिली तब साढ़े पांच बज चुके थे। उसे सारी घटना बहुत अजीब लगी। तजम्मुल हुसैन सांस्कृतिक मंत्रालय का भी सचिव है, पर वह इतना मगरूर है, कि वह किसी को भला पास क्यों देने लगा। उसे लगा यह सब फोर्जरी (जालसाजी) है। उसे बहुत गुस्सा आया।

लगा घटनाएं किसी खास दिशा मे जा रही है। कल एक फांसी होने वाली थी। उसी सिलसिले मे वह जेल गया था। फासी पाने वाले के वजन के पत्थर रखकर रस्सी और यंत्र आजमाए गए कि कही फांसी देते समय रस्सी तडककर टूट तो नही जाएगी। यह एक बेकार की रस्म अदायगी है। जिन दिनों वैसी रस्सी होती थी, उन दिनों और बात थी, पर अब तो नाइलन की रस्सी होती है जो टूट नही सकती। सरकती भी खूब है।

उसे याद आई एक पुरानी बात जो हमेशा याद आती थी। भुट्टो को फासी के पूर्व तेकया मे उस रस्सी का वजन डालकर आजमाने के बाद टहलता हुआ फांसी घर पहुचा था। वहां चीफ हैड वार्डर जाकिर खड़ा-खड़ा भुट्टो से बात कर रहा था। जाकिर ने मसीह को देख लिया था और हाथ का इशारा कर दिया था कि तुम आगे न बढ़ो। मसीह जहा था भुट्टो को आंखें वहां नही पहुंचती थी।

भुट्टो कह रहा था—इस हरामजादे से कहो कि यह ड्रामा बद करे। बहुत हो चुका। मैंने उसे 1976 के एक मार्च को कई जनरलों के हक मारकर इसे कमांडर इन चीफ बनाया। इसलिए मैंने पहले ही जनरल गुल हसन और एयर मार्शल रहीम खां को मुल्क के बाहर तैनात किया था। पर वे इस्तीफा देकर आ गए, तो मैंने टिक्का खां को डिफेंस मिनिस्टर (रक्षा मंत्री) बना दिया। यही नही, इसके बाद मै एक दफे ज़ीया के यहा एकाएक पहुंच गया, तो वह शराब पी रहा था। मुझे देखकर बोतल-गिलास छिपा दी। उन दिनों वह मुझे सलाह दे रहा था कि जनता से लड़ने का एक ही तरीका है, वह है इस्लामी कानून लागू करो। मैं नही मान रहा था। फिर इसने लाहौर के एक समारोह में प्रोड्यूसर डाइरेक्टर आगा-हसन इम्तिसाल की बीवी सुन्दरी ऐक्ट्रेस आसिफा का हाथ पकड़ लिया। मैंने रोका कि क्या इस्लाम मे यह वाजिब है। ज़ीया और इस्लाम की ठेकेदारी।

सब कहते थे कि ज़ीया मेरा चमचा-फैक्टोटम (factotum) पला हुआ गुडा है। पर मेरे साथ यह ड्रामा कर रहा है। जाकिर, उसे कहो यह ड्रामा बन्द करे।

इस पर जाकिर ने अदब से कहा—हुज़ूर, आपकी आखिरी ख्वाहिश

क्या है ?

—आखिरी ख्वाहिश ? तो क्या यह ड्रामा नही है ? या यह भी ड्रामा है ?

जाकिर पहले से ज्यादा अदब से बोला—हुजूर, यह ड्रामा नही। आप कुरान शरीफ की तलावत (पाठ) करें। खुदा हाफिज !

यह याद कर मसीह के रोंगटे खड़े हो जाते। इस बातचीत की याद छोड़कर मसीह ने घड़ी देखी। गुसलखाने में जाकर मुह धोया। कपड़े बदले। छह बज रहे थे। वह कहकशां पहुच सकता था, पर कपड़े बदलकर जब वह टाई बांध रहा था, तो उसे ऐसी थकावट लगी कि राय बदल गई। टाई पटक दी। यह भी देखना है कि सवेरे तीन बजे उठना है। जीप आएगी लेने। वह कहकशां नही गया। थर्मस में चाय थी, पीकर सो गया। चाय कैसी तो कड़वी लगी। बुरे-बुरे सपने देखे।

भुट्टो दिखाई पड़ा।

वह भुट्टो से बचकर दूसरी तरफ निकल जाना चाहता था।

पर भुट्टो ने कड़कती हुई आवाज में कहा—ड्रामा नही था, तो क्या था ? मेरे बाद हुआ क्या ? क्या पाकिस्तान को कोई राहत मिली ? क्या पाकिस्तान की कही इज्जत है ? मैंने 73 में पाकिस्तान को एक संविधान दिया था। जीया ने उसे फाड़ डाला। मसीह, तुमने अच्छा नही किया मुझे फांसी देकर।

मसीह ने मिमियाकर कहा—हुजूर, मैं क्या करूं ? जैसा जज ने कहा, मैंने वैसा किया।

भुट्टो गायब हो गया, उसकी जगह जोसेफ आया। वह हंस रहा था।

आठ बजे मां और बेटा आए। वे मसीह के लिए रेस्टोरेंट से खाना लाए थे। यहा तक कि कुलफी और आईसक्रीम। मेरी खाना परोसने की तैयारी करने लगी। पर जोसेफ—पापा माम्मा गुडनाइट—कहकर चला गया। जाकर उसने अपने कमरे का दरवाजा धड़ाके से बंद कर लिया।

मेरी खाना प्लेट में डालकर लाई। सचमुच खाना गर्म था। बिरियानी, कबाब, आधा मुर्गा रोस्ट। कुलफी। अलग से आईसक्रीम भी।

जब मसीह खाना खा चुका, तो मेरी ने प्लेट ले जाकर सिंक में डाल

दी।

मियां-बीवी सो गए। यही नियम था, फांसी वाले सवेरे के पहले वाली शाम को वे चुपचाप सो जाते थे। पति-पत्नी न रहकर अजनबी बन जाते थे।

रात तीन बजे जीप आई। मसीह ने थर्मस से चाय पी। फिर मुह-हाथ धोकर चल पड़ा।

मेरी ने क्रास का चिह्न बनाकर दरवाजा बंद कर लिया। हमेशा की तरह। जीप स्टार्ट हुई और चल पड़ी।

पर मेरी हमेशा की तरह अपने कमरे मे जाकर सो नही पाई। देर तक वह दरवाजे के पास खड़ी रही। थोड़ी देर मे उसने देखा, एक छाया उसकी तरफ बढ रही है। रोगटे खड़े हो गए, पर उसे कोई भय नही लगा। वह छाया टटोलते हुए और आगे बढी।

—जोसेफ, तुम हो ?

—हां मैं हूं !

मेरी बोली—यह काम बडा खराब है।

—कौन काम ?

—फांसी लगाना।

—है खराब, पर—जोसेफ बोला

मेरी ने कहा—पर क्या ?

जोसेफ ने भर्राई हुई आवाज में कहा—कुछ नही···कहने वाली बात नही है।

मेरी ने कहा—साफ-साफ कहो, डरो मत···वह सात बजे तक नही आने के। ठीक छह के घंटे पर फांसी होती है। ठीक छह बजे···

जोसेफ कुछ कांप रहा था, बोला—पर···

मेरी एकाएक टूट-सी गई, बोली—मेरे खाविंद सैकड़ों को फांसी दे चुके। पर वह मुझे फांसी नही देते। तुम मुझे फांसी दो। मैं फांसी पर चढ़ना चाहती हूं।

—दूगा, जरूर दूगा, पर सोच लो, रो न पड़ना। मैं बड़ा बेदर्द हूं।

मेरी ने दौड़कर जोसेफ को जकड़ लिया। फिर बिल्ली जैसे चूहे को

दबोच लेती है, जोसेफ ने मेरी को दबा लिया । मेरी चो-ची करने लगी ।

ठीक छह बजे तारा मसीह ने फांसी लगा दी । मां बेटे के सम्बन्ध को पहले कई बार फांसी लग चुकी । जब छह बज गए तो मेरी ने ईसा की तरह कब्र से उठते हुए कहा—तुम शायर नहीं डायर भी हो ।

—डायर क्या ?

—डायर वही जिसने जलियानवाला बाग मे निहत्थों पर गोली चलाई थी ।

—पर मम्मी आप तो निहत्थी नहीं थी । आपके सीने पर बम के दो गोले थे ।

—चल बेशर्म मम्मी के बच्चे—कहकर मेरी कपड़े सम्हालती हुई अपने कमरे में चली गई ।

जब तारा मसीह अपने विवेक पर शराबी मरहम रखकर फांसी देकर लौटा, तो मेरी ने हमेशा की तरह उसका स्वागत किया जैसे इस बीच रावी का पानी रुका पड़ा हो । जोसेफ सो रहा था ।

तारा ने पूछा—जोसेफ कहां है ?

—वह सो रहा होगा ।

—जानवर है ।

—है—काश वह खोलकर अपने शरीर पर उस जानवर की करतूतें दिखा सकती ।

सात

इंदर डल गेट मे शिकारे से उतरकर पैदल चल पड़ा । वह श्रीनगर की सडकों और कदलों (पुलों) से परिचित था । रवाना होने से पहले उसने एक बार झील को आंख भर कर देखा । झील पहाड़ की बाहों मे सो रही थी । अब की बार जेहलम में पानी कम था, पर झील जेहलम का पानी चुराकर लबरेज होकर ठहरा रही थी ।

माइक ने कई बातें कही थी । एक बात तो यह थी कि क्रान्ति असफल

हो चुकी। बिस्मिल्ला गलत रहा। नही, बिस्मिल्ला के पहने ही क्रांति कली की हालत में मसल दी गई। अवश्य उसने यह कहा था कि रूस में क्रांति 1905 मे हो नहीं सकी, पर 1917 मे हुई। 12 साल बहुत होते हैं। फिर लेनिन-सा नेता कहां ? माइक ? नही, माइक हमारा नेता नहीं है। उसे तो हम इस्तेमाल कर रहे है। वह विश्व लोकतंत्र का एजेंट है। वह भारत का बल्कॉनीकरण कर उसके टुकड़े करना चाहता है। इसलिए कि भारत मे लोकतंत्र तभी जी और पनप सकता है, जब केन्द्र करके कुछ न रहे।

पंजाब ने जो कुछ उन्नति की, वह अपने बूते पर की। केंद्र ने उसे कोई वृहत् उद्योग नहीं दिया। बहाना यह है कि सरहद पास है। सरहद माने पाकिस्तान। इस चिंतन का फायदा दक्षिण को मिला। सारे उद्योग उधर जा रहे हैं। पर दक्षिण अलग हुआ तो क्या ? पूरब को कुछ नही मिल रहा है, क्योकि पूरब के लोग, बंगाली, बिहारी हड़ताल बहुत करते हैं और उधर वामपथियों का जोर है। हम अपने खालिस्तान मे हड़ताल होने नहीं देंगे। हड़ताल गैर कानूनी होगी जैसे रूस आदि देशों में है।

माइक ने लंदन टाइम्स की नौकरी की बात कही। बहुत बडी बात है, पर इंदर ने सोचा मैं तो भिंडरावाले की तरह मर मिटना चाहता हू। वह मन ही मन गुनगुनाने लगा—

सर फरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है।
देखना है जोर कितना बाजुये कातिल में है।
रहवरे राहे मुहब्बत रह न जाना राह में।
लज्जते सेहराने वर्दी दूरिये मंजिल में है।।
अब न अगले वलवले हैं और न अरमानों की भीड़।
सिर्फ मिट जाने की हसरत अब दिले 'बिस्मिल' में है।
आज मकतल में यह कातिल कह रहा है बार बार।
क्या तमन्नाये शहादत भी किसी के दिल में है।
ऐ शहीदे मुल्को मिल्लत मैं तेरे ऊपर निसार।
अब तेरी हिम्मत का चर्चा गैर की महफिल में है।।
वक्त आने दे बता देंगे तुझे ऐ आसमां।
हम अभी से क्या बताएं क्या हमारे दिल में है।।

रामप्रसाद बिस्मिल, चन्द्रशेखर आजाद और अशफाक इस गीत को गाते थे। भगतसिंह भी इसे गाते थे। पहली बार इस गीत का सदुपयोग हम कर रहे हैं। भगतसिंह गुमराह था। वह फोसीघर मे बैठकर "मैं क्यों नास्तिक हूं" लिखकर केवल सिख धर्म पर नही सब धर्मों की जड़ मे नमक भर गया।

मेरी हालत पर यह गीत ज्यादा लागू होता है। क्या खूब कहा, लज्जते सहरानेवर्दी दूरिये मंजिल में है। युग-युग के क्रांतिकारियों की भावना यही रही।

मैं क्यों नौकरी करूंगा? क्या मैं नौकरी करने के लिए पैदा हुआ? माइक का चाचा रूपर्ट मरडोक कोई आदर्शवादी नही। उसने पहले आस्ट्रेलिया के अखबारो पर कब्जा किया और यह ऐसे किया कि दूसरे स्थानीय अखबारों से उसका स्वर ज्यादा अस्ट्रेलियावादी रहा। पर आस्ट्रेलिया से बाहर निकलकर उसने सुर रातोंरात बदल दिया। वह विश्वप्रेमी हो गया। पर असल मे उसका एकमात्र लक्ष्य था अखबारो की अधिक से अधिक बिक्री। वह सपादकों की स्वाधीनता के गीत गाता रहा, पर चाहता रहा कि सब उसे उत्कृष्ट प्रकाशक के रूप मे जानें। संपादक आते है और जाते हैं।

नही, मैं नौकरी नही करूंगा। वह 'सर फरोशी की तमन्ना' गुनगुनाने लगा।—रहबरे राहे मुहब्बत रह न जाना राह में।

अमीरा कदल पुल पार कर वह कुछ मिनटों में अब्दुल्ला गनी और कासिम वट्ट के घर पहुंच गया। भीतर घुसते ही उसने कहा—स्वस्तिक ने मुझे भेजा है। मैं बहुत थक गया हूं। राहत की तलाश में आया हूं।

—आपको स्वस्तिक ने भेजा है न? मैं आपको राहत दूगा। पर पहले आप गुसल (स्नान) करें।

इंदर को एक गुसलखाने मे भेजा गया। प्रचुर साबुन और गरम पानी से नहाकर वह तृप्त हो गया। भिंडरावाले के मरने का गम कुछ दूर हुआ ऐसा लगा।

फिर खाना आया। एक सुन्दरी महिला सरस्वती मेजबान का काम

कर रही थी। वह भी उसके साथ खाने बैठी। कश्मीरिन लग रही थी। पढ़ी-लिखी थी। न उसने कोई परिचय दिया न पूछा। हां वह उसे बराबर आंखों से तोलती रही। खाना परोसकर पहली बार बोली—क्या खाने के साथ आप म्युजिक (संगीत) चाहेंगे ?

इंदर ने कहा—हा, पर धीमा। मेरे एक बुजुर्ग, कई बुजुर्ग मर गए······

—युवती ने कहा—सॉरी। कोई ऐक्सिडेंट (दुर्घटना) ?

—यही समझिए।

वह महिला बोली—कोई शब्द का धार्मिक रिकार्ड लगाऊ ?

इदर को इस प्रश्न मे कुछ तिरस्कार की डोर दिखाई पडी। बोला —नही। गम जाती (वैयक्तिक) नही, पोलिटिकल (राजनैतिक) है।

युवती एकाएक जैसे सारी बात समझती हुई (मानो तीसरा नेत्र खुल गया) बोली—सरफरोशी की तमन्ना चलेगा ?

—हां। आपको कैसे मालूम ? मैं अभी थोड़ी देर पहले यही गजल गुनगुना रहा था।

युवती खिलखिलाकर हंस पड़ी। बोली—हम कस्टमर (गाहक) की तबियत भांप लेते है—कहकर वह रेकार्ड लगाने गई। फौरन ही गीत शुरू हो गया।

गाहक ? कैसा गाहक ? इदर समझ रहा था कि यह किसी तरह का सोफिस्टिकेटेड (उच्चस्तरीय) क्लिनिक (चिकित्सा केन्द्र) है। पर गाहक ? उसे तो कहा गया पैसा न देना। उसकी कुछ समझ मे आया कुछ नही। गीत की पंक्तियां उसकी चेतना पर खास चोट न कर सकी, कानो की चट्टानों से टकराकर लौट जाती रही।

खाने के बाद युवती ने पूछा—स्वस्तिक ने जितने सरदार भेजे, सब ने डाढ़ी मुडा ली। क्या आप···?

—नही, मैं नही मुड़ाता।

- तो मेरे पहले कई आ चुके है। यह जानकर कि अपने से पहले कई सरदार आए और वे डाढ़ी मुड़ा चुके, कही जैसे कुछ चुभने लगा, मानो सब कुछ स्वाहा हो गया। उसने कहा—नही, मैं नही मुड़ाता।

युवती गंभीर हो गई। स्वीट डिश (मिष्टान) आ चुकी थी। युवती ने उठते हुए कुछ संकोच से पूछा—स्वस्तिक कश्मीरिन पसंद करते हैं। आप क्या पसंद करेंगे? कश्मीरिन या और कोई? बंगालिन? बंगालिन इधर बहुत आ रही है।

इंदर कुछ व्यथित होकर उठ खड़ा हुआ। बोला—मैं समझा था यह कोई क्लिनिक (चिकित्सालय) है।

—है तो यह क्लिनिक ही, पर यहां तांत्रिक मत से चिकित्सा होती है।

—ओह!

—तांत्रिक मत यह है कि वासनाओं को दबाने से वे और उभरती हैं। सरल तरीके से समझाने के लिए यह कहा जाता है कि खूब मिठाई खाओ, ताकि मिठाई देखते ही मतली आ जाए। पाश्चात्य अब इसे अपना रहा है रजनीश के जरिए।

—क्या आपकी संस्था रजनीश की शाखा है?

—नहीं, हम रजनीश से पुराने हैं। कश्मीर और आसाम, कुछ हद तक बंगाल में तंत्र की शिक्षा सुरक्षित है।

इंदर बैठ गया, बोला—तो आपने कस्टमर शब्द क्यों इस्तेमाल किया?

हंसकर युवती बोली—आप की परीक्षा ले रही थी। हमारे यहां कई लोग ऐसे आते हैं जो केवल भद्दे उपादान मे, शरीर के आदान-प्रदान में दिलचस्पी लेते हैं, उन्हें हम वैसा माल देती हैं। वे साधक नहीं कस्टमर हैं। उन्हें हम बट्ट के पास भेजते हैं।

—स्वस्तिक किस श्रेणी मे पड़ते हैं?

—वह मेरे पति हैं तब तक के लिए जब तक वह भारत मे है।

—इंदर की समझ मे कम आया, बोला—बाद को क्यों नहीं?

—हमारा दूसरा सिद्धांत है सब बंधन सामयिक होते हैं। साधक अनिकेत (गृहहीन) और निर्लिप्त होता है। मुसलमानों में दो घंटे के लिए भी निकाह है। घटिया लोगों के लिए घटिया कानून। धार्मिक अरबी इस का फायदा उठाकर बम्बई मे भारतीय स्त्रियों से दो घंटे का निकाह करके

रंडीबाजी को धार्मिक बना चुके हैं। हिंदू पति-पत्नी का संबंध जन्म-जन्मांतर का मानते हैं पर केवल स्त्रियों को बाड़े में रखने के लिए। हम तांत्रिक बिलकुल स्वतंत्र हैं।

इंदर ने एकाएक पूछा—मेरे पहले मेरी तरह जो लोग आए, वे किस श्रेणी के थे?

रहस्यमय तरीके से हंसकर युवती बोली—हम किसी की बात किसी और को नहीं बताते है।—कहकर उसने मुंह सी लिया।

इंदर प्रणाम कहकर निकल गया।

वहां से निकलकर वह जेहलम के किनारे एक जगह बैठा। सारी स्थिति पर चिन्तन करता रहा। उसे श्रीनगर की जेहलम कभी पसद नहीं आई। जैसे टेम्स है। टेम्स नदी के किनारे बैठकर कोई गभीर चितन संभव नहीं। अब तो उस नदी का सम्पूर्ण रूप से व्यापारीकरण हो चुका है। ऐसी ही है यह जेहलम। बदबू आती है। इंदर देर तक बैठ नहीं सका। वह कई गंभीर विषयों पर सोचना चाहता था—गहराई से। माइक कैसा आदमी है? उसकी पत्नी कैसी? पर माइक ने कुछ छिपाया नहीं। युवती भी भद्र लगी, छिछोरी नहीं बल्कि अथाह। सुन्दरी है, पर उसका सौंदर्य भटकाने वाला नहीं। यह साधना कैसी है? अपने से पहले आने वाले साथी कहां हैं? कीचड़ में कुलबुलाने वाले कस्टमर निकले या कि साधक? माइक साधक है, पर उसकी साधना क्या है? खालिस्तान की स्थापना से माइक की साधना का क्या संबंध है? लोग कहते हैं विश्व साम्राज्यवाद सारी ह्रासशील विचारधाराओं का प्रतिपालक है। माइक ड्रग और हेरोइन का प्रचार चाहता है। इंदर ने स्वर्ण मंदिर के अन्दर अपने साथियों में इनका सेवन देखा था। वहां कुछ स्त्रियों के अलावा सारी स्त्रियां निम्न कोटि की थीं। सबके पेट फूले हुए थे।

वह चल पड़ा। पुल पार करके धीरे-धीरे चलने लगा। श्रीमती माइक ने खूब खिला दिया था। वह बिना पूछे सोनावर बाग पहुंच गया। वहां एक मकान में उसने घंटी बजाई।

घंटी के जवाब में उसके सामने जो युवती आकर खड़ी हो गई, वह इसमें संदेह नहीं था कि उसकी पत्नी थी, पर यह तो श्रीमती माइक की

छोटी बहन लगती थी। गोरों से गोरी। धवल स्फटिक-सी। ओस से धुले पुष्प की तरह पवित्र और पुनीत।

युवती एक क्षण तक अवाक् रही। जैसे कोई बहुत आश्चर्य की बात हो गई हो। मुंह खुला का खुला रह गया। संभल कर बोली—मैं जानती थी, तुम आओगे।

—कहकर उसने घर का दरवाजा पूरी तरह खोल दिया—आओ। मन का द्वार भी खुल गया।

उधर से ब्रिगेडियर ने पूछा—हू इज देयर ?(Who is there ?)कौन आया बेटी ?

—पापा, इंदर आए है।

ब्रिगेडियर साहब लस्टम पस्टम हालत में प्रगट हुए। खुश होकर बोले —मैं जानता था, तुम आओगे।

फिर एकाएक जैसे कुछ याद आया, असल में वह आंसू रोक रहे थे। बोले—तुम लोग खा-पी लेना। मुझे कॉकटेल पार्टी में जाना है। देर में आऊंगा।

कहकर वह चले गए।

आशा इंदर को अपने कमरे में ले गई। उसमे दो खाटें थी। बोली—यह मेरा कमरा है। पापा ने यह मकान खरीदा है, पर यह न समझो कि हम जून भर यहां रहेंगे। हमारे लिए पहलगाम मे हट (झोंपड़ी बंगला) बुक्ड है।

इंदर के मन मे बहुत-से विचार इस तेजी से दौड रहे थे कि वह धम्म से एक सोफा कुर्सी पर बैठ गया। बोला—मेरी वजह से तुम पार्टी में जा नही पाईं।

आशा नाराज होकर बोली—मैं कभी किसी पार्टी मे नही जाती।—फिर हाथ झमकाकर बोली—तुमने मुझे पार्टी में जाने लायक रखा कहां? तुम जानते हो हमारे देश मे स्त्री ही दोषी समझी जाती है। खरबूजे और छुरी का हिसाब।—वह हंसी जैसे चांदी की घंटियां बजी।

इंदर चुप रहा। खैरियत है कि चाय आ गई। कुछ कहना न पड़ा। नौकर नरायन इंदर को जानता था। फोटो देख चुका था। सलाम करके

चाय देकर निकल गया। जाते समय बोल गया—चाय पीकर घंटी बजा दीजिएगा।

आशा बोली—यह नहाने जाएंगे, तो मैं किचन में आकर बताऊंगी क्या पकाना है। पापा चले गए होंगे।

—हां—कहकर नरायन चला गया।

चाय बनाकर पेश करते हुए, आशा बोली—पापा और मैं चिंतित थे कि पता नही तुम्हारा क्या हुआ। अब चिंता दूर हुई। सात सौ मारे गए। तुम नही समझोगे कि रात-रात भर नही सोई।—कहकर उसका गला रुंध गया, बोली—तुम नही समझोगे।

इस बीच आशा की मां कैंसर से मर चुकी थी।

इंदर भीतर से तड़क रहा था, पर ऊपर से साहस दिखाकर बोला—मैं मजबूर था, तुम जानती हो न।

इदर को ऐसा लगा कि वह रुक नही सकता। कही वह कमजोरी जाहिर न हो जाए। वह जल्दी से अपनी चाय पीकर उठ खड़ा हुआ। बोला—मैंडम, प्राब्लेम (समस्या) यह है कि मेरे पास कोई कपड़ा नही है। कोई लुंगी वगैरह···नहाने के बाद···

इसके जवाब मे आशा ने अल्मारी खोलकर कपड़ों का एक पूरा सेट, मय पगडी के सामने रखा और बोली—ये कपड़े तुम्हारे है। लंदन में जब तुम मुझे छोड़कर भगवान बुद्ध की तरह भाग गए थे, तो ये कपड़े और जाने क्या-क्या छोड गए थे। मैं उन्हे साथ-साथ लिए फिर रही हूं। अब यह ढोना सार्थक हुआ।

—भागते भूत की लंगोटी सही—कहकर कपड़े लेकर इंदर गुसलखाने के भीतर चला गया, सोचने के लिए। पहले लोग पूजाकक्ष मे जाते थे अपने से बातें करने के लिए, अब स्नानकक्ष को वह मर्यादा मिली है।

आशा किचन में चली गई।

इंदर ने नहाने में काफी समय लिया। असल मे नहाने की उसे कोई जरूरत नही थी। पर वह सोचना और अपने से बात करना चाहता था। सरकार ने 700 मरे बताया, पर मरे होंगे ज्यादा। भिंडरांवाला कैसे मारे गए? सरकार का कहना है वह अपने लोगों के द्वारा मारे गए। पर अपने

लोग क्यों मारेंगे ? जो लोग पकड़े गए, कहते हैं उन्होंने यह बयान दिया कि बब्बर खालसा के तीन नौजवान लोंगोवाल के स्थान से भिंडरांवाले के पास आए, भिंडरांवाले ने उन्हें अपने पास लेने से इनकार किया और उन्हें बुरी-बुरी गालियां दीं कि तुम्हीं लोगों के कारण यह विपत्ति आ पड़ी। इस पर नौजवानों ने गोलियां चला दीं। एक दूसरी खबर यह है कि भिंडरांवाले के साथ जो 33 नौजवान थे, उन्होंने आत्मसमर्पण करना चाहा। भिंडरांवाले ने उन्हें रोका। नतीजा यह है कि उन्होंने भिंडरांवाले और अमरीक सिंह को गोली मार दी। पर इंदर को ऐसा लग रहा था कि साथियों का कायरपन और आत्मसमर्पणवृत्ति देखकर भिंडरांवाला, अमरीकसिंह जनरल शाहबेग ने आत्महत्या कर ली। आत्महत्या मान लेने पर वीरता में आंच नहीं लगती।

इंदर ने वह भी कहानी सुनी थी कि सुन्दरी बलजीत कौर को किस प्रकार अत्याचार करके मारा गया। बलजीत पर यह अभियोग था कि उसने भिंडरांवाले के अंगरक्षक एस० एस० सोढी को मार डाला। क्यों मारा होगा ? एक ही कारण हो सकता है कि···। पर बलजीत कौर से पूछा नहीं गया और उसे मार-पीट कर गरम तवे पर बैठाया गया, फिर उसकी कोयला बनी हुई विध्वस्त देह को स्वर्ण मंदिर के बाहर फेंक दिया गया।

इंदर को ऐसा लगा कि यदि आशा लंदन में उसकी बात मानती, तो वह उसे स्वर्ण मंदिर में ले आता और कोई न कोई (सब हृष्ट तो थे ही) आशा पर कुदृष्टि डालता। वह राजी न होती। स्वर्ण मंदिर में जो स्त्रियां पाई गईं, उनके पेट फूले हुए थे। और उसे गरम तवे पर बैठाकर उसकी देह को नोचकर जला देते।

वह आगे सोच नहीं सका।

जल्दी से गुसलखाने से निकल पड़ा। सामने आशा को देखकर वह बोला—अच्छा हुआ तुमने उस वक्त मेरी बात नहीं मानी।

—क्यों ?

वह पूरी बात बताना नहीं चाहता था क्योंकि वह भिंडरांवाले के विरुद्ध जा पड़ती। बोला—मास मूवमेंट, जन-आन्दोलन है, कब क्या हो जाए

पता नहीं। जनता हस होती है। मुझे जनता से घृणा है।

आशा इस बीच लंदन से लौटकर मां की रोग-शय्या के बगल में बैठकर मंगा-मंगाकर, जो भी क्रांतिकारी साहित्य मिल गया पढ चुकी थी। बोली—मुझे चंद्रशेखर आजाद की वह कल्पना बहुत पसंद है। क्रांतिकारी गोली चलाता जाए और क्रांतिकारिणी गोली भरकर देती जाए।

इंदर हहरा कर हंस पड़ा, बोला—वह कल्पना चंद्रशेखर आजाद के जमाने में ठीक थी, पर अब स्टेनगन के जमाने मे बंदूक खुद गोली भरती है। हां, क्रांतिकारिणी चाहे तो फोटो ले सकती है, उसका और कोई फंक्शन (कार्य) नहीं रहा।—वह फिर हंसा।—हा-हा-हा-हा।

आशा कुछ गौरव के साथ बच्चों की तरह बोली—मेरे पास अच्छे-से-अच्छा कैमरा है। मैं तुम्हारे फोटो लूंगी।

इंदर सोचकर बोला—फोटो जल्दी ले लेना क्योंकि मैं दाढ़ी मुड़ाने वाला हूं। यह चेहरा ऐतिहासिक हो जाएगा।

चिंतातुर होकर बोली—क्यों-क्यों? क्या तुम कोई बैंक लूटकर आए हो? या किसी को मारा है?

—नहीं, मैं भविष्य की दृष्टि से सोच रहा हूं। गुरुओं ने उस समय की दृष्टि से पंच ककार का प्रचार किया, पर आज के युग में यह एक बोझ है, विशेष कर गुप्त कार्य करने वाले के लिए। नामी चोर मारा जाए—कहकर वह हंसा, फिर बोला—मैंने अभी अंतिम फैसला नहीं किया। कुछ मोह-सा लगता है मुड़ाने में। 25 साल के साथी हैं ये बाल।

आशा ने सूचना देते हुए कहा—पापाजी शुरू से ही मोना (केशहीन) हैं, पर सिख पक्के हैं। गुरबानी कंठस्थ है। मेरी ममी भी ऐसी थी।

इंदर ने टटोलते हुए पूछा—खालिस्तान के बारे में उनकी क्या राय है?

—उन्हें खालिस्तान की कल्पना सैद्धान्तिक रूप से बहुत पसंद है, पर खालिस माने पाक पवित्र, पर वह समझते हैं कि जब केवल ले-दे कर डेढ़ जिले में सिखों का बहुमत है और 33 प्रतिशत सिख पंजाब के बाहर हैं, यह कल्पना अव्यावहारिक है। वह यह भी समझते हैं कि पाकिस्तान बनते समय जो कुछ हुआ सो हुआ, करोड़ों मुसलमान भारत में रह गए, पर खालिस्तान बने, तो ऐसा न हो सकेगा। सब सिख निकाले जाएंगे। उनका

यह भी कहना है कि संख्या की दृष्टि से देखते हुए भारत में सिख बहुत अच्छे हैं। आबादी का दो प्रतिशत होते हुए भी सेना में पंद्रह और असैनिक सेवाओं मे आठ प्रतिशत हैं। पारसी और सिख दोनों हर क्षेत्र मे अपनी संख्या से ज्यादा हैं।

इंदर कुछ नाराजगी के साथ बोला—सिख और पारसी अपने गुणों से बड़े हैं, उनके साथ किसी ने कोई रियायत नही की न एहसान किया।

आशा नम्रता के साथ बोली—जो तुम कह रहे हो, मैंने पापा से वही कहा था।

—वह बोले—ठीक है, फिर तुम अपने गुणों से भारत पर राज्य करो, खालिस्तान वाली डेढ़ ईंट की मसजिद क्यों बनाते हो? मैं ब्रिगेडियर रहा, दिलबागसिंह एयर मार्शल रहे, जैलसिंह राष्ट्रपति हैं, किसी के एहसान से नही।

इंदर चुप हो गया। एकाएक उसके मन में वह घटना वाली बात नाच गई, जिसके जरिए बलजीत कौर गुजरी थी। बलजीत कौर सुंदरी थी, पढ़ी-लिखी थी। आशा की तरह। पर उम्र में आशा को कुछ सीनियर थी। वह किसी लालच से नही आई, बल्कि पूर्ण रूप से समर्पित थी खालिस्तान के प्रति। पर सोढी ने उसके निश्छल निर्मल मन को नही देखा, उसके अंदर जलते हुए आदर्शवाद के मणिदीप को नही देखा, उसने उसके उभारों को और तिरछी रेखाओं को देखा। कई बार इश्क जताया होगा, पर बलजीत ने चेतावनी दी होगी। शायद भिंडरांवाला से भी शिकायत की, पर संत जी अपने स्वप्नो मे इतने खोए हुए थे कि सुंदरी बलजीत की शिकायत उनके कानो में नही रेंगी और सोढी ने मौका देखकर अकेले मे पाकर बलजीत को पटक दिया होगा। जवाब मे धांय-धांय हुई। सोढी मरा पड़ा था। खून से लथपथ। लोग दौड़ आए।

किसी ने सुंदरी बलजीत को यह नही पूछा—तुमने क्यों सोढी मारा?

बस सुंदरी बलजीत पर अनापसनाप अत्याचार शुरू हुआ। शायद अत्याचार करने वालों में कई लोग ऐसे थे जो सुंदरी बलजीत से प्रेम-भिक्षा (या यौनिभिक्षा) मांगकर असफल हो चुके थे। उन लोगों ने उसे गरम

तवे या प्लेट पर बैठाया, शायद अवाध्य योनि को जला देने के लिए। फिर देह को जलाकर, कोयला बनाकर मंदिर के बाहर फेंक दिया। ये चित्र उसके मानस पटल पर आधे मिनट में सिनेमा की तरह गुजर गए।

इंदर सिहर उठा, यहां तक कि आशा ने उद्विग्न होकर कहा—क्या बात है? कुछ तबियत खराब है? डाक्टर सलाम को बुलवाऊं? होटल सांग्रिला के सामने उनकी क्लिनिक है। वडे गुणी है।

इंदर ने कहा—मैं तुम्हारी बातों पर गौर कर रहा था। ब्रिगेडियर साहब और क्या कहते है?

—सब से भयंकर बात जो वह कहते है, वह यह है कि पंचम गुरु अर्जुनदेव ने सोलहवी सदी के शुरू मे जब रामसर मंदिर के स्थान पर पेड़ों के झुरमुट में बैठकर आदिग्रंथ का संकलन किया, तो उनके मन के अन्तरतम कोने में भी खालिस्तानी विचार नही थे। होते तो उसमें सब धर्मों के संतों, कवियों की वाणी न होती। आदि ग्रथ मे गुरु नामदेव के 61 बद, गीतगोविन्द के दो, भक्त त्रिलोचन के चार, ब्राह्मण परमानंद का एक और सिंध के कसाई साधना का एक बद है। कबीर के 500 से ऊपर बद है। और जाने कितने रामानद आदि गैर सिखों की रचनाए उसमें हैं। अब मैं भूल गई।—कहकर वह बच्चो की तरह हंसी। बोली—मैंने लंदन से लौटकर ज्ञानी की परीक्षा पास की। पापाजी मुझे पढ़ाते थे। वह ऐसे बोली जैसे उसने कोई गुप्त निषिद्ध कार्य किया था।

इंदर आशा को ध्यान से एकटक देख रहा था। उत्साह पाकर आशा कुछ सलज्ज मुद्रा में बोली—मैंने इसलिए गुरबानी का अध्ययन किया कि तुम खुश होगे।

इंदर एकदम से जैसे किसी बात को जबरदस्ती रोकते हुए खड़ा हो गया, बोला—तुम्हारा नरायन बड़ा सुस्त है। खाने में कितनी देर है? मुझे नींद आ रही है।

आशा भी खडी हो गई। बोली—यहां खाओगे या (डाइनिंग रूम) खाने के कमरे में?

—खाने के कमरे में।

दोनों खाने के कमरे में गए।

इंदर दोपहर को खा चुका था, फिर भी उसे भूख लगी थी। उसका ध्यान फिर बलजीत कौर वाली घटना पर जाना चाहता था, पर उसने जबर्दस्ती ध्यान माइक की कश्मीरी पत्नी पर केन्द्रित किया? कैसी पत्नी है? माइक कौन है? क्या वह सी० आई० ए० का एजेंट है? है तो हर्ज क्या है? हम भारत के हस्ती समान आकार से पीड़ित हैं, वह भी। राजनीति क्या है? कौन किसको अपने उद्देश्य की अपनी गाड़ी में कितना जोत सकता है।

खाते-खाते आशा पूछ बैठी—तुम्हारा ध्यान खाने पर नहीं है।

—नींद आ रही है शायद। माफ करना···

हंसकर बोली—माफ कर दिया। पर नरायन माफ नहीं करेगा। वह प्रशंसा सुनने का आदी है। उसने ममीजी से खाना पकाना सीखा है।

चारों तरफ देखकर नरायन को न पाकर (कहीं होगा) बोला—खाना बहुत अच्छा है। न स्काटलैंड में मिला, न अमृतसर में।

महज बात करने के लिए बात बढाते हुए इंदर ने आगे कहा—कश्मीरी भी अच्छा खाना पकाते हैं, पर पंजाबी माह दी दाल, सरसों के साग के सामने कुछ नहीं।

दोनों हंसे। आशा बोली—कल यही सब बनेगा···

—कल की किसने देखी है—कहकर इंदर उठ पड़ा।

दोनों सोने के कमरे में गए।

इंदर दांत ब्रुश कर लेट गया। लेटते ही सो गया।

आहट पाकर जब उसने आंखें खोली, तो उसे लगा वह स्वप्न देख रहा था। वह चौंक पड़ा।

आशा छुरा लेकर खड़ी थी (डर नहीं लग रहा था)। इंदर को लगा स्वप्न है।

आशा एकाएक बोली—दगाबाज, तुम उस दफे भाग गए थे। आज नहीं भाग सकते।

इंदर आंखें मलता हुआ बैठ गया, बोला—भागने का कोई इरादा नहीं। पागल न बनो मैडम···

—पागल नहीं हूं। तुम उस बार लंदन से भाग गए थे। बुद्ध भी अपनी

पत्नी से भागे थे, पर पुत्र राहुल देकर। तुम अब की बार भाग नहीं सकते, जब तक कि मुझे बीज न दे दो। बीज, बीज, समझे? भागने की कोशिश करोगे, तो मैं तुम्हें मारकर मर जाऊंगी। बीज देकर चाहे तुम जहां जा सकते हो।—कहकर उसने दांत किटकिटाकर छुरा लपलपा दिया।

इंदर को लगा यह सपना है। सपने के सिवा और क्या? अभी थोड़ी देर पहले अच्छी-खासी बात कर रही थी। जरूर यह सपना है। उसने आंखें मलकर सो जाने का रुख किया। फिर लेटने लगा।

इंदर को लेटने का उपक्रम करते हुए देखकर आशा झपटी छुरा लपलपाते हुए। आत्मरक्षा में इंदर भी झपटा। इस गड़बड़ी में कई पैंतरे हुए, पर अगले मुहूर्त में आशा नीचे नंगी लेटी थी और इंदर उस पर सवार था।

आशा ने उसे बांहों मे चिपटाकर पागल की तरह चूमते हुए कहा—तुम मुझे मार डालो। मैंने तुम्हें छुरा दिखाया। मैंने पाप किया। तुम मुझे सजा दो। मैं तुम्हारी बांहों मे मर जाना चाहती हूं। तुम छोड़ जाओ, इससे अच्छा है मैं मर जाऊं। मार डालो, मुझे सजा दो।

इंदर अब अपने काबू में नहीं रहा। उसने कई बार सजा दी, यहां तक कि वह रो पड़ी। फिर भी बोलती रही—और सजा दो, सजा दो। मैं गुनाहगार हूं…बीज मिल चुका था। राहुल उसकी कोख मे था।

अंत तक इंदर पस्त होकर सो गया था। उसने समझा था स्वप्न समाप्त हो गया। आशा भी सो गई।

जब दिन चढ़े दोनों नरायन की दस्तक पाकर जगे, तो बिस्तरे की चाय पीते-पीते इंदर ने कहा—कल मैंने एक अजीब सपना देखा। सपना तो सपना ही होता है, पर छुरे की बात समझ मे नहीं आई।

—मेरी भी एक बात समझ में नहीं आई।

—क्या?

—तुमने कई बार मेरे कानों में बलजीत बलजीत कहा, पर मेरा नाम तो आशा है।

इंदर सुनकर स्तब्ध रह गया। बोला—क्या मैंने तुम्हें बलजीत कहा?

—हाँ, मुझे बड़ा बुरा लगा। क्या तुम मेरा नाम भूल गए?

असली बात के सांप को घास से ढकने की चेष्टा करते हुए बोला—नहीं, यह तुम्हारा पार्टी नेम (दलीय नाम) हुआ। तुम को मैंने अपनी पार्टी का मेम्बर बनाकर यह नाम दिया।

आशा को यह बात कतई नहीं जंची। साफ झलक गया कि इंदर कोई बात छिपा रहा है। बोली—क्या तुम्हारी पार्टी में स्त्रियों को इसी ढंग से बलात्कार के बाद ही सदस्य बनाया जाता है? मुझे बलजीत नाम कतई पसंद नहीं।—उसने मुंह बना लिया।

इंदर ने पिंड छुड़ाने के लिए कहा—तुम अपना वैकल्पिक नाम चुन सकती हो। यह अधिकार तुम्हे है।

कहकर वह गुसलखाने में घुस गया।

इंदर को अपने ऊपर क्रोध आया कि बलजीत कौर की मृत्यु उसके अंतर्मन में इस तरह पैठ चुकी है कि अत्यन्त अतरंग लहमे में जब घोड़ा लगाम तोड़कर बेतहाशा दौड़ रहा था उसने अपनी पत्नी के कानों में बलजीत बलजीत कहा। माना कि बलजीत सतीत्व के लिए शहीद हो गई, पर अपने ऊपर इतना प्रभाव ठीक नहीं, क्योंकि यदि बलजीत सतीत्व के लिए शहीद हुई, तो साथ ही वह प्रतीक इस बात का है कि अपने साथी बड़े घटिया दर्जे के रहे। इससे भी खतरनाक बात यह रही कि अंत तक राय सामने नहीं आ पाया और बलजीत कौर को सजा मिली। सजा भी बर्बर। गरम प्लेट पर बैठाकर जननेन्द्रिय जला देना। सजा का तरीका बताता है सजा बलजीत को नहीं बल्कि उसकी विद्रोही जननेन्द्रिय को देना अभीष्ट था क्योंकि उसने अपना द्वार नहीं खोला था।

चाय नौ बजे हुई तो ब्रिगेडियर वरियाम सिंह मौजूद थे। वह आठ बजकर दस मिनट वाली रेडियो बुलेटिन सुनकर आए थे। आशा जानती थी कि पापाजी यदि सफर में न हुए तो तीन बुलेटिनें जरूर सुनते थे—लगभग धार्मिक रूप से आठ दस की, दो बजे की, रात नौ बजे की।

आशा ने बातचीत जारी करने के उद्देश्य से कहा—पापा, क्या खबर है?

—कोई खास खबर नहीं है। जिसे सैनिक भाषा में मापिंग अप

कहते हैं यानी बचे-खुचे भागे बिखरे मुजाहिदों को बीन लेने का काम जारी है। अलग-अलग जिलों में दस-बीस आदमी, दस-बीस हथियार रोज पकड़े जा रहे हैं।

इंदर ने कहा—यह स्कीम (योजना) रूस से आई होगी।

ब्रिगेडियर वरियाम सिंह ने कहा—कुछ अखबारों ने लिखा है कि रूस ने हरमंदिर पर चढ़ाई की सलाह दी। हो भी सकता है नही भी हो सकता है। पर मापिंग अप तो साधारण सैनिक कारंवाई है। दूसरे महायुद्ध में भारतीय सेना ने कई मोर्चों पर मापिंग अप कार्य किया। मैंने मापिंग अप मे दो इटालियनों को पकड़ा, जिस पर मैं कैप्टेन बना दिया गया।

आशा से पूछा—उन्हे पकड़कर आपने क्या किया?

—उन्हे पकडकर हमने हिदायत के अनुसार रणभूमि के पीछे पहुंचा दिया।

—वहां क्या हुआ? उन्हे मार डाला?

—नही, उनका इंटरोगेशन हुआ। पूछताछ।

—क्या पूछा गया होगा?

—यही कि दुश्मन कहा है? सख्या क्या है, उनके पास [illegible] हथियार हैं, उनकी मानसिक अवस्था क्या है?

इंदर ने पूछा—आपका ख्याल है। यह कब तक [illegible]?

—जब तक लोग पकड़े जाएंगे—कुछ रुककर [illegible] खबरें मालूम होती रहेंगी, तब तक धरपकड़, [illegible] बड़ी अजीब बात हो रही है। वह यह कि जो पकड़ा [illegible] मुखबिर बनकर नए लोगों को और हथियार पकड़वा [illegible] के हाथ पड़ जाते हैं तो उनका भी इंटरोगेशन [illegible] चौबीस घन्टे तक प्रतिरोध करता है, तब तक [illegible] है।

इंदर इस दुखती नस से वाकिफ था। [illegible] क्रांतिकारी दल के लोगों की तरह नहीं थे। वे [illegible] स्टेनगन पर शान्ति में विश्वास रखते थे। [illegible] ही धात से कोई मतलब नहीं। [illegible]

दिया किसी को मारने या बैंक लूटने। विचारधारा के नाम पर उतना था कि सिख भारत में गुलाम हैं, पंथ खतरे में है, सिखों को आजाद होना चाहिए। इससे ज्यादा समझने-पचाने की उनमें शक्ति नहीं थी।

इंदर ने रुककर कहा—हमारी पार्टी आम जनता की पार्टी है, ऐसा तो होगा ही। रूस में भी 1905 की क्रांति असफल हुई, तो क्रांतिकारियों में रहस्यवाद आदि जर्जरकारी विचारधारा फैलने लगी, तब लेनिन ने एम्पिरिओक्रिटिसिज्म लिखा। फिर भी 12 साल बाद 1917 में क्रांति हुई। बहरहाल हम हार गए।

ब्रिगेडियर वरियाम सिंह ने रूसी क्रांति के संबंध में अस्पष्ट रूप से सुन रखा था, पर अधिक नहीं। हां, रूस किस प्रकार पचास साल में एक तीसरे दर्जे की शक्ति से सैनिक दृष्टि से एक महाशक्ति हो चुका था, इसका कुछ इतिहास उन्हें मालूम था। लेनिन से वह स्तालिन का नाम ज्यादा जानते थे।

इंदर खाना समाप्त कर चुका था। ब्रिगेडियर बोले—मैं सैनिक दृष्टि से एक औसत आदमी की तरह सोच सकता हूं। खालिस्तान का सपना अब भी पूरा हो सकता है बशर्ते कि कोई लड़ाई हो, उसमें भारत हार जाए और फिर बन्दरबांट हो। भारत की सेना हार नहीं सकती, पर मान लो भारत के किसी कट्टर शत्रु को अणु बम मिल जाए और उस हालत में भी भारत गांधी की लीक पीटते हुए अणु बम बनाने से इंकार करे, तो उस स्थिति में भारत के टुकड़े-टुकड़े किए जा सकते हैं। पर इस हिसाब में एक अंतर्राष्ट्रीय घटक बड़ा जबर्दस्त है जो राजनैतिक भी है युद्ध नैतिक भी। वह यह है कि रूस का भालू काबुल में बैठा है। वह भारत पर हमले की हालत में चुपचाप बैठा नहीं रहेगा। पाकिस्तान यह मानता है, चीन भी जानता है।

इसके बाद आगे का कार्यक्रम तय हुआ। यह तय हुआ कि इंदर और आशा पहलगाम के हट में जाएंगे और ब्रिगेडियर साहब ट्राउट मछली का शिकार करने कोकरनाग से आगे बयालू और थाईसुन में जाएंगे।

पहलगाम जाने के पहले इंदर ने डाढ़ी मुंडा ली। इंदर ने सोचा, पहलगाम में बैठकर सारी स्थिति पर नजर रखी जाए। वहीं से माइक से

आदमी निराश न हों। महानायक का कहना है कि पंजाब में तो अब हम एक हद तक लंगड़े हो गए। पर हमारे दूसरे मोर्चे कायम हैं। पाकिस्तान में प्रशिक्षण पाए हुए हजारों लोग हैं। वहां अटक, दाउड़ किलों में याम कर ऐबोटाबाद में जिन्हें प्रशिक्षण दिया गया, उनमें से बहुत कम मारे या पकड़े गए हैं। ऐबोटाबाद में आपने भी भाग लिया?

इंदर ने कहा—हां, मैं वहां इतिहास पर भाषण दिया करता था। ऐबोटाबाद अंग्रेजों के जमाने का फौजी केन्द्र है। वहां से कश्मीर में घुसना बाएं हाथ का खेल है। मैं बीस से अधिक बार वहां से भारत में घुस चुका हूं। 11 जून को स्वर्ण मंदिर में सरकारे खालसा घोषित होने वाली थी और फौरन हमारी मित्र-शक्तियां हमें स्वीकार कर लेतीं और शायद हमारे साथ संधि हो जाती कि हम पर आक्रमण हो तो वह हमारी मदद करेंगी।

—हां 3 जून को उसके पहले ही गांवों में विद्रोह होता। महाराष्ट्र के भिवंडी में तस्करों की सहायता से झगड़े होते, जिससे सरकार बंध जाती। पर यह सब तो खतम हुआ, फिर भी हमें फारुख अब्दुल्ला से बड़ी आशाएं हैं। बहुतों को तो राष्ट्रपति जैलसिंह से भी आशा है। स्वर्ण मंदिर पर हमले के बाद इतने दिन हो गए। अब तक राष्ट्रपति कुछ नहीं बोले, यह आशा की बात है। हमें यह पता चला है कि जैलसिंह के मानस पर बहुत भारी तनाव है।

इंदर ने जैलसिंह वाले घटक को अपने हिसाब में कोई महत्त्व नहीं दिया, पर डा० फारुक पर उसकी आस्था थी। यद्यपि श्रीनगर में स्वर्ण मंदिर पर चढाई की प्रतिक्रिया में जो जुलूस निकला था, उस पर गोलियां चलाने से उस पर आस्था कम हो गई थी। बोला—जैलसिंह के पैंतरों को मैं कोई महत्त्व नहीं देता। हां अगर वह इस्तीफा दे दे, तो अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में उस घटना का समाचार मूल्य बहुत कुछ हो सकता है, पर खुशवंत सिंह के बयान से उसका मूल्य कुछ ही अधिक होगा। हां, खुशवंत ने जैसे फौरन पद्मभूषण छोड़ा, जैलसिंह उसी तरह फौरन इस्तीफा देते, तो उसका जरूर मूल्य होता। मुझे रामप्रसाद बिस्मिल की वह गजल याद आती है, जो उन्होंने जेल से भागने की सारी कोशिशों के विफल होने पर यह

जानकर लिखा था कि अब फांसी सुनिश्चित है।

युवती को वह गज़ल याद थी, फिर भी वह बोली—नही, मैं टेप रेकार्डर लाती हूं। ठहरिए···

इंदर ने कहा—मैंने यों ही कह दिया, आप इसे इतना महत्त्व क्यों देती हैं। हम रामप्रसाद बिस्मिल को शहीद नही मानते। ये लोग सब हिंदू राज चाहने वाले थे।

युवती टेप रेकार्डर ले आई थी। उसे चलाकर टैस्ट भी कर लिया। फिर बोली—देखिए सरदार जी, हम लोग किसको क्या मानते हैं यह अपनी जगह है। यह जरूरी नही कि इतिहास हमारे साथ सहमत हो। इसी बात पर माइक से मेरा मतभेद चलता है। मैं मानती हू कि भगवती हमसे जो कराती है, हम वही करते हैं, पर माइक समझता है और कम्युनिस्ट भी यही समझते हैं कि वे इतिहास के निर्माता हैं।

एकाएक ठहरकर बोली—यह झगड़ा बहुत लंबा है। रहा रामप्रसाद बिस्मिल हिंदू राज्य चाहते थे या नही, इस पर कम-से-कम अशफाकुल्ला की राय हमारे सामने है जो कुरान गले मे लटकाकर फांसी पर चढे।

इंदर ने कहा—मुझे नही मालूम। आपने बडे ब्यौरे से अध्ययन किया।

—हां, मैं भारतीय इतिहास पर माइक की सलाहकार हू। मुझे यह सब पढ़ना पड़ा। भिंडरांवाला, शाहबेग, अमरीकसिंह की यही कमी थी कि उनमें इतिहास की सम्यक दृष्टि नही थी। माइक इस कमी पर दुखी है क्योंकि यदि सफलता पर सफलता होती जाए तब तो बिना सम्यक दृष्टि के काम चल जाता है। पर यदि हार हो तो उसके धक्के को सहने-पचाने के लिए सम्यक दृष्टि Weltansehauung सम्यक विश्वदृष्टि की जरूरत होती है। तंत्र में, वेदांत में, सूफियों मे, प्राचीन ईसाइयो मे, नानक, कबीर मे ऊंचे दर्जे की सम्यक दृष्टि थी—कहकर वह मुस्कराई, फिर बोली—मैं अशफाकुल्ला की बात कह रही थी। जब वह गिरफ्तार हुए, तो उनको बहकाने के लिए अंग्रेजों ने तसद्दुक हुसैन, एक पुलिस अफसर को जेल में भेजा। वह 1914-18 के युद्ध मे अरब मे ब्रिटिश एजेंट था। उसने अरबों मे घुसकर झगड़ेबाजी पैदा की। वह अरबी बोलता था और उसका चेहरा अरबो में चल सकता था। 'उसने अरबों को समझाया—तुम लोग

तुर्की साम्राज्य मे क्यो हो? तुर्की तो घटिया कौम है। अरब में ही मुहम्मद साहब ने इस्लाम का झंडा बुलंद किया—वगैरह-वगैरह।

लिखने वाला लिखता है—अशफाक से इस आदमी तशद्दुक हुसैन ने कहा—तुम कहां इन हिंदुओं में फंसे हुए हो? ये हिंदू राज्य चाहते हैं। तुमको मैं जेल से छुडा लूंगा। तुम मेरी बात मानो…।

अशफाक कई दिनों तक तशद्दुक की यह वकालत और बकवास सुनते रहे। उन्हें मालूम नही था कि तशद्दुक ऐसे लोगों ने ही अरबों को बारह कनोजिया तेरह चूल्हे बनाकर उन्हें बरबाद कर दिया, यद्यपि उनका एक धर्म एक भाषा थी। यदि अशफाक को मालूम होता तो वह तशद्दुक को फौरन जूते मारते। बार-बार यही बात सुनकर वह बमक गए, बोले—जो तुम कह रहे हो, वह कतई गलत है, क्रांतिकारी हिंदू राज्य नही चाहते हैं, वे चाहते थे Federated Republic of the United States of India और सुन लो कान खोलकर, हिंदू राज्य अंग्रेजों के राज्य से अच्छा होगा।

तशद्दुक फिर अशफाक के पास नहीं फटका।

सारी कहानी सुनकर इंदर हक्का-बक्का रह गया। बोला—दीदी, आपने जो कुछ कहा उसमे से कई सवाल पैदा होते हैं। वह यह कि सिख धर्म के आधार पर खालिस्तान बनने पर भी उसके टुकड़े हो सकते हैं…

—जैसे पाकिस्तान के हुए। हां, यह नेताओं पर मुनहसर (निर्भर) है। तुम्हारी तरह कितने लोग है, जो निस्वार्थ हैं?

इंदर ने आश्चर्य के साथ कहा—इसके माने यह हुए कि आप हमारे साथ हैं और नही भी हैं।

युवती हंसकर बोली—एक तांत्रिक के नाते मैं समझती हूं कि मैं माता के हाथों मे एक खिलौना हू। मैं किसी मत के प्रति इतनी आसक्त नहीं हूं कि मैं समग्र सत्य देख न पाऊं। माइक से मेरी इसी बात पर चख-चख रहती है। माइक कहता है, जिसे मैं समग्र सत्य कहती हूं, उसका अवलोकन क्रांतिकारी के लिए घातक होगा। मैं कहती हूं कि हार के बाद सम्यक दृष्टि ही काम दे सकती है।

युवती ने कहा—यह बहस बहुत लंबी है। कभी समाप्त नही होगी। अब आप कविता सुनाओ, जो रामप्रसाद ने जेल से भागने की कोशिश मे

विफल होकर जल्लाद और फांसीकर को प्रत्यक्ष देखकर कही थी।

युवती ने टेप रेकार्डर चालू कर दिया।

इंदर की ओजभरी आवाज गूंजने लगी—

मिट गया जब मिटने वाला फिर सलाम आया तो क्या ?
दिल की बरबादी के बाद उनका पयाम आया तो क्या ?
काश अपनी जिंदगी में हम य' मंजर देखते
यूं सरे तुरवत कोई महशर खराम आया तो क्या ?
मिट गई जुमला उम्मीदें मिट गया सारा ख्याल
उस घड़ी फिर नामावर लेकर पयाम आया तो क्या ?
ऐ दिले नाकाम मिट जा, अब तू कूचे यार में,
फिर मेरी नाकामियों के बाद काम आया तो क्या ?
आखिरी शब दीद के काबिल थी बिस्मिल की तड़प
सुबह दम गर कोई बालाए बाम आया तो क्या ?

कविता समाप्त हो जाने पर भी देर तक टेपरेकार्डर चालू रहा। युवती स्तब्धता के कुहासे से निकलकर टेपरेकार्डर बंद करती हुई बोली—आपकी आवाज ने इस कविता मे चार चांद लगा दिए थे। इस कविता मे हद दर्जे की निराशा है, अपरिहार्य की स्वीकृति है, पर कोई भय या भगदड़ नही है। वही आपकी आवाज में मूर्त हो गई। उर्दू के आशिक माशूक की भाषा की सीमा को काटकर इसमें क्रांतिकारी गुहार साफ सुनाई दे रही है। मालूम है न बिस्मिल ने मैजिस्ट्रेट ऐनुद्दीन (तशद्दुक का मौसेरा भाई) के जरिये यह कविता लखनऊ के अवध अखबार मे भेजी थी। आशिक माशूक की परम्परागत भाषा जरूरी थी, ताकि असली मुद्दे पर पर्दा पड़ा रहे।

इंदर को इस युवती के संबंध मे राय बदलनी पडी। पहली मुलाकात मे उस पर यह छाप पड़ी थी कि यह तंत्र की आड़ मे किसी किस्म की वेश्याओं का अड्डा है और यह महिला आनेवालो से पैसे खीच रही है। पर अब ऐसा लगा कि वेश्यावाला ढंग तो मुखौटा मात्र है। भीतर-भीतर कुछ गहरा काम हो रहा है। यह अजीब युग है कि सबको मुखौटा लगाकर सामने आना पड़ता है। यहां तक कि अच्छे लोगों को भी, क्योंकि अच्छाई

से शासक वर्ग को खतरा है ।

उठते समय युवती बोली—अब तुम यहां न आना । आश्रम बंद करना अच्छा है । संकेत आ चुका है । तुम पहलगाम चले जाओ । हम इस टेप को बजाकर अपनी शीतनिद्रा के दिन पूरा करेंगे ।

आठ

इंदर जब घर (ससुराल) पहुंचा, तो उसने देखा सब सामान पैक हो रहा है । सफर की तैयारी है ।

ब्रिगेडियर रवाना हो चुके थे कार में । एक मैटाडोर तैयार थी पहलगाम के लिए । मैटाडोर माल आज ही ले जा रही है । कल पति-पत्नी कार में जाएंगे ।

इंदर ने आते ही पूछा—मेरा एक पैकेट था ।

आशा ने कहा—है और रुपये भी हैं । मैंने संभाल कर रखा है, आपके सूटकेस में ।

—मेरा कोई सूटकेस तो नहीं था ।

—था नहीं, पर अब है । बीवी भी है, बच्चा भी है—कहकर उसने अपने पेट की तरफ इशारा किया ।

—और वह छुरा ?—उसने हंसकर पूछा ।

—आशा करती हूं उसकी अब जरूरत नहीं पड़ेगी । अब वह सूवनीर (स्मारक) हो गया । बाद को लोग जानेंगे कि यह छुरा बांझपन दूर करने की शक्ति रखता है । Fertility (उर्वरता) देने वाला है । हमने एक छोटा दूरदर्शन मंगा लिया है । आज शाम को राष्ट्रपति का एलान है । उसे देख-सुनकर कल सवेरे रवाना होंगे ।

सुनकर इंदर गंभीर हो गया । बोला—तुमने बड़ा अच्छा किया । मैं केवल सुनना नहीं देखना भी चाहता हूं कि जैलसिंह जो कुछ कह रहा है, वह दिल से कह रहा है या उसे मजबूर करके कहाया जा रहा है ।

आशा बिना हंसे बोली—तुम यह देखना चाहते हो कि कोई सामने

छुरा लेकर खड़ा है या नही ?

—खड़ा नही खड़ी। आजकल सब स्त्रियां छुरेबाज हो रही हैं। जिस तरह प्रचार जारी है, उससे पता चलता है कि वह दिन दूर नही है जब सैंकड़ों स्त्रियां दहेज मांगने वाले ससुर, सास, पति की हत्या करेंगी।

दिन-भर राष्ट्रपति के भाषण की प्रतीक्षा में बीता। घडी बहुत धीरे-चल रही है ऐसा लगा। चाय, कॉफी, कोला, रम सब पिया गया। आशा समझ चुकी थी कि जैलसिंह विद्रोह घोषणा नही करने जा रहे हैं, पर वह ऐसा कहना उचित नही समझती थी। वह केवल पति के चेहरे को देख रही थी। उस पर एक रंग आ रहा था, फिर जा रहा था। आशा को दया लगी, यह इतना पढा लिखा है, फिर भी इसे आशा है कि कुछ कहेगे। उनके कहने में कुछ छिपा इगित होगा। 8 जून को राष्ट्रपति स्वर्ण मदिर गए थे, लौटकर बोलने में नौ दिन लग गए। क्यो ? क्या खिचड़ी पक रही थी ?

यदि राष्ट्रपति के विचार कुछ और थे, तो वे 8 जून को हर मंदिर में ही बोल सकते थे। जब वह वहां दर्शन के लिए गए थे। देश-विदेश के संवाददाता और दूरदर्शन वहां मौजूद थे। कोई उनको रोक नही सकता था। फिर इतने दिन क्यों लगे ?

आशा की राय यह थी कि राष्ट्रपति पद ही ऐसा है कि प्रधानमंत्री के साथ मतभेद की कोई गुजाइश नहीं रहती। इसलिए उसे उनसे कभी कोई आशा नही थी। अब तो खैर सारा कीचड पार हो गया, आटा-दाल के भाव मालूम हो गए। यदि हजार दो हजार युवकों के पास बढ़िया से बढिया आधुनिक अस्त्र भी बच रहे हों तो वे क्या कर सकते हैं ? एक सेना खासकर भारतीय सेना के सामने उनकी क्या बिसात ? वे किस खेत की मूली है ? ब्रिगेडियर साहब ने बताया था—बेटी, अगर भारतीय सेना पर यह बन्धन न होता कि किसी भी हालत में मुख्य इमारत को कोई नुकसान न पहुंचे, तो वह पन्द्रह मिनट में सब कुछ वारान्यारा करके रख देती।

पर यह बात इंदर से कहना असंभव था।

इंदर और आशा दूरदर्शन के सामने बैठे थे। डर था कि कही जमायते इस्लामी वाले बिजली न काट दें कि राष्ट्रपति का सन्देश कोई सुन ही न पाए। इंदर ऐसी टुच्ची हरकतों को पसंद नही करता था। असली बात

यह है कि इंदर के मन में इस संबंध में कुछ दुविधा ही थी कि जो लोग सारे जहां को जबर्दस्ती इस्लाम के झंडे के नीचे लाने का स्वप्न देखते हैं, वे खालिस्तान क्यों चाहेंगे ? चाहते हैं तो इसलिए कि भारत नामक महा-दिग्गज बिखर जाए, तो एक-एक करके सबको जीतेंगे। ऐसा किसी ने इंदर को कहा था लन्दन में। पर वह कहनेवाला शायद कम्युनिस्ट था। दूसरी तरफ खालिस्तान और पाकिस्तान का सहअस्तित्व स्वाभाविक है, क्योंकि दोनों एक सिद्धान्त पर बने हैं, वह यह कि अलग धर्म माने अलग राष्ट्रीयता। यह दर्शनशास्त्र पश्चिम के राजनैतिक चिन्तन के विरुद्ध पड़ता है। पड़े। हमें पाश्चात्य से सीखना नहीं है।

पर इधर एक संदेह पैदा हो गया था, पाकिस्तान के टूटने से। बांगला देश का जन्म इस बात को चिल्ला-चिल्लाकर कहता है कि धर्म राष्ट्रीयता का आधार नहीं हो सकता। यदि धर्म और राष्ट्रीयता एकमेवाद्वितीयम् होते, तो अरब क्यों नहीं एक हो पाते। उनमें बारह कनौजिया तेरह चूल्हे हैं। एक ने यहां तक कहा था कि खालिस्तान बनते ही उसके कई टुकड़े हो जाएंगे। जाट, खत्री, मजहबी। सिखों में कोई इकबाल नहीं जो पाकिस्तान का कविऋषि बने। यहां तक कि जिन्ना की तरह घटिया नेता भी नहीं। तभी वहां दो-दो कौड़ी के सेनापतियों की दाल गलती रही।

आशा ने एकाएक कहा—तुम बड़े चिंतित हो, कुछ खाते-पीते रहो समय कट जाएगा।—रुककर बोली—तुम बहुत उम्मीद कर रहे हो। जैलसिंह कुछ नहीं कहेगा।

—मुझे भी कुछ उम्मीद नहीं है, पर मैं इतना भर देखना चाहता हूं, वह जो कुछ कह रहा है, उसके कहने में उस पर कोई स्ट्रेन (तनाव का बोझ) है कि नहीं।

—तुम विचारों का विविसेक्शन, जीवित चीरफाड़ करना चाहते हो? करो, पर काजू खाओ।

कहकर उसने भुने काजू की तश्तरी उसकी तरफ बढ़ा दी। दूरदर्शन पर एक न एक कार्यक्रम होता जा रहा था, कभी उर्दू में, कभी कश्मीरी में, जो इंदर को बिलकुल बेसिर-पैर लग रहे थे। इन कार्यक्रमों का उद्देश्य क्या है ? लेखकों और कलाकारों को घूस देना ? शायद मन्शा है लोगों

को लगाए रहना ताकि वे सोचें नहीं, क्योंकि आप लोग सोचने लगेंगे तो शासकों के लिए खतरा पैदा हो सकता है।

अंत में राष्ट्रपति का भाषण शुरू हुआ, उसके बाद झंडा दर्शन और राष्ट्रगीत।

जैलसिंह की डाढ़ी ऐसी लग रही थी कि अभी-अभी खिजाब लगाया हो। चेहरा गंभीर था, पर यह गांभीर्य इस कारण भी हो सकता था कि कार्यक्रम कैसा उतरेगा। राष्ट्रपति का मन इस विचार से बोझिल होगा कि सारा राष्ट्र उन्हें सुन रहा है। एक प्रकार की स्टेजफ्राइट मच भीति, जो अब तक शायद सधे हुए वक्ताओं का भी पीछा नही छोड़ती।

राष्ट्रपति की आवाज मे दुःख का पुट था, पर यह पुट वास्तविक था या अभिनेता की तरह बनावटी ?

राष्ट्रपति ने इस बात से शुरू किया कि धर्मस्थान मे आतंकवादियो का जमघट रहा और वे अस्त्र आदि जमा करते रहे। लूटमार, हत्या करने वाले वहां पनप रहे थे बेरोकटोक। राष्ट्रपति ने कहा कि मुझे खुशी है कि फौजियो ने जोखिम उठाकर हरमंदिर पर गोलिया चलाने से इंकार किया। राष्ट्रपति ने कहा कि उनकी इच्छा है कि फिर कभी धर्मस्थान मे गैर-कानूनी अस्त्रों का जमाव न हो।

इंदर को बडी कोफ्त हुई क्योंकि उसे मूल तर्क बडा लचर लगा। जब धर्म-संकट हो तो धर्मस्थान मे अस्त्रो का संग्रह क्यों न हो ? जहा तक दिखाई पडा राष्ट्रपति पर किसी तरह का कोई दबाव नही था। वह सहज भाव से बोल रहे थे। तो फिर यह मात्र अफवाह थी कि राष्ट्रपति दुविधा में है, उन पर दबाव है। यह भी उसी प्रकार की एक मनगढन्त बात है कि भिंडरां-वाला जिंदा है।

आशा ने देखा कि राष्ट्रपति के भाषण का इंदर के मानस पर बुरा प्रभाव पडा। उसने दूरदर्शन खटाक से बन्द कर दिया।

आशा ने मन-ही-मन सोचा कि एक हफ्ता और मिल जाता और खालिस्तानी क्राति हो जाती, तो फिर मुझे पति के दर्शन न मिलते, न यह (पेट की तरफ कनखी से देखकर) बीज मिलता। बोली—कहा गया है कि ईश्वर में आस्था रखो और बारूद सूखी रखो।

—न बारूद सूखी है, न ईश्वर में आस्था है—इंदर ने नाराजगी से कहा।

आशा ने हसकर कहा—अगर ईश्वर मे, वाहे गुरू में तुम्हारी आस्था नही रही, तो तुम सिख नही रहे।

—यही तो मसला है। मुझे तो सुरंग के अन्दर दूर तक कोई रोशनी नही दिखाई दे रही है। चलो हम लोग डल झील के किनारे चहलकदमी करें।

—चलो—आशा पति के साथ उठ खड़ी हुई।

अब एकमात्र आशा फारूक से थी।

पर जब अकाल तख्त पर सैनिक चढ़ाई के प्रतिवाद मे श्रीनगर मे जुलूस और प्रदर्शन हुआ, तो फारूक ने जमायतं इस्लामी और खालिस्तानी भीड़ पर गोलियां क्यों चलाई?

कहा जा सकता है कि उसने दिल्ली को बेवकूफ बनाने के लिए किया।

पर?

आशा को वह ये बातें कह नही सकता था। किसी से नही कह सकता था। खालिस्तान की एकमात्र आशा फारूक और जीया या चीन? यह तो कोई बात नही हुई। इनमे से कोई भी गोट ऐसी नही जो निश्चित हो।

ब्रिगेडियर वरियाम सिंह ने ऐसा कहा था कि फारूक कभी दिल से पाकिस्तानी नही हो सकता। वह जानता है और उसके मरहूम पिता भी जानते थे कि यदि कश्मीर पाकिस्तान में गया, तो पाकिस्तानियों का पहला काम यह होगा कि अब्दुल्ला खानदान को खतम करे या उसे निर्वासित करे। जीया ने दोनो तरीके अपनाए। भुट्टो को फासी दे दी और दूसरों को लन्दन आदि में भगा दिया। इसलिए फारूक अगर पाकिस्तान जिन्दाबाद आदि नारो को प्रोत्साहन देता है, तो उसका मतलब है कि कश्मीर के लोग कांग्रेसियो और कम्युनिस्टों से बचे रहे, उसे वोट देते रहे। अब्दुल्ला परिवार के लिए पाकिस्तान मे शामिल होना माने आत्महत्या। उनकी वही हालत होगी जैसे बांगला देश के मुजीब की हुई कि दो साल के बच्चे तक मार डाले गए। इसके अलावा पाकिस्तानी सिपाहियों ने 1971 मे

[illegible] है। [illegible] देखो, [illegible] हैं।

[illegible] हुए [illegible] तक [illegible]। आशा ने इंदर [illegible] नहीं [illegible] आओ। [illegible] दे [illegible]।

[illegible] के बाद [illegible] के [illegible] से उसकी निराशा दूर हो चुकी थी।

[illegible] ने झुककर इंदर ने शरारत भरे लहजे में कहा—तुम्हारा वह [illegible] कहां है?

—वह [illegible] हो गया।—कहकर वह हंसकर बोली—क्या निकालूं?

इंदर ने हाथ पकड़ते हुए कहा—नहीं, उसकी जरूरत नहीं पड़ेगी। मेरा मन बोझिल है, मैं तुम्हें, माफ करना, तुम मेरी नींद की गोली भी तो हो।

आशा गंभीर होकर बोली—तुम मुझे नींद की गोली की तरह लो और किसी तरह, मैं तन, मन, धन से तुम्हारी हूं।

इंदर झिझककर बोला—मुझे यह हिन्दू सतियों वाली बात पसंद नहीं···तुम जानती हो।

आशा बोली—मैं क्या करूं? हमेशा से प्रेम की भाषा एक ही रही है प्रेम की कोई जाति या धर्म नहीं। मुझे खुशी है कि तुम मुझे इनसोम्निया (अनिद्रारोग) की दवा का दर्जा तो दे रहे हो। खुशी है कि यह दर्जा एक दिन का नहीं है। आप रोज रोटी पकाएंगे, तो आपको रोज चूल्हा जलाना पड़ेगा। मेरे अन्दर भी भट्टी जल रही है।

रेकार्ड प्लेयर पर रेकार्ड लगा था। आशा ने धीरे से उसे चालू कर दिया। जौक की गजल आ रही थी—

जो कहोगे तुम, कहेंगे हम भी हां, यूं ही सही,
आपके गर यूं खुशी है, मेहरबां यूं ही सही।

जल्दी ही इंदर के दिमाग से भिंडरांवाला और जैलसिंह निकल गए।

यह चश्मे शाही तक टहलने का असर था या कि नींद की गोली का असर!

जो कहोगे तुम, कहेंगे हम भी हां, यूं ही सही,
आपके गर यूं खुशी है, मेहरबां यूं ही सही।

नौ

रामदेई बिना समझे-बूझे कि कौन स्टेशन है, उतर तो गई, पर आगे क्या करेगी, इस संबंध में उसके दिमाग मे नक्शा साफ नही था। हाथ में वही झोला था जिसमें वह पिस्तौल थी। वह अच्छी तरह जानती थी कि पिस्तौल गैरकानूनी है। इसका भय तो था ही, पर इससे भी अधिक भय था उन दो बक्सों का जो वह छोड़ आई थी। वे बक्स भी इसी तरह की चीजों से भरे होंगे।

भय का जोर इतना हुआ कि वह स्टेशन में एक बेंच पर सो गई। बस उसने सोते-सोते इतना देखा कि एक नौजवान सिख आकर उसके बगल में बैठ गया, जैसे कि उसके घर मे किराएदार थे।

जब वह जगी तो सवेरा हो चुका था, देखा कि पुलिस वाले उन नौजवान को पकडे हैं और बडा शोर हो रहा है। वह आंख खोलकर देखने लगी, तो पुलिस वालों ने पूछा—यह झोला किसका है?

रामदेई समझ गई कि पिस्तौल पकड़ी जा चुकी है, फिर भी बोली—मेरा है।

—और वह पिस्तौल?—पिस्तौल दिखाकर सिपाही ने पूछा।

—मेरे पास कोई पिस्तौल नही थी। मैं क्या जानू?

दो पुलिसवालो में जो दो बिल्लेवाला था, उसने कहा—यही तो कह रहा हूं। इसने हम लोगों को आते देखकर अपनी पिस्तौल मुसम्मात के झोले में डाल दी होगी।

फिर झोला खोलकर एक-एक माल दिखाया, बुढिया ने हर माल को पहचान कर कहा—मेरा है।

पुलिस वाले नौजवान को ले गए। रामदेई को भी ले गए। चौकी में पुलिस वालों ने नौजवान से और उसके बाद रामदेई से पूछा और जान

लिया कि कही मिली भगत न हो। पर टिकटों से साबित हो चुका था कि औरत जम्मू जा रही थी; करनाल से आई थी। नौजवान के पास कोई टिकट नही था।

—तुम बीच मे उतर क्यो पड़ी ?—पुलिस अफसर ने स्त्री से पूछा।

—सुना कि कोई झगड़ा हो गया, इसलिए लौट पड़ी। बैठकर सो गई।

—जम्मू क्यों जा रही थी ?

—अमरनाथ यात्रा के लिए।

—पर यात्रा के दिन तो दूर है। फिर तेरे पास कोई गरम कपड़ा नहीं—वरिष्ठ सिपाही बोला।

—गरीबों को प्रभु सब दे देते हैं। यह टिकट भी किसी ने खरीद दिया।

पूछताछ से जब कुछ नही पता लगा तो पुलिस ने उसे छोड़ तो दिया, पर उसके पीछे एक सफेदपोश सिपाहिन को चुपके से लगा दिया। पुलिस वाले इतने दिन खूब सोए थे (या सुला दिए गए थे), पर अब सैनिक व्यवस्था ने उन्हें झकझोर दिया था। स्वर्ण मंदिर पर अभियान से क्रांति संबंधी भ्रमजाल दूर हो चुका था।

महिला थाने से निकली, तो उसका मन बोझिल था। इंदरसिंह ने जब देखा होगा कि माई गाड़ी में नही है, यही नही उसकी पिस्तौल भी ले गई, तो उसने क्या सोचा होगा ? उसके बदले यह नौजवान फंस गया। ईश्वर का अजीब न्याय है ? उसी पार्टी का होगा। मैं नही फंसी। वाह राम अयोध्यावासी।

प्रश्न तो यह है कि उसके घर के उन बक्सों का क्या होगा ? पुलिस ने पूछकर उसका पता लिख लिया था, पर उसने गलत पता दिया था। तार देंगे, जवाब आएगा, तब तक वह हवा हो जाएगी।

उसने करनाल का टिकट लिया कि जल्दी से जल्दी पहुँचे और उन बक्सों को हटा दे। बक्से पकडे गए तो अनर्थ होगा। उसका सिख दामाद, बेटी और वह खुद (यहां तो बुढ़ापे का लिहाज किया) गिरफ्तार हो जाएगी। तुरन्त घर पहुंचना है। उसके पीछे लगी सिपाहिन ने टिकट का नंबर लेकर करनाल में तार दिलवा दिया।

गाड़ी देर से मिली और जब मिली तो उसे लगा गाड़ी बहुत धीरे चल रही है। मनहूसी और घबड़ाहट दूर करने के लिए उसने कई बार चाय पी। यद्यपि चाय बहुत खराब थी। फिर वह बैठे-बैठे सो गई।

हल्ला सुनकर वह उठी तो करनाल था, पर अभी रात बाकी थी। वह झपटकर झोला लेकर भागी, तो टिकट देखकर गेट पर उसे गिरफ्तार कर लिया गया। इसके माने यह हुए कि भंडाफोड़ हो चुका है कि उसने गलत पता लिखाया। पर सिर्फ इतने पर वह गिरफ्तार कैसे हो सकती है? वह अकड़ गई।

पुलिसवाला बोला—मुझे नहीं मालूम क्यों गिरफ्तारी हुई। जैसा हुक्म मिला, वैसा कर रहा हूं। माई तुम्हें मालूम है न, सन्त भिंडरांवाला मारे जा चुके? तुम पर यह शक होगा कि तुम उसके मेम्बर हो।

औरत बोली—मैं किसी वाला-वाली को नहीं जानती। मुझे किसी सन्त-वन्त से कुछ लेना-देना नहीं है।

थाने में गई तो वहां कोई मुकदमा नहीं था। थानेदार ने टेलीफोन आदि करके कहा—माई, तुम जा सकती हो। पर हमारा एक सिपाही तुम्हें घर पहुंचा आएगा। कर्फ्यू है, तुम जाओगी तो रास्ते में गिरफ्तार हो जाओगी। तुम्हारी भलाई इसी में है।

पुलिसवाले जो कुछ करते हैं जनता की भलाई के लिए करते हैं। अब रामदेई बड़े असमंजस में पड़ गई।

घर जाना माने उन बक्सों का सामने आना। अवश्य ही उन बक्सों में पिस्तौल, बम (पता नहीं कैसी शक्ल होती है) होंगे। तब तो मेरे बचने की कोई आशा नहीं रहेगी। वह किसी तरह सोच नहीं पाई कि क्या करे।

अंतिम चेष्टा के रूप में बोली—मैं चली जाऊंगी, मुझे कोई क्यों मारने लगा, मैंने किसका क्या बिगाड़ा है?

थानेदार ने कहा—माई, वह जमाना गया, तुम्हारे पास 22 रुपये हैं, इतने ही के लिए तुम्हारा गला काट लेंगे।

रामदेई ने निराश होकर कहा—बेटा, तुम रुपये रख लो। मैं फिर मंगा लूंगी।

पर थानेदार ने हंसकर रुपये छूने से इनकार किया, मानो वे कोई अपवित्र

वस्तु हों। बोला—थाना कोई बैंक थोडे ही है। अच्छा तो तुम ऐसा करो। सिपाही को अपने घर का पता दे दो, वह तुम्हारी बेटी को या जमाई को लिवा लाएगा।

अब रामदेई के पास कुछ कहने को नहीं रह गया था। वह निराश होकर सिपाही से बोली—चलो।

समझ गई कि अब छुटकारा नही। घर गए तो बम और पिस्तौलें पकडी जाएंगी। आगे वह सोच नही पाई। पता नही किस बुरी साइत मे उसने सिख युवको को छात्र समझकर अपना मकान किराए पर दिया था। वह दो-चार दिन मे समझ गई थी कि ये कुछ और है। उसकी बुद्धि के अनुसार ऐसे युवक या तो चोर, बदमाश, तस्कर होते हैं या भगतसिह के गिरोह के लोग। दो-चार दिन बाद वह उनकी बातचीत से समझ गई कि वे भगतसिह के साथी हैं, पर शराब पीते है देखकर मन मे कुछ दुविधा पैदा हो गई। क्या भगतसिह इस तरह शराब पीते थे?

रामदेई का पति शराब पीता था। इसलिए वह शराब की बू से परिचित थी। शराब पीकर उसका पति अक्सर उसकी पिटाई करता था, पर वह सब कुछ क्षमा करती रही क्योंकि हिन्दू स्त्री को ऐसा ही चाहिए। और भी एक कारण था, याद करते शर्म आती है, पर सच्ची बात है। शराब पति को मर्द बना देती थी, बहुत सख्त मर्द। उसके सारे शरीर में आग लगा देता था अपनी सख्त दुलार से। इसलिए भगतसिह शराब पीता हो या न पीता हो, इन युवको का शराब पीना उसे बहुत नही अखरा। यह मर्दो का स्वभाव है। उसके मर्द ने उसे शराब पिलाना चाहा था, पर उसने नही पी थी। अब औरतें शराब पीती हैं, ऐसा सुना है।

एक दिन उसने युवकों को शराब पीते देखकर कहा था, जैसा कि बडे-बूढ़ो को कहना चाहिए—बेटे, तुम लोग शराब क्यों पीते हो?

इस पर युवकों ने कहा था—माई, तूं भीतर जाकर सो जा, शराब बहुत बुरी चीज है, मां-बहन का पता नही लगता।···हा-हा-हा-हा···

इस पर उसने अपने कमरे का दरवाजा बन्द कर लिया था, क्योंकि पता नही ये क्या करते। भीतर से उसे सब की हंसी हा-हा-हा-हा सुनाई पड़ रही थी।

यह सुना कि इंदर डांटते हुए कह रहा है अपने साथियों से—तुम्हें माई से ऐसा नही कहना चाहिए था। हम लोग···कोई गुंडे-बदमाश नही। ऐसी बात नही करते।

हा-हा-हा-हा में आगे की बात सुनाई नहीं पडी थी। इंदर की यह डांट उसे अच्छी लगी थी, पर इससे उसकी दुविधा बढ़ गई थी कि ये कौन लोग हैं कि कभी अच्छे-भले शरीफ लोग लगते हैं, कभी लम्पट-लुंगाड़े।

रामदेई ने देखा सड़कें सूनी हैं, न तो कोई सवारी है, न कोई पैदल। बीच-बीच मे सैनिक दिखाई पड़ रहे थे, जो उसे संदेह की दृष्टि से देख रहे थे। वह अकेली आती, तो जरूर गिरफ्तार कर ली जाती। तो वह थानेदार सच कह रहा था।

पर वे बच्चे?

उनके कारण वह कुछ सोच नही पा रही थी। कहां जाए? घर जाना माने अपने गले में फांसी लगाना था।

औरत ने साथ के सिपाही से पूछा—सवेरा हो चुका, फिर भी यह सन्नाटा क्यों है? क्या कोई झगड़ा हो गया?

सिपाही भुन्नाकर बोला—माई, तुम नही समझोगी।

औरत को यह बात बुरी लगी। बोली—मैं क्यों नही समझूंगी? मेरे पिताजी जलियांवाला बाग की उस सभा में थे, जिसमे गोली चली थी, और कई हजार आदमी मारे गए थे। पिताजी पेड पर थे, इसलिए उन पर अंग्रेजो का ध्यान नही गया। वह भगतसिंह के दर्शन कर चुके थे। उनके पैर से छुआ फूल बहुत दिनो तक भाइयों के पास था। अब भी होगा।

सिपाही पर इन बातों का कुछ प्रभाव हुआ—माई, तू समझ ले कि भगतसिंह देश को जोड़ना चाहते थे, ये उसे तोड़ना चाहते हैं।

—ये कौन?

—कुछ गुमराह लोग, जिनके लीडर थे संत भिंडरांवाला, सात सौ चेलों के साथ इंदिरा के हाथ मारे गए।

औरत क्षण-भर के लिए अपनी मुसीबत वाली स्थिति भूल गई। बोली—क्या इंदिरा खुद आई थी?

झिड़ककर जीभ काटते हुए सिपाही बोला—इंदिरा खुद क्यों आएगी? उसकी फौज आई थी। दो घंटे में संत के कच्चे-बच्चे सब खालिस्तान पहुंच गए।

—खालिस्तान क्या?

सिपाही रामरतन को स्वयं कुछ विशेष पता नहीं था। बोला—पाकिस्तान का भाई खालिस्तान। तू नहीं समझेगी।—फिर वह रुककर बोला—तेरी अक्ल मारी गई है क्या? इतनी देर चलकर हम लोग फिर स्टेशन पहुंच गए।

रामदेई ने देखा कि सचमुच वे जहां से रवाना हुए थे, गलियों में घूमकर वहीं पहुंच गए।

महिला को स्वयं बड़ा आश्चर्य हुआ। असल में उन बक्सों के कारण उसका मन भटक गया था कि घर जाना नहीं चाहिए।

शरमाकर बोली—अरे मुझे भी ताज्जुब है।

इसके बाद वह ठीक से चलने लगी। निश्चय कर लिया, अपने घर नहीं जाएगी, वह बेटी के घर जाएगी।

इस सिपाही से पाला तो छूटे। फिर बेटी से सलाह की जाएगी कि बक्सों का क्या होगा?

जल्दी ही वह बेटी के घर पहुंच गई। सिपाही से बोली—मैं यहीं रहती हूं। मेरी बेटी मेरे साथ रहती है। दामाद भी।

सिपाही संदेह के साथ बोला—यहां तो कोई नहीं रहता। सन्नाटा है।

स्त्री ने घंटी बजाई, तो बेटी आंखें मलते हुए बाहर आ गई। सिपाही कुछ कह पाए उसके पहले ही औरत धड़ाके के साथ दरवाजा बंद करके सिपाही को दुतकार भरी दृष्टि से देखती हुई बेटी के साथ भीतर चली गई।

फिर उसने संक्षेप में दो दिन दो रात की सारी कहानी कह सुनाई। अंत में वह बोली—उन बक्सों के कारण मैं यहां आई कि पुलिस मेरा घर न देख पाए।

बेटी एकदम से खड़ी हो गई, बोली—कौन से बक्स?

—मेरे कमरे में दो काले बक्स थे, जो बहुत भारी थे। उनमें मेरे ख्याल से हथियार थे।

—तुमने फिर उन्हे क्यों रखा था ? मैं कल सुबह वहां घर गई तो देखा ताला पड़ा है। कर्फ्यू की छुट्टी का वक्त खत्म हो रहा था। ताला तोड़कर हम भीतर घुसे। तुम्हारे दामाद ने बक्स देखे तो वह समझ गए कि कुछ दाल में काला है। कर्फ्यू खुला तो हम दोनों बक्स यहां तांगे पर ले आए।

रामदेई ने छाती पीट ली। बोली—यह तुमने क्या किया ? हम लोग सब मारे जाएंगे। अभी वह सिपाही तलाशी पार्टी लेकर आएगा। सारी चाल उलटी पड गई। मुझे क्या मालूम था कि तुम ऐसा करोगी, नही तो मै घर जाती—कहकर वह रोने लगी।

—मां, पूरी बात सुन तो लो।

पर औरत ने रोना जारी रखा मानो कोई मर गया था।

दस

रामदेई के यहा के जो किरायेदार नौजवान संत भिंडरांवाला आदि के मारे जाने की खबर से उत्तेजित होकर अमृतसर की ओर रवाना हुए थे, उनमे से कई रास्ते मे पकडे गए और उनको जेल भेज दिया गया। बाकी लोग रेंग-रागकर अपने उन गांवों में चले गए, जहां से वे आए थे।

जब स्थिति मे कुछ ठंडक पड़ गई, तो उनमे से एक बन्तासिंह सीधे करनाल पहुंचकर रामदेई के घर में आहट लेते हुए पहुंचा। उसने देखा जिन दो कमरों मे वह अपने साथियो के साथ क्रांति करने के लिए टिका था, उनमे एक हिंदू परिवार बस चुका है। उसे इस बात पर बहुत गुस्सा आया कि अभी तो किराया खत्म नही हुआ और दुष्ट औरत ने दूसरों को यह कमरा कैसे दे दिया ? यहां तो पेशगी तीन महीने का किराया दे चुके हैं। उसे इसमें सरकारी षड्यंत्र की बू दिखाई पड़ी।

उस समय मकान-मालकिन के कमरे मे ताला लटक रहा था।

बन्तासिंह को कमरों का गम उतना नही था, जितना बक्सों का था। बक्से कहा गए ? उन बक्सों में बहुत सारी बंदूकें, कारतूस, पिस्तौलें, छुरे

और रुपये थे (सब लोग केवल दो-दो हजार ले गए थे)।

उस समय केवल उस हिंदू परिवार की दो स्त्रियां थी। सास-बहू लग रही थी। शायद भीतर एक बच्चा था जिसकी बोली सुनाई पड़ी थी।

उसने सास लगने वाली अधेड़ स्त्री से पूछा—माई, रामदेई जी कहा गई है?

अधेड़ स्त्री ने किरायेदार-सुलभ अरुचि के साथ कहा—वह बताकर थोड़े ही जाती है। वह दिन-भर मारी-मारी फिरती रहती है।

कुछ दबते हुए वन्तासिंह ने कहा—पहले तो वह घर मे ही रहती थी। कभी मंदिर गई तो गई, नही तो घर में बैठकर कांखती रहती थी।

अधेड़ स्त्री के पीछे युवती बहू आकर खड़ी हो गई थी। वह बोली—उसके दामाद के पास मोटर है। वह सवेरे मोटर भेज देता है। वह दिन-भर बेटी के पास रहती है। वही खाती-पीती है। यहां तो चूल्हा नही जलता। सवेरे चाय हम लोगों के मत्थे पीती है।

मोटर सुनकर वन्ता का माथा ठनका। उन बक्सों मे दो बैंकों की लूट के कम-से-कम दो लाख रुपये थे। वह सन्न से रह गया। अधेड़ स्त्री को बहू का इस प्रकार एक अनजान युवक से, विशेषकर सिख युवक से खुलकर बात करना पसंद नही था। इसी हफ्ते दो हफ्ते के बीच यह भावना फैल गई थी कि सिख भी मुसलमानो की तरह है, वे पाकिस्तान ले चुके, ये खालिस्तान मांग रहे हैं। अधेड़ स्त्री बोली—तुम कौन हो? क्या तुम उनके दामाद के कोई लगते हो?

वन्तासिंह झिझका। क्या बोले? यह क्यो पूछ रही है। सचाई निकल पड़ी। बोला—माई, मैं यहां किराएदार था।

—ओह, अधेड़ औरत बोली—तो तुम किसी कालेज मे पढते हो? सुना है इन कमरो में कुछ सिख स्टुडेंट (छात्र) थे। क्या तुम छात्र हो?

वह युवक टटोलते हुए बोला—मैं आपको क्या कहूं? मैं छात्र नही हूं।—कहकर उसने अनायास ही कह दिया—हम लोग शायरी करते थे।

अधेड़ स्त्री को बड़ा आश्चर्य हुआ। उसका तजुर्बा था कि शायर आवारा होते हैं, उनके शेर सुन लो, पर घर मे घुसने न दो। फिर भी नर्मी से बोली—मेरा बेटा भी कभी शायर था, पर अब कामकाज मे लग

कर दूकान पर बैठता है।

बहू एकाएक पीछे से बोल पड़ी—डायरी और कारतूस में क्या संबंध है? हम लोग जब इस मकान में आए, तो एक अलमारी में पांच कारतूस मिले।

बन्तासिंह को पता नहीं था कि अपने को शायर बताने से यह झंझट उठ खड़ा होगा। वह पूछ बैठा—आपने उन कारतूसों का क्या किया?

—हमने मकान मालकिन को दे दिया।

—उसने उनका क्या किया?

अब अधेड़ औरत ने कहा—उसने क्या किया पता नहीं, पर उसने हमसे यह कहा कि हम किसी से यह न बताएं, नहीं तो पुलिस हमारे पीछे पड़ जाएगी। क्या कारतूस तुम लोगों के थे?

—हां हमारे थे। एक साथी के पास लाइसेन्सी बंदूक थी।

खैरियत यह रही कि स्त्रियां यह नहीं जानती थीं कि बंदूक के कारतूस और होते हैं, पिस्तौल के और। युवती बोली—आप उनसे अपने कारतूस मांग लें।

युवक आश्वस्त होकर बोला—पहले वह मिले तो सही। आप लोग तो बताती हैं, वह रात को आएगी—घड़ी देखकर बोला—अभी तो दो बजे हैं। और वह आठ बजे आएगी।

फिर बन्तासिंह ने सोचा क्यों न पूछ लूं, इन्होंने बक्से देखे कि नहीं। बोला—आपने इन कमरों में दो बड़े काले बक्से देखे होंगे।

—नहीं, कोई काला बक्सा नहीं था। हां चमड़े के दो नए सूटकेस देखे, वे जिनमें पहिये लगे होते हैं।

—युवक ने कहा—ओह!

उसका संकल्प दृढ़ हो गया। वह यह कहकर निकल गया—मैं दो-चार दिन में आऊंगा, आज जल्दी में हूं।

अधेड़ स्त्री ने पूछा—रामदेई देवी को क्या नाम बताऊं?

—बस इतना कह देना कि पुराना किराएदार आया था।

कहकर वह फुर्ती से निकल गया। बाहर जाकर वह एक पार्क में बैठा। आद्योपान्त सारी बातों का मन्थन करने लगा। खालिस्तान क्रांति

हो नहीं पाई। जिस दिन इंदिरा ने हरमंदिर पर चढ़ाई की, उस दिन भी यदि पाकिस्तान और चीन हमला कर देते, जैसा कि भिंडरांवाले ने और क्रांति के स्थानीय नेता इंदरसिंह ने बतलाया था, बार-बार बतलाया था, होगा, वैसा नहीं हुआ। इसलिए वह उम्मीद तो गई। पता नहीं इंदर उस दिन कहां जा मरा था, कहीं अमृतसर न गया हो। संभव है मारा गया हो। या अजमेर या जोधपुर जेल पहुंचा दिया गया हो। कुछ भी हो क्रांति तो रह गई।

यह तो पक्की बात है कि बुढ़िया ने बक्स खोले और उसी धन से मोटर और ऐश के तमाम सामान खरीदे। उन बक्सों में उन्नीस पिस्तौल, दो मुड़ी हुई विन्चेस्टर राइफल, पचासेक छुरे और अपने हिसाब से दो लाख रुपये थे। बैंक से डेढ़ लाख लूट लाए थे। एक लाख और होंगे। पर कुछ खर्च हो गया था। कुछ हम लोग जाते वक्त ले गए। पर ज्यादा से ज्यादा बीस हजार खर्च हुए। बाकी सब वहीं थे। कुछ डालर, पौंड, मार्क भी थे।

युवक स्वयं अपने पांच साथियों को दो-दो हजार दे चुका था। खुद भी दो ही हजार ले रहा है यह बताकर उसने पांच हजार ले लिया था हाथों की सफाई से। बहरहाल कम-से-कम दो लाख रुपये उन बक्सों में थे। डालर थे दस हजार के लगभग।

लालची बुढ़िया ने सारा पैसा ले लिया, तभी न इसके पास मोटर और पहियेवाले सूटकेस और जाने क्या-क्या हो गया। इसने पंथ के साथ धोखा किया। इसने खालिस्तान के विरुद्ध युद्ध-घोषणा की। ऐसे लोगों को जीने का हक नहीं। चाहे उसका दामाद सिख हो। सिख होते हुए भी वह हिन्दू सास या लालच के बहकावे में आ गया।

वह उठकर (क्योंकि सैनिक शासन के कारण पार्क में बैठना खतरनाक था) एक रेस्टोरेन्ट में गया और वहां खूब डटकर खाना खाया। फिर उसने होटलवाले की सहायता (दुगुना दाम) में चोरी से कोला के अन्दर मिलाकर शराब पी। बुरा हो कांग्रेस का कि रेस्टोरेन्टों में शराब पीना मना है। अपने खालिस्तान में शराब की नदियां बहेंगी। क्यों न बहें? और तम्बाकू-सिगरेट बन्द। जो सिगरेट पिएगा, उसे फांसी होगी।

जब संध्या हो गई, तो वह रामदेई के मकान के अंदर घुसकर बैठ गया। वह ऐसी जगह था जहां उसे एकाएक कोई देख नहीं सकता था। खैरियत यह है कि आगन में कोई लाइट नहीं थी। बुढ़िया के सूमपने के कारण। एक-एक पैसे को दात से पकड़ती है। ह-रा-म-ज़ा-दी।

वह बैठे-बैठे सो गया।

जब वर्तमान किराएदार रामकिशन दूकान बंद करके आता था, तो वह रास्ते में शराब पीकर आता था बदबू फैलाकर। बदबू घर में पहले पहुचती थी और पीछे-पीछे लड़खड़ाता आता था रामकिशन। बहू को पता लगता था बदबू से कि अब पतिदेव की तशरीफ आ रही है। सास तब तक सो जाती थी। कहती थी भजन कर रही हूं, पर पहले बैठे (जिसे आध्यात्मिक भाषा में समाधि कहने की प्रथा है) फिर बकायदा लेट जाती थी।

समय से पहले शराब की बदबू पाकर बहू श्यामा चौकन्नी हो गई। उसने बत्ती में लाकर घड़ी देखी आठ बज ही रहे थे। सास बगल के कमरे में जाकर दरवाजा बंद कर समाधि लगा चुकी थी। श्यामा सावधानी से बाहर आगन में निकली। बदबू बाहर तेज थी। पति महोदय अभी नहीं आए थे। फिर बदबू कैसी? वह सूंघ-सांघकर इस नतीजे पर पहुंची कि यह भ्रम है। पर अजीब भ्रम है। वह भीतर चली गई। बच्चे की मसहरी और ठीक कर दी। दादी उसे सुलाकर गई थी। यह दादी का नित्य कार्य था जिससे दादी कभी चूकती नहीं थी।

थोड़ी देर में मोटर आई। रामदेई उसमें से निकली रोज की तरह। फिर मोटर चली गई। रामदेई ताला खोलकर भीतर घुसने ही वाली थी कि श्यामा ने देखा कोई उसके पीछे है। चेहरा दिखाई नहीं पड़ा। दोनों भीतर घुस गए एक के बाद एक, फिर दरवाजा धड़ाके के साथ बंद हो गया। एक चीख उठकर ही विलीन हो गई। शायद भ्रम था।

श्यामा ने सब कुछ देखा, सुना। उसे अजीब लगा। तो क्या मकान मालकिन किसी प्रेमी को ले आई है। अजीब बात है। पैंतालीस की तो होगी। समझ में नहीं आया।

शराब की बदबू उसी तरह थी। क्या सारा ही भ्रम था? भ्रम पर

भ्रम हो रहे थे। क्या बात है?

लगा रामदेई के कमरे में कोई बातचीत हो रही है। कौतूहलवश श्यामा रामदेई के दरवाजे के सामने जाकर खड़ी हो गई और उसने धीरे से, बहुत धीरे बाहर से कुंडी चढा दी। महज इसलिए कि एकाएक कोई बाहर न निकले और उसे चोरी से संवाद सुनते हुए पकड़ न ले।

आवाज़ वही सवेरे वाले किराएदार की थी, जो कह गया था दो-चार दिन में आएगा।

भूतपूर्व किरायेदार उस समय छुरा तानकर कह रहा था—चिल्लाई कि मारी गई।

उधर से एक अत्यन्त छोटी सिसकी आई, जो लपलपाकर ही बुझ गई।

—बोल हमारे बक्से किधर गए?

—इदर ले गया।

—झूठ बिलकुल झूठ। तेरे पास मोटर कहां से आई और यह पहिये वाला सफारी सूटकेस?

—यह सब दामाद का है। मेरा कुछ नहीं।

—झूठी। और तूने बाल काले कब कराए। पहले तो पहचान में नहीं आई।

औरत ने कुछ माफी मागने जैसे स्वर में कहा—बेटी ने कहा तो बाल रंग लिए।

बंतासिंह ने व्यंग्य के साथ कहा—पहले तो तुझे न बेटी पूछती थी न दामाद। अब एकाएक बड़ी कद्र हो रही है? यह सब उन्हीं बक्सों की बदौलत है। तू पंथ के रुपये डकार गई।

रुपये डकैती के थे, बात बिलकुल सच थी। दामाद ने बक्स तोड़कर बंदूकें आदि तस्करों को चौगुने दाम पर बेच दिया था, नकद रख लिया था। रामदेई के लौटने से पहले सब काम हो चुका था। बक्से भी गायब थे।

कुछ देर दोनों चुप रहे। श्यामा बाहर खड़ी सोच रही थी क्या करे। इतने में बंता बोला—देख रामदेई माई, सीधे से कहता हूं, तू एक लाख रख ले। मुझे एक लाख दे दे।

उधर से दबी सिसकी।

कुछ देर चुप्पी। फिर बतासिंह भर्राई हुई आवाज में बोला—तू बात नही मानेगी, तो मैं तुझ पर बलात्कार करूंगा, फिर तेरे घर में आग लगा कर तेरे दामाद और बेटी को मार डालूंगा।

रामदेई ने चीखने की चेष्टा की। पर बंता ने उसका मुंह बंद कर दिया। फिर उसने उसे नंगा कर दिया। श्यामा देख नही पा रही थी, पर सांसो और सिसकियों से अनुमान लगा रही थी कि कुछ भयंकर हो रहा है।

—बोल अब भी बोल—कहकर वह कमर से नंगा हो गया, बोला—बाल काले कराए हैं तो ले। तेरी बेटी नही है, नही तो पहले उसको सजा देता, पर तू ही सही। ले—

अबकी बार चीख नही रुक पाई। एक बार तो चीख आधे सैकंड के लिए उठी।

श्यामा से अब रहा नही गया। वह बहुत जोर से चिल्ला पड़ी। भीतर से बन्तासिंह दौड़ा कि भागे, पर दरवाजा बंद था। उसी समय बदबू फैलाकर पतिदेव भी आ गए, सास भी बाहर निकल आई, बच्चा जग गया। इसलिए श्यामा भागी। शराब पीए हुए होने के बावजूद पतिदेव समझ गए कि भीतर डाकू हैं। वह चिल्लाया मुहल्लेवाले जमा हो गए। हरेक के हाथ में कुछ न कुछ हथियार था।

एक राय यह हुई कि दरवाजा पुलिस या फौजी आकर खोलें। पर उधर से रामदेई चिल्ला रही थी—बचाओ-बचाओ।

तब मुल्ले के पहलवान युवक ने कहा—दो-चार को तो मैं ही सहेज लूगा—उसके हाथ मे एक मुगदर-सा था।

किसी को पता नही था कितने डाकू हैं।

दरवाजा खोला गया, तो सामने रामदेई नंगी खड़ी कपड़े खोज रही थी। बस नंगी औरत देखकर कायर भी बहादुर हो गए। जोश आ गया। बस बन्तासिंह पर, शेर जैसे बकरे पर टूटता है टूट पड़े और उसे बेहोश करके डाल दिया। कई यह समझकर कि डाकू (या बलात्कारी?) मर चुका है, समय रहते भाग गए। भीड़ में एक डाक्टर थे, उन्होंने कहा—

शायद ही बचे।

पतिदेव की सलाह पर श्यामा सामने नही आई। अतएव अंत तक यह पता नही लगा कि कुंडी किस प्रकार चढ़ गई। रामदेई ने न बलात्कार पर कुछ कहा न बक्सो पर। वह तो यही कहती रही कि यह डाका मारने आया था। पर पुलिस ने भांप लिया कि मामला कुछ गहरा है। बन्तासिंह जैसे-तैसे अस्पताल मे बच गया। उसकी एक आंख मारपीट से जाती रही थी। जब पुलिस वालों ने कहा—पूरी बात बताओ नही तो दूसरी आंख भी जाती रहेगी।

बन्ता ने फिर भी कुछ कहना अस्वीकार किया। वह बार-बार यह कहता रहा कि जिन लोगों ने हरमंदिर तोडा है, संत को मारा है, मैं उनकी मदद नही कर सकता।

बन्ता के अनुरोध पर एक बुजुर्ग सिख अध्यापक आए, जो उसके रिश्तेदार थे। उन्होंने अपनी सफेद डाढ़ी पर हाथ फेरते हुए कहा—काका तू गलत बात पर अड़ा है। मैंने तुझसे पहले भी कहा था खालिस्तान की मांग जाहिली है। इतिहास मे कई बार हमारे मंदिर तोडे गए। अब की बार तो तुम लोगो ने उसे बदमाशों का अड्डा बना दिया था।

हमारे छठे गुरु हरगोविन्द जी महाराज ने अकाल तख्त बनाया। उनके पिता गुरु अर्जुन देव को बादशाह जहांगीर ने बहुत सताया, यत्रणाएं दी। अंतिम बार उन्हे यंत्रणा दी जा रही थी तो अमावस्या के कारण गुरु जी ने कहा कि लाहौर के पास रावी मे स्नान करना चाहता हू। अपने पांच चेलो के साथ उन्हे नदी में स्नान करने की इजाजत दी गई। इनमें बुड्ढा बाबा भी थे। अर्जुन देव ने पांचों से कहा, मेरे बाद हरगोविंद को गुरु मान लो, फिर वह रावी की धारा मे नहाते समय अन्तर्धान हो गए।

गुरु हरगोविंद ने अकाल तख्त का निर्माण किया।

इस पर बन्ता ने कहा—इसके माने यह हुए कि जहांगीर बड़ा जालिम था कि उसने गुरु को अंतर्धान होने के लिए मजबूर किया।

बुजुर्ग सिख अध्यापक ने कहा—मुगल बादशाहों के साथ संघर्ष के माहौल मे पलकर ही सिख जंगजू बनने पर मजबूर हुए, पर यह नही

भूलना चाहिए कि जालिम बादशाहों के अलावा सूफी लोग भी थे, जिन्हें मुसलमानों ने सताया क्योंकि वे सर्वधर्म समन्वय की बात करते थे, क्योंकि यह वर्जित है। ऐसे ही एक सूफी मियां मीर ने हरमंदिर या स्वर्ण मंदिर की स्थापना की। *हरमंदिर अध्यात्म* के लिए और *अकाल तख्त न्याय* और प्रशासन के लिए बना। दोनों का आसपास रहना उचित समझा गया।

बन्ता ने कहा—संत भिंडरांवाला ने शायद इसी कारण कहा था— धर्म एक घोड़ा है, राजनीति उसका सवार है।

पर अध्यापक ने प्रतिवाद करते हुए कहा—इसी से तो सत्यानाश हो गया। धर्म को राजनीति से अलग रखना चाहिए। धर्म निजी मामला है, राजनीति सामूहिक। कमाल पाशा का भी यही कहना था कि मुसलमान सिर्फ मसजिद के अंदर मुसलमान है, उसके बाहर वह तुर्की नागरिक है।

यह सब सुनकर भी बन्ता अड़ियल टट्टू की तरह अड़ा रहा। तब अध्यापक ने गुस्से में कहा—तू उस बुढ़िया से बलात्कार करने जा रहा था, क्या यह तेरा धर्म है? शेखी मार रहा है? क्या गुरुओं का यही आदेश था?—कहकर बूढ़ा अध्यापक खड़ा हो गया।

इस पर बन्ता रो पड़ा, बोला—यह मेरी गलती थी। उसी का मैं प्रायश्चित्त करने जा रहा हूं। आप मुझे रास्ता बताइए।

अध्यापक बैठ गए, बोले, छोड़ो राजनीति की बात। तूने मुझे इतिहास पूछने के लिए बुलाया सो तू मेरे गांव का है इस करके आ गया। मैं यह नहीं मानता कि बलात्कार से किसी धर्म की कोई भलाई हो सकती है।

इस पर बन्तासिंह फिर आपे से बाहर हो गया, बोला—मैं यह मानता हूं कि मुझे हर गैर सिख स्त्री पर बलात्कार करने का अधिकार है। आपकी पढ़ाई ने आपको नामर्द बना दिया। नैतिक नियम आपसी व्यवहार के लिए है न कि पशुओं के लिए। जो सिख नहीं वह पशु है।

अध्यापक ने अबकी बार गुस्सा नहीं किया, हंसकर उठ खड़े हुए। एक कागज देते हुए बोले—तू पागल हो चुका है। तेरे लिए मैंने एक नोट टाइप कराया था। छोड़ जाता हूं, मन होय पढ़ना, नहीं तो फाड़कर फेंक

देना।'

कहकर वह लौट गए। बन्ता के मन में पहले तो यह इच्छा हुई कि कागज टुकड़े-टुकड़े कर फाड डाले, पर उसने नही फाडा। जब कोठरी में जाकर उसका दिमाग ठंडा हुआ, तो उसने उस नोट को पढ़ा। उसमें लिखा था—

"1634 में समर्थ गुरु रामदास, प्रसिद्ध महाराष्ट्री संत उत्तर भारत घूमते हुए गुरु हरगोविंद से मिले और उन्होंने गुरुजी को सशस्त्र देखकर आश्चर्य प्रकट किया। तब गुरुजी ने कहा—अस्त्र धर्म के शत्रुओ के लिए है। इस पर समर्थ गुरु रामदास ने कहा—यह मेरे मन भाता है।

अकालतख्त से जो पहला हुक्मनामा निकला था, उसमे शिष्यों से कहा गया था कि चढ़ाव के लिए भक्तजन घोडे और अस्त्र लाए। इसके बाद इतिहास चुप है। 1699 के 22 नवम्बर को नौवें गुरु तेग बहादुर जी हरमंदिर में आए पर पिरथीचन्द के खानदानवालों ने उन्हें घुसने नहीं दिया। इस पर गुरुजी दूर से प्रणाम कर चले गए। दसवें गुरु को तो अमृतसर भी जाने नही दिया गया, इस कारण वह अधिकतर समय आनन्दपुर साहब और पावटा साहिब में रहे और 1708 मे महाराष्ट्र के नान्देड़ मे परलोक सिधार गए। बंदा बहादुर के युग (1708-1716) में अकाल तख्त का कोई पता नही।

1721 में गुरु गोविंदसिंह की दूसरी पत्नी माता सुन्दरी ने भाई मानसिंह को अकाल तख्त पर नियुक्त किया। अकाल तख्त पर सिखों के जो सामूहिक जमघट हुए उन्हें सरबत खालसा कहा जाता रहा और गुरु ग्रंथ साहब के सामने जो निर्णय होते, उन्हे गुरुमत्ता कहते थे। गुरुमत्ता सबके लिए मान्य होता था।

मुसलमानो ने कई बार अकाल तख्त को गिरा दिया। 1748 मे अहमद शाह अब्दाली ने हमला किया और उसने अकाल तख्त को गिरा दिया, पर सरबत खालसा ने मंदिर और अकाल तख्त का पुनरुद्धार किया। जब 1753 में दिल्ली लूटकर अहमदशाह अब्दाली वापस जा रहा था तो सिखों ने उसकी लूट को लूट लिया। तब अकाल तख्त फिर गिराया गया और तालाब को मलबे से पाट दिया। 1760 में फिर

अब्दाली ने हमला किया और 30 हजार सिख मारे गए। फिर अकाल तख्त और हरमंदिर तोड़े गए और पवित्र सरोवर में गाय की हड्डी भर दी गई। 1762 में अब्दाली फिर आया, पर सिख जीत गए। अब्दाली पजाब छोड़कर भागा, मंदिरों को फिर से बनाया गया। 1764 में फिर अब्दाली आया, पर बिना लड़े लौट गया। 1767 में अब्दाली फिर आया, पर हरमंदिर के 30 रक्षकों को मारकर वह मंदिरों पर हमला न कर सका। अब की बार उसने मंदिरों की तरफ रुख नही किया। इतिहासकार कहते हैं अब्दाली सिखों के हाथ दसवें हमले में बुरी तरह पिटा। इसके कुछ महीने बाद अब्दाली शायद गम में मर गया। वह सिखों का पक्का दुश्मन था।

महाराजा रणजीतसिंह ने मंदिरों में कई मंजिलें जोड़ी और उनकी शोभा बढ़ाई। 1800 में अकाल तख्त की शक्ति बढ़ गई। फूलासिंह ने अकाल तख्त में होने वाली उन सब रस्मों को बंद कर दिया जो सिख धर्म से अलग थी। महाराजा रणजीतसिंह ने एक मुसलमानी से शादी की, जिसने सिख बनने से इनकार किया था। इस पर कहते हैं महाराजा को पेड़ से बांधकर 21 कोड़े लगाए गए। दूसरी बार महाराजा को इस कारण सजा हुई कि उन्होंने एक सुंदर चांदनी तोहफे में भेजी जिसे, वह दो दिन दरबार में लगा चुके थे। समझा गया कि इस तोहफे से अकाल तख्त का अपमान हुआ।

सरबत खालसा की अंतिम बैठक में भागे हुए होलकर का अनुरोध न मानकर लार्ड लेक को सहायता देने का निर्णय किया गया। इसके बाद महाराजा रणजीतसिंह के युग में उसकी कोई बैठक नही हुई।

बंतासिंह ने कई बार यह नोट पढ़ा और रोता रहा। पुनश्च करके इस नोट में लाल पेंसिल से अध्यापक ने जो बात लिखी थी, वह बड़ी भयंकर थी, जिससे पता चलता है कि अकाल-तख्त के बड़े पुरोहित कितने गिरे हुए थे। उन्होंने जलियानवाला में गोली चलाने वाले जल्लाद जनरल डायर को बुलाकर उसका सम्मान किया और पगड़ी, तलवार आदि भेंट की। अध्यापक ने लिखा था, सिख पुरोहित उतने ही गिरे हुए रहे जितने हिंदू, मुस्लिम या ईसाई पुरोहित। इन सबका लक्ष्य भोले-भाले लोगों को

उल्लू बनाकर अपना उल्लू सीधा करना था। बन्ता की समझ में कुछ नहीं आया कि सत्य क्या है, झूठ क्या है। इस नोट से यह पता लगता था कि हिंदू नही बल्कि मुसलमान सुलतानो ने सिखों को सताया। पाकिस्तान, खालिस्तान, ईसाइस्तान कुछ समझ में नही आया क्यों? सचमुच कुछ समझ मे नहीं आ रहा था।

फिर अपनी बात भी कुछ समझ में नही आ रही थी। उसने बैंक लूटने में भाग लिया। बड़ी बेरहमी से एक बैंक कर्मचारी को जान से मार दिया, क्योंकि वह उसे समझा रहा था। पर उसने उस कर्मचारी को इस कारण मार डाला कि कम-से-कम एक हिंदू और एक गवाह तो कम हुआ। पर क्या हुआ? उसने जब हरमंदिर पर चढ़ाई की बात सुनी और वह बलबल सहित अमृतसर की तरफ भागा, तो उसने अपने साथियों के साथ बेईमानी की। सब को दो-दो हजार दिए और खुद हेराफेरी करके पांच हजार रख लिए। लौटा इस इरादे से था कि दो लाख रुपये घर ले जाए। अब खालिस्तान की कोई आशा नहीं रही, तो अपना घर भर लिया जाए। एक हिंदू सूदखोर औरत के पास वह धन क्यों रहे? अपने पास धन रहेगा, तो फिर कभी आंदोलन चला तो काम आएगा। वह बदमाश औरत दे नही रही थी, तो उसे धमकाया कि बलात्कार करेंगे कि इतने में दरवाजा भड़भड़ाया और हल्ला मच गया। यदि वह बलात्कार करता तो कामरिपु के वश में होकर नही बल्कि क्रोध रिपु के वश मे करता। काम-तृप्ति के लिए घरवाली काफी है।

पता नहीं मुकदमा क्या है? अगर बलात्कार के प्रयास का है, तो बड़ी बड़ी फजीहत रहेगी। अपनी स्त्री को क्या कहेगा, गांव वालों को क्या कहेगा? इसी उधेड़-बुन में वह पड़ा रहा। कोई उससे बात नही करता था। पानी, खाना देने एक आदमी आता था, सफाई का दूसरा। अध्यापक के बाद कोई नहीं आया। घरवाली भी नही।

एक दिन सवेरे जेल कर्मचारी आए, तो देखा बंता मरा पड़ा था। उसने ब्लेड से हाथ की नस फाड़ दी थी। जेल कर्मचारी को उसके मरने की फिक्र नहीं थी, पर ब्लेड की चिंता हुई—कहां से आया? पहरेदार ने ब्लेड चोरी से जेब में रख लिया और सीटी बजा दी। जेलर, डाक्टर,

सिपाही दौड़ पड़े। जेल की घंटी बजने लगी घ-न-न-न-न-न।

ग्यारह

यद्यपि इंदरसिंह पहलगाम मे 214 नम्बर हट में (किराया प्रति-दिन 150 रुपये) बड़े आराम से रह रहा था, पर यह बात उसकी पत्नी से छिपी नही थी कि उसके मन के कुतबनुमा का कोटा कहीं और था। आशा उसे कभी शिकारगाह, कभी आड़ू, कभी चन्दनवाड़ी तक घोड़े पर ले जाती थी यह सोचकर कि उसका भटका हुआ मन पाइन के जंगलों मे लिड्डर के किनारे अटक जाए, पर वह इसमे सफल नही रही। इंदर अखबारों की ऐसे प्रतीक्षा करता था कि जैसे कवि लोग दिखाते हैं कि प्रेमिक माशूका का इंतजार करता है। जब अखबार पढ़ता था या रेडियो सुनता था, तो उसके चेहरे पर वे ही भाव होते थे, जो हड्डी चिचोड़ते समय कुत्ते के चेहरे पर होता है कि कोई भी, देवराज इंद्र भी पास आए, तो इंदर गुर्र-गुर्र करने लगता है जो करीब-करीब सुनाई पड़ता था।

आशा भी अखबार पढ़ती थी और रेडियो सुनती थी, विशेष कर इसलिए कि पति का मन किस ओर जा रहा है, क्या-क्या धक्के झेल रहा है, यह जाने। अब यह डर नही था कि फिर इंदर भागेगा क्योंकि सारे रास्ते बंद हो चुके थे।

खालिस्तान का भूत कुछ पागलों के अलावा बाकी सब के सिर से उतर चुका था। एकमात्र आशा थी डा० फारुक अब्दुल्ला से और मीर वायज फारुक से। मीर वायज का परिवार राजाओं के जमाने में राजाओं का चमचा था, पर था भीतर से मुस्लिम लीगी। वह स्वयं इस वक्त पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर में था जहां कश्मीरियों को कोई अधिकार नही था। पर वह भारत आता-जाता था। कोई उसे पकड़ता नही था।

फारुक अब्दुल्ला ने चुनाव जीतने के लिए मीर वायज से गठबंधन कर लिया था। अब डा० फारुक अब्दुल्ला की सभाओं में हिन्दुस्तान मुर्दाबाद, पाकिस्तान जिंदाबाद के नारे लगते थे, पाकिस्तानी झंडे फहराए जाते थे,

नेहरू, डार्विन, मार्क्स की किताबें जलाई जाती थीं और सारे जहां से अच्छा माने वालों पर हमले होते थे। डा० फारुक अब्दुल्ला यूरोप में रह चुका था, वह समझता तो होगा कि जो यह चाह रहा है, वह यह नहीं है, पर लोकतंत्र के वोटीय तकाजों ने (हाय लोकतंत्र) उसे यह मजबूर किया था कि वह मीर वायज का साथ दे। साथ ही कहीं दिल्ली के क्रोध का वज्र उस पर न गिरे। वह बीच-बीच में यह भी कहता रहता था कि हम भारत के अभिन्न अंग हैं, हमारा यह संकल्प अचल-अटल है। डाक्टर के विख्यात पिदर बुजुर्गवार (पूज्य पिता) भी यह जानते थे और वह भी जानता था कि कश्मीर पाकिस्तान में गया कि पाकिस्तानी नेताओं का सबसे पहला काम यह होगा, अब्दुल्ला परिवार को उसी प्रकार जड़मूल से नष्ट करके उसकी जड़ों में जहर डाल देना जैसे विदेशी एजेंटों ने मुजीब परिवार के साथ किया था कि दुधमुंहे बच्चों से लेकर बड़े बुजुर्गों तक सबका नादिरशाही ढंग से कत्लेआम हुआ। दूसरे शब्दों में कहा जाए तो डा० अब्दुल्ला एक हद तक जानबूझ कर वोटों की मजबूरी से दूसरी तरफ अपनी सुबुद्धि के खिलाफ ऐसे सांपों को पाल रहा था, जो किसी समय मौका पाकर उसे डस सकते थे।

जब विदेश से प्रोत्साहन, पैसे, प्रशिक्षण पाकर खालिस्तान का मोर्चा खुल गया, तो डा० अब्दुल्ला ने उस बहती गंगा में हाथ धोना शुरू किया। कश्मीर के इलाकों की कुछ जेबों में सिखों के कुछ वोट थे, क्यों न उन्हें पा लिया जाए? खालिस्तानी भी चाहते थे कि कुछ दोस्त हों, अतएव कश्मीर के अंदर खालिस्तानियों के शिविर लगे, जिनमें सारे इतिहास के साथ दिन-दहाड़े सूर्य की बत्ती गुल कर, बुद्धि के साथ बलात्कार कर यह बताया जाता था कि सिखों और मुसलमानों की दोस्ती हमेशा से है। एक वक्ता ने जोश में आकर (होश खोकर) यह कहा कि यह जो दिखाया जाता है मुस्लिम सम्राटों और सुलतानों ने सिख गुरुओं को सताया, लड़कों को दीवार में चुनवा दिया, यह हिंदू इतिहासकारों की जालसाजी और हराम-खोरी है, तो इस कथन का वाहे गुरु, खालिस्तान जिंदाबाद, पाकिस्तान जिंदाबाद आदि गगनभेदी नारों से स्वागत हुआ।

घलुए में इकबाल की सर्वइस्लामवादी ग़ज़ल गाई जाती रही—

चीनी अरब हमारा हिंदोस्तां हमारा
मुस्लिम हैं हमवतन हैं सारा जहां हमारा।
तौहीद की अमानत सीनों में है हमारा,
आसां नहीं है मिटना नामोनिशां हमारा।
तेगों के साए में हम पल कर जवां हुए हैं
खंजर हलाल का है कौमी निशां हमारा।

इत्यादि

जब जोश ज्यादा बढ़ा तो एक सरदार जी ने (बारह बज चुके थे) यह कहा कि असली गजल इकबाल की यही है, हिन्दुओं की जालसाजी से गजल का रूप यह हो गया—

सारे जहां से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा,
हम बुलबुलें हैं उसकी वह गुलिस्तां हमारा।

वगैरह

इंदर ऐसी सभाओं में जा चुका था। बोल भी चुका था। पर हरमंदिर पर हमले के बाद श्रीनगर में प्रदर्शनकारियों पर जब से गोलियां चली थी, तब से ऐसी सभाओं में भाटा आया था। तो क्या डा० अब्दुल्ला गिरगिट था, रंग बदल गया? कभी लगता हां, कभी लगता नहीं।

उधर शेरे कश्मीर के परिवार में कौरव-पांडव युद्ध, महाभारत मचा हुआ था। शेरे कश्मीर की बेटी खालिदा और उसके पति जी० एम० शाह समझते थे कि शेरे कश्मीर की गद्दी उनकी बपौती है। डा० अब्दुल्ला तो इंग्लैंड में बस गया था, मुहम्मद अली जिन्ना की तरह। वह कहां से कूद पड़ा लालच में आकर।

साले-बहनोई में तनातनी चल रही थी। गाडरबल के पास बीहामा गांव में 1984 के 24 अप्रैल को एक सभा में शाह के थैले के चट्टे-बट्टे एक सभा कर रहे थे। तीन बजे शाह और खालिदा वहां पहुंची, तो रास्ता रुका पड़ा था। वहां खड़े 50 आदमी लाठियां लेकर शाह-विरोधी नारे दे रहे थे। पुलिसवाले थे, पर वे भी शाह और खालिदा के खिलाफ नारे लगा रहे थे। शाह की कार रुकी तो शाह ने पुलिसवालों से शिकायत की। पर पुलिसवाले बहरे बन गए। शाह ने अपने पीछे आए भक्तों से कहा

रास्ते के रोड़े हटा दो। इस पर डाक्टर अब्दुल्ला के साथी आगे आए। ईंटें चलीं। एक पत्थर खालिदा को लगा। डा० अब्दुल्ला के एक पिछलग्गू अमीन ने आकर शाह और खालिदा को गालियां दीं। पुलिसवाले खड़े-खड़े नाटक देखते रहे। उनकी हालत कौरव सेना को देखकर अर्जुन की सी रही होगी। पर वहां कोई कृष्ण नहीं था।

शाह एक सिपाही से लाठी छीनकर भीड़ पर लपके। तब फारुक के लगुए-भगुए भाग खड़े हुए। भीतर की भीड़ ने शाह और खालिदा का स्वागत किया। वहां खालिदा बोली—बहुत हो चुका। अब हम फारुक के कुशासन को अधिक दिन नहीं सह सकते। यह हमारी बर्दाश्त के बाहर है।

श्रीगणेश या बिस्मिल्ला यहां से हुआ।

लड़ाई गद्दी की थी, जो महाभारत के जमाने से होती आई है। जीतने वाले हमेशा अपने पक्ष को धर्मपक्ष कहते हैं। उनको समर्थन करने वाले ऋषि अध्यापक मिल जाते हैं।

शेरे कश्मीर के पांच बच्चे थे। खालिदा सब से बड़ी थी। वह पर्दे में रहती थी, पर गद्दी की लड़ाई में अन्तःपुर छोड़कर रिवाजें तोड़कर निकल पड़ी। खालिदा ने कहा—शेरे कश्मीर का रास्ता और था। वह नेहरू परिवार के दोस्त थे। खालिदा ने कहा—शेरे कश्मीर धर्मनिरपेक्ष थे, फारुख सम्प्रदायवादियों से आंखें लड़ा रहा है। उसका दिल पाकिस्तानी है।

यों शाह का रेकार्ड इतना कुछ उज्ज्वल नहीं था। वह प्लेबिसाइट मोर्चा के साथ था। पर कौन देखता है? स्वयं शेरे कश्मीर की संस्था का नाम पहले मुस्लिम कान्फ्रेंस-था, जवाहरलाल नेहरू ने उसे बदलवाकर राष्ट्रीय कान्फ्रेंस कराया था। यह वह पोल है, जिसे सब नहीं जानते।

भीतर-भीतर खिचड़ी पकती रही। हरमंदिर से खालिस्तानियों (उग्रपन्थियों सहित) को निकालने के बाद कश्मीर पर आंखें गईं। एकाएक इंदर ने रेडियो पर सुना, बाद में पढ़ा कि कश्मीर में डा० अब्दुल्ला को हटा दिया गया क्योंकि विधानसभा में उसका बहुमत जाता रहा और उसके बहनोई शाह को शपथ दिलाई गई क्योंकि उसके साथ बहुमत है। शाह को एक महीने का समय दिया गया कि वह विधान सभा में अपना बहुमत प्रदर्शित और प्रमाणित करे। काम कोई मुश्किल नहीं

था। आयाराम गयाराम का देश है। कश्मीर आखिर भारत का ही प्रान्त है।

इंदर ने जब यह खबर सुनी, तो उसे धक्का लगा। कुछ ऐसा होने वाला है, उसकी पत्नी आशा यह अनुमान लगा रही थी। साले-बहनोई की लड़ाई का दिल्ली ने फायदा उठाया, नहीं तो फारुख को निकाले बिना हर-मंदिर से जो सिलसिला शुरू हुआ था, वह पूरा न होता था। फिर सींका टूटा और दिल्ली की बिल्ली के हाथ मक्खन की हंडिया लगी।

इंदर के लिए यह घटना तो वज्रपात के समान थी। शाह के आते ही पाकिस्तान के भक्त, एजेंट भाग खड़े हुए, क्योंकि कश्मीर में भी मापिंग अप आपरेशन चालू हुआ। कुछ पाकिस्तान निकल गए, कुछ चीन।

आशा समझ गई कि संकट का समय है। जब शाह की खबर पक्की हो गई, तो इंदर ने वाकिटाकी से माइक को पाने की चेष्टा की। पर वह नहीं मिला तो क्या वह चला गया? उसी प्रकार जैसे छेद वाले जहाज को चूहे भी छोड़ जाते हैं।

इंदर को फिर भी बहुत अच्छा लगा कि भारत के सारे विरोधी दलों ने विशेषकर दोनों कम्युनिस्ट पार्टियों ने फारुख सरकार को उलट देने की निन्दा की। यहां तक कि वे श्रीनगर में सभा करने पहुंचे। फलकर इंदर और आशा भी श्रीनगर पहुंच गए पूर्व सन्ध्या में, तमाशा देखने के लिए। उधर से ब्रिगेडियर भी पहुंच गए। वह कोकरनाग के आगे वं हिं नदी में ट्राउट पकड़ रहे थे। वेटी तो ट्राउट बसवालों के हाथ भेजते रहते थे।

रात को बड़े जोर का डिनर हुआ। ब्रिगेडियर कुछ ताजे ट्राउट ले आए थे। इंदर और आशा दोनों ट्राउट के शौकीन थे। नारायन ने कई तरह की डिशें (तरकारियां) बनाई थीं। एक बड़े भारी गुलदस्ते के इर्द-गिर्द खाना परोसा गया। ऐसा गुलदस्ता कश्मीर में ही संभव था।

इंदर काफी टूटा लग रहा था। ब्रिगेडियर ने मौका पाकर वेटी से पूछा, तो उसने पूरी स्थिति बताई।

इंदर स्थिति के चाक्षुष परिचय के लिए डल झील के किनारे टहलने

गया था। आशा जाना चाहती थी, पर उसे नारायण के साथ जुटना था, किचन में। ब्रिगेडियर स्वयं देख चुके थे कि इंदर बुझा-बुझा लग रहा था। उसके जाते ही बाप-बेटी में मंत्रणा शुरू हुई। ब्रिगेडियर बोले—देखो बेटी मैं पहले भी कह चुका था खालिस्तान का कोई भौगोलिक आधार नहीं है। कुल डेढ़ जिले हैं, जिनमें हमारी बहुसंख्या है। डरा-धमकाकर हिन्दुओं को भगाया जाने का जो कार्यक्रम था, वह भिंडरावाला ऐसे जाहिल और खुशवन्त सिंह ऐसे पंडित-मूर्खों के विकृति दिमागों की उपज था। अब हिंदू यह करें तो सारे भारत से एक दिन में हमें भगा सकते है। तब हम कहां जाएंगे? चौहान तो लंदन में डंड पेल रहा है और प्रापर्टी (सम्पत्ति) खरीद रहा है। हम कहां जाएंगे? तिब्बत?

आशा ने दुखी लहजे में कहा—मैं सब समझती हूं, पर पापा, मैं उन्हें ठेस पहुंचाना नहीं चाहती।

ब्रिगेडियर ने कहा— कल जो सभा होगी, मै नहीं मानता उससे कुछ हासिल होगा। जिन पार्टियों के नेता कल भाषण देंगे, उन्हें न खालिस्तान से कुछ लेना-देना है, न कश्मीर से। वे देख रहे है कि कांग्रेस मुंह बाकर उन्हें निगलने के लिए आ रही है। यदि ये कांग्रेस का समर्थन करें, तो जनता कहेगी, फिर तुम किस मर्ज की दवा हो। इस कारण वे अपने अस्तित्व को अलग दिखाने के लिए पागलों की तरह उछल-कूद और पैंजामाफाड़ पैंतरेबाजी कर रहे हैं। इनका दीवाला तभी पिट गया, जब इन्होंने हरमंदिर पर चढ़ाई को सही बताया, क्योंकि इससे साफ जाहिर हो गया कि कम्युनिस्ट और दूसरी पार्टियों ने अपनी विचारधारा का कुछ भी प्रचार नहीं किया। चढाई का समर्थन तो वे आवेश में कर गए, पर तुरन्त ही समझ गए कि यह तो लिखकर अपना दिवालियापन जगजाहिर करना रहा, बस तब से ये तरह-तरह के चोंचले छेड रहे हैं। मैं भी मछली पकड़ते, चिड़ियों का पीछा करते थक गया। सोचा, चलें जब तमाशा पड़ोस श्रीनगर में ही हो रहा है, तो देखें। यों मुझे राजनीति में कोई दिलचस्पी नहीं। घटिया लोग ही इसमें दिलचस्पी ले सकते हैं।

इंदर जब लौटा, तो उसकी मुर्दनी कुछ दूर हो गई थी, बल्कि वह कुछ उत्साहित था। बोला—मालूम होता है कल सारी घाटी यही श्रीनगर

शहर में उमडी होगी। बड़ा भारी शामियाना लगा है। हजारों बल्व लगे हैं। नम्बुदिरिपाद, राजेश्वर राव और जाने कौन-कौन आ चुके हैं। ताज्जुब है खुशवन्तसिंह नहीं आ रहा है। एक बार भूंक कर चुप क्यों हो गया?

ब्रिगेडियर ने कहा—खुशवन्तसिंह की हालत यह है कि न तीतर न बटेर। वह अभी पार्टी के ख्याल से कांग्रेस में है। समझ चुका होगा कि तेल की धार किधर है।

इंदर ने एकाएक पूछ लिया—आपकी समझ से सिचुएशन (स्थिति) क्या है?

सब के सामने ड्रिंक्स आ चुके थे। पिता-पुत्री में बहुत सूक्ष्म-सा दृष्टि-विनिमय हुआ। ब्रिगेडियर बहस में उलझना नहीं चाहते थे, पर फंस चुके थे। बोले—गोटें वहीं हैं जहां हरमंदिर पर चढ़ाई के बाद थीं। नहीं, इंदिरा एक चाल यह चल चुकी है कश्मीर में। मात तो नहीं होगी, पर बादशाह का घेराव पक्का है।

इंदर एक घूट पीकर बोला—पापा, आप ठीक कह रहे हैं, पर अगर कल इन नेताओं के व्याख्यान से कश्मीर में क्रांति हो जाए और कश्मीर अपने को आजाद घोषित कर दे और पाकिस्तान, चीन, अमेरिका उसे डा० अब्दुल्ला के नेतृत्व में एक आजाद मुल्क स्वीकार कर लें, तो मेज उलट सकती है।···

इस पर ब्रिगेडियर बड़े जोर से हंस पड़े—हा-हा-हा-हा, सारी बातें मैं सभव मान सकता हू, पर उस क्रांति के लिए इन्हें कम-से-कम खुमैनी ऐसा कोई चाहिए और इनके पास बस अब्दुल्ला है।

—क्या नम्बुदिरिपाद, राजेश्वर राव सब मिलकर खुमैनी का रोल अदा नहीं कर सकते है?

ब्रिगेडियर कुछ देर चुप रहे। बेटी बड़े जोर से आंख मार रही थी। फिर भी ब्रिगेडियर बोल ही गए—ये जितने हैं पेपर टाइगर हैं, कागजी शेर। ये बयान दे सकते है, थीसिज लिख सकते हैं, पर क्रांति को पास फटकने नहीं देंगे। ये उस खानदान में जन्मे हैं जहां शेर नहीं मारे जाते। सारे संसार के कम्युनिस्ट संसदवादी गीदड़ हो चुके हैं।

आशा बड़े जोर से डांटकर बोली—आप लोग राजनैतिक बहस बंद

करें, नही तो मैं खाना नही परोसूगी, क्योंकि आप खा तो जाएंगे, पर बहस करते हुए आपको यह पता नही लगेगा कि आप क्या खा गए। हम दोनों ने बड़ी मेहनत की है।

नारायन कुछ कहना चाहता था, रुक गया।

खाना बहुत सफल रहा। ट्राउट मछली ने डिनर मे चार चाद लगा दिए। सभी आइटमे (चीजें) बहुत सफल रही। साथ मे सगीत चलता रहा पृष्ठभूमि में। पहले रामप्रसाद बिस्मिल की गजल गायी गई क्योकि इंदर को पसंद थी।

सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है,
देखना है जोर कितना बाजुए कातिल में है।
अब न अगले वलवले हैं और न अरमानों की भीड़,
बस फकत मिट जाने का अरमां हमारे दिल में है।
आज मकतल में यह कातिल कह रहा है बार-बार,
क्या भला शौके शहादत भी किसी के दिल में है।
ऐ शहीदे मुल्को मिल्लत मैं तेरे ऊपर निसार
अब तेरी हिम्मत का चर्चा गैर की महफिल में है।

ब्रिगेडियर साहब और इंदर दोनों एक बात पर सहमत थे कि रामप्रसाद बिस्मिल ने एक ऐसी गजल चुनी, जो हर मौके के लिए मौजू (प्रासंगिक) है।

इस गजल के बाद बेगम अख्तर की आशिकाना गजलें हुईं। इंदर की यही रुचि थी। उसे देशभक्ति के गीत पसद नही थे। कह चुका था आशा से पहलगाम में—हम इस्रायल के पहले के यहूदियों की तरह हैं चिरशरणार्थी। देश नहीं है। जब देश होगा तभी देशभक्ति के गीत पसंद आएंगे।

सब लोग खाने के बाद अपने-अपने कमरे मे चले गए

जब सवेरा हुआ, तो नारायन बेड टी (मुंह अंधेरे चाय) लाया। बोला—मिल्क पाउडर की चाय है। दूध नही मिला।

—क्यो—आशा ने व्यग्र होकर पूछा।

—आज कर्फ्यू है। कोई घर से नहीं निकल सकता। हर दरवाजे पर एक सिपाही खड़ा है।

इंदर एकदम खड़ा हो गया। बोला—तो क्या जलसा नहीं होगा? यह क्या बत्तमीजी है? नानसेन्स?

आशा समझ गई। दो घोड़ों की मात है।

इंदर नाराज होकर बोला—यह सब रूस की कारस्तानी है। वहीं से सलाह आई होगी। मैं पाउडर की चाय नहीं पीता। रम ले आओ बर्फ डालकर।

कहकर उसने प्लेटकप छोटी मेज पर पटक दिया। कुछ चाय छलक कर इधर-उधर गिरी। आशा ने चुपके से चाय पोंछी।

इंदर घर बैठे रेडियो सुनता रहा। दिन-भर श्रीनगर की कोई खबर नहीं, यहां तक कि यह भी खबर नहीं आई कि श्रीनगर में कर्फ्यू है।

सन्ध्या समय छै बजे रेडियो ने बताया, जो विरोधी नेता श्रीनगर आए थे, वे एक कड़ा और लच्छेदार बयान देकर शाम के हवाई जहाज से दिल्ली चले गए। असली बात यों थी, जिसे रेडियो नहीं कह सकता था कि वे अपने-अपने होटलों में रुचि के अनुसार ड्रिंक्स लेते रहे और इंदिरा को ऐसी गालियां देते रहे, जो सिवा अमेरिकी आधुनिक उपन्यासों के अन्यत्र कहीं नहीं छप सकती।

ब्रिगेडियर अगले दिन कर्फ्यू खुलते ही मछली मारने बस से कोकरनाग निकल गए। इंदर और आशा पहलगाम लौट गए, कार से। एक और गढ़ गिर गया, धमाके के साथ।

पहलगाम का असर कह लो या डा० अब्दुल्ला के मन्त्रिमंडल के पतन से गम गलत करने की अनिवार्य जरूरत कह लो, इंदर शराब पीकर गौरैया की तरह बार-बार अपने पतित्व का कर्कश उपयोग करता रहा। आशा समझती थी कि यह कतई प्रेम नहीं है, फिर भी उसने मना नहीं किया। उसके अन्दर भी आग जल रही थी, जिसे दमकल के शीतल कलकल-छलछल जल की जरूरत थी। चाहे पानी जैसा भी गन्दा हो।

स्त्री और पुरुष के संबंध का गुब्बारा प्रेम के हाइड्रोजन गैस से भरकर शिखर पर पहुंचता है, पर पुरुष और स्त्री में आग और दमकल का संबंध

भी है। कभी पुरुष दमकल, कभी स्त्री दमकल।

प्रेम जब पुचकार से बदलकर उत्पात हो गया, आशा को एक बार धीरे से कहना पड़ा—बच्चे को तकलीफ न पहुंचे।···

इंदर का उत्तर कहीं जैसे नेपथ्य से आया—क्या करेगा बच्चा पैदा होकर, जब वह खालिस्तान में पैदा नहीं होगा?—कहकर उसने प्रेम का वोल्टेज बढ़ा दिया।

आशा मुश्किल से बोल पाई—तुम—भी···तो भी—तो खालिस्तान में नहीं पैदा हुए।

थोड़ी देर बाद जब वे शरमाते हुए एक-दूसरे को कनखी से देखते हुए रम मिली चाय (अब आशा ने रम की मात्रा कम कर दी थी) पी रहे थे, तो इंदर ने कहा—तुमने शायद आज के अखबार में वह खबर नहीं पढ़ी कि मेरे एक दोस्त ने राजस्थान की किसी जेल में आत्महत्या की है। वह करनाल में उसी घर में मेरे साथ रहता था, जहां हम लोग क्रांति करने के लिए एकत्र हुए थे। वह एक बहुत ही बहादुर समर्पित व्यक्ति था। कौन जानेगा कि भगतसिंह से सौ गुना ऊंचा एक चमचमाता व्यक्तित्व उठ गया। जर्मन कवि शिलर ने क्या खूब कहा था—जहालत से देवता भी लड़कर हार जाते हैं। मेरे मित्र ने ठीक किया आत्महत्या कर ली। गुलामी से मर जाना कहीं बेहतर है। एक ग्रीक दार्शनिक ने इस कारण आत्महत्या कर ली थी कि यह दुनिया रहने लायक नहीं है। नहीं है···नहीं है···कहकर इंदर जैसे फफकने लगा।

आशा डरी कि आत्मघाती प्रवृत्ति ठीक नहीं है। इस मानसिक स्थिति में यह क्या कर बैठे, क्या पता। मित्र का अनुकरण न करे!

आशा कल्पना से काम लेकर बोली—तुम राजनीति के इतने बड़े ज्ञाता होकर यह नहीं समझे कि तुम्हारे मित्र ने आत्महत्या नहीं की होगी बल्कि वह मार डाले गए हैं। पुलिस ने उन्हें इतना मारा होगा कि वह मर गए। फिर बता दिया कि उन्होंने आत्महत्या कर ली। शत्रु से छुट्टी पाने का यह हिटलरी तरीका है।

फिर वह बोली—एक तरीका और है। वह यह है कि कह देने कि वह जेल की दीवार फांद रहे थे, तब जेल के सिपाहियों ने उन पर गोली

चलाई। कोई हीरो भला आत्महत्या क्यों करेगा? आत्महत्या तो इस बात की स्वीकृति है कि आत्महत्याकारी कह रहा है, मैं हार गया। आत्महत्या से तो पराजयवाद का डंका बज जाता है।

इंदरसिंह ने कुछ प्रतिवाद-सा करते हुए कहा—सब आत्मघाती कायर या पराजयवादी होते हैं, यह कहा नहीं जा सकता। अभिनेत्री मेरिलिन मनरो ने, नोबल पुरस्कार विजेता जापानी लेखक कावाबाता ने और हेमिंगवे ने और न जाने कितनों ने आत्मा हत्या की।

आशा ने जोर के साथ कहा—इन लोगों ने पराजयवाद की किसी न किसी मुद्रा से मोहित होकर आत्महत्या की। मेरिलिन मनरो कलाकार थी, बहुत बड़ी कलाकार, वह चरित्र की अन्तरतम आत्मा में घुसकर उसकी सारी भलाइयां-बुराइयां दर्शक को प्रत्यक्ष करा देती थी। पर उसे यह अनुभव हुआ होगा कि लोग उसकी कला के लिए नहीं बल्कि उसकी मैथुनिक अदाओं के कारण चाहते हैं, वे आंखों से चित्रपट के माध्यम से उसके साथ मैथुन करते हैं। तो उसने घृणा में आत्महत्या कर ली···

एकाएक इंदर भर्राई आवाज में बोला—मैथुन भी तो आत्महत्या है, अपने को तोड़ना। मुझे आत्महत्या का यह तरीका सबसे पसंद है, प्यारी आशा।

—मुझे भी। पर आत्महत्या के रूप में नहीं, बल्कि इसलिए कि यह सृष्टि भी है। मैं इस प्रकार तुम्हारे बहुत पास आती हूं। तुम मेरे पति हो।

—फिर वही हिन्दू महकवाली बात। सीता सावित्री वाली।

—हूं।

—मैं तुम्हें सजा दूंगा।

—दो, मैं भी सिक्खनी हूं। सीने पर गोली खाने वाली हूं।

इंदर ने उसे कड़े हाथों से अपनी तरफ घसीट लिया जैसे कलाकार सितार को खींचता है।

सरगम शुरू हो गया।

आशा ने बाएं हाथ से बटन दबा दिया। गीत शुरू हो गया—

मैं अकेला ही चला था जानिबे मंजिल मगर
लोग साथ आते गए कारवां बनता गया।

मजरूह की यह गजल इंदर को उतनी ही पसंद थी जितनी कि—सर फरोशी की तमन्ना।

बारह

माइक उर्फ माइकेल सवेरे ही कोकरनाग से निकल जाता था, बस पर या टैक्सी पर, जब जैसी सुविधा और मौज होती। कश्मीरी टैक्सी वालों ने कहा—साहब, आप हुक्म करो तो टैक्सी रोज सवेरे आ जाए···

पर माइक बंधना नहीं चाहता था। उसके सौ कारण थे। वह कह देता—मैं शराबी हूं। पता नहीं कब कहां चला जाऊं, मूड कैसा रहे? ड्राफ्ट के लिए पड़ा हूं।

माइक जानता था कि जब से अब्दुल्ला की जगह शाह आया है, तब से वातावरण में घुटन हो गयी है। अब की बार गर्मियों (जून-जुलाई) में पंजाब में गड़बड़ी के कारण बहुत कम यात्री कश्मीर आए थे। सारे कश्मीरी इससे विचलित और विक्षुब्ध थे। कश्मीर सरकार ने कश्मीरियों के फायदे के लिए कृत्रिम रूप से सब सेवाओं, होटलों के दाम बढ़ा रखे थे। पहलगाम में घोड़े वालों की बारी बांध दी गई थी। वे हर दूसरे दिन ही घोड़ा ला सकते थे। उद्देश्य यह था कि आपस में प्रतियोगिता न हो। घोड़ों का किराया दस रुपये घंटे रखा गया। पर घोड़ेवाले चुपके से आधे दाम में घोड़ा दे रहे थे। खालिस्तान का पहला प्रसाद कश्मीरियों को यह मिला कि यात्री नहीं आए।

माइक चिड़िया खोजने के बहाने घने जंगल में निकल जाता था और एकान्त में जाकर बेतार से दूर-दूर तक संपर्क रखता था।

माइक समझ चुका था कि खालिस्तान बनने की लेशमात्र आशा भी नहीं रह गई थी। सब तरह से वह यह खबर पा चुका था कि अधिकांश सिख जो खालिस्तान से सहानुभूति रखते थे अब घर बैठ गए थे। कुछ

डाकू आदि बन गए थे। जो पकड़ा जाता, वही मुखबिर बनकर दस-बीस आदमी, हथियार आदि पकड़वा देता, जिससे बड़ी निराशा फैली थी। जो कल तक शरीके कार था, जब वह पुलिस के साथ तलाशी कराने या घर दिखाने आता था या आदमी को पहचान कर गिरफ्तार करा देता था, तो आश्चर्य और दुःख होता था।

माइक बहुत गहरे सोच में था। थोड़े दिन पहले जो ज्वालामुखी बन कर भभक रहा था, वह अब राखों का ढेर था जिस पर कुत्ते टट्टी कर रहे थे। बिहार की छावनी में विद्रोह करके आने वाले सिक्ख सिपाहियों की जो दुर्गति हुई थी, उसके कारण छावनियों का रास्ता बन्द हो चुका था।

वह अक्सर मछली शिकार से लौटते समय बीस किलो मीटर तक घोड़े पर या टहल कर चला आता था। इस मामले में वह बरट्रैन्ड रसेल का शिष्य था, जिनके लिए बीस मील टहलना मामूली बात थी। माइक के चाचा (उस समय लन्दन टाइम्स का मालिक) का यह कहना था—टहलना, समय नष्ट करना नहीं है। टहलते समय नए विचार आते हैं, पुराने विचार परिपक्व होते है। अरस्तु उनके शिष्य पैरीपेटेटिक (टहलुए नहीं) कहलाते थे। वे टहलते जाते थे और साथ ही प्रवचन करते जाते थे। सारे श्रोता गुरु के साथ टहलते थे। इस प्रकार चेलों की शारीरिक सेहत तो बनती थी, पर मानसिक सेहत की खुदा जाने क्योंकि अरस्तु यह मानते थे कि समाज की सुव्यवस्था के लिए दासप्रथा अपरिहार्य है।

माइक ने भारत में आकर आविष्कार किया था कि गांधी नित्य टहलते थे। टहलते समय वह गभागत भक्तों की गुत्थियां सुलझाते जाते थे। गांधी का व्यक्तित्व बड़ा अद्भुत था।

मछली के लिए बगुला की तरह एकाग्रचित्त होकर बैठे हुए माइक का मन सारी स्थिति का सिंहावलोकन करके इस नतीजे पर पहुंच चुका था कि अब हद्दी चूसने की कोई सार्थकता नहीं है। दान्ते की ये पंक्तियां उसके मन में घूम रही थीं—

लैश्यिआते ओग्नि स्पेरांजा वोई चेन्त्राते Lasciate ogni Speranza voi chentrate.

यानी ऐ यहां प्रवेश करने वाले तुम सारी आशाएं त्याग दो।

अब पानी गले तक आ चुका था। डूबने में कोई देर नही थी। खड़े-खड़े डूबकर खिला जाने का कोई अर्थ नही होता। अब नदी से निकलकर भागना चाहिए। खैरियत यह है कि और भी मोर्चे है अपने लिए, जहां लडाई लडी जा सकती है। पर उन मोर्चों पर भी जमीन धंस रही है। काश हम बरट्रैन्ड रसेल की बात मानकर रूस को ध्वस कर देते, उस समय जब हमारे पास अणुबम था और रूस के पास नही था।

मन के एक कोने में एक स्पीडब्रेकर धीरे-धीरे सिर उठा रहा था—क्यों न मैं इन झगडो से दूर, लन्दन टाइम्स का एक अधिकारी होकर, भ्रमर-वृत्ति छोडकर, शादी करके बैठ जाऊ।

To be or not to be, That is the question.

होना या न होना—मुख्य प्रश्न यह है।

आज सवेरे से मछली भी पकड मे नही आ रही थी।

पर प्रश्न मछली नही है, बल्कि पकडना है। नदी नही, बल्कि लहरें है।

वह इसी तरह सोच रहा था कि उसे लगा कि उसके पीछे कुछ हो रहा है। कोई आ रहा है उसकी ओर। कौन ?

क्या ?

उसने घूमकर देखा। अरे ?

—अरे ! तुम सरस्वती ?

सरस्वती आकर चुपचाप बगल मे बैठ गई। बोली—तुमने ऐसे लहजे मे कहा कि मैंने सुना—ऐन्ड यु ब्रूटस, अरे तुम ब्रूटस।

—नहीं-नहीं सरस्वती, मालूम होता है तुम इधर कुछ अधिक कल्पनाशील हो गई हो—कहकर उसने सरस्वती को चूम लिया। बोला—मुझे तुम्हारी सख्त जरूरत है—कहकर उसने फिर उसे चूमा। अब की बार पहले से अधिक कर्कशता के साथ। (मछलियां आवाज सुनकर भाग गई होंगी)

सरस्वती मुस्कराई, बोली—पर मानो न मानो मैं सचमुच ब्रूटस के रूप मे आई हू।

—मतलब ?—माइक हंसा—हा-हा-हा-हा, क्या तुम मुझे मारना चाहती हो ? हा-हा-हा-हा। दस्तूर भी मौका भी है। मरने के लिए यह

स्थान बहुत सुन्दर है।

सामने नदी शोर मचाती हुई कल-कल करके बह रही थी। बादल के बहुरूपिए टुकड़ों ने आकाश के आंगन में ऊधम मचा रखा था। दूर तक कहीं न कोई आदमी था न आदमजाद। शायद दो हजार वर्ष पहले यह स्थान जैसा था, आज भी वैसा ही था।

—क्या तुम मुझे मारना चाहती हो? हा-हा-हा-हा!

सरस्वती अजीब ढंग से बोली—मारना तो तुम चाहते हो। मैं तुम्हारी प्रतीक्षा में बैठी हूं, और तुम यहां बैठकर निश्चिन्त होकर मछली मार रहे हो।

—और क्या करूं? तुम जानती हो मिनर्वा करने को अब कुछ रहा नहीं, सिवा मछली मारने के। तुम लोग कहते हो सिवा मक्खी मारने के।

माइक सरस्वती को मिनर्वा (रोमन सरस्वती) कहता था। मिनर्वा एक एक शब्द को चबाकर बोली—करने को कुछ है या नहीं, यह निर्भर है तुम किसे कर्म समझते हो। राजनीति के सितारों के आगे दुनिया और भी है। तुम्हें चार्ल्स किंग्स्ले की वह कविता स्मरण है न—

When all the world is young lad.

कहकर उसने सुनाया—

जब सारी दुनिया जवां है प्यारे
और हर वृक्ष के रोम रोम हैं हरे
जब सारी बत्तखें हैं, राजहंस प्यारे
और हर किशोरी है रानी मलिका
तब डाटो बूट, चढ़ो घोड़े पर
सारे जगत का करो दिग्विजय
क्योंकि जवां लहू को है बहना
जैसे हर कुत्ते का कभी जागता भाग

जब सारी दुनिया हो गई ध्वस्त
और जब हर वृक्ष पतझड़ से ग्रस्त

जब सारे खेल पड़ गए बासी
जब सारे पहिये हो गए जाम
तब घर लौटो प्यारे और टिक जाओ
खड़े करो वहां मिले कोई मुखड़ा
जिस पर तुम कभी थे लट्टू

माइक कविता सुनकर हंस पड़ा—बोला—तो तुम पूरी तैयारी के साथ आई हो। कविता का संदेश स्पष्ट है, पर मैं इसके जवाब में कह सकता हूं—अभी तो मैं जवान हूं। अभी मेरे वृक्ष के सारे पत्ते हरे हैं। मैं घोड़े पर सवार होकर दिग्विजयी हूं। विजय शब्द शायद गलत है, वी हैव ग्लोबल रेस्पान्सिबिलिटीज (हमारी जिम्मेदारियां विश्वव्यापी हैं)। हम सारे संसार को साम्यवाद की बीमारी से मुक्त करेंगे।

सरस्वती उठ खड़ी हुई। आज्ञामूलक स्वर में बोली—तुम्हारे धर्मेत में चाय तो होगी नहीं। चलो पास के गांव में, वहां कुछ खाकर घोड़ों पर चलेंगे। मैं घोड़े ठीक कर आई हूं।

माइक स्कूली बच्चे की तरह आज्ञाकारी ढंग से सब सामान समेटकर उठ खड़ा हुआ।

गांव क्या, दो तीन घर थे। गांव में या रास्ते में कोई विशेष बात नहीं हुई। पर जो कुछ हुई, उससे माइक के मन के कम्प्यूटर ने खतरे की घंटी बजा दी।

अन्ततोगत्वा वह प्रतीक्षित मुहूर्त आ गया।

रात्रि के भोजन के समय एकाएक सरस्वती ने कहा—मैं जानती हूं, मेरी आत्मा कहती है तुम अब भारत से भाग जाओगे, मुझे छोड़कर। मैं तुम्हें भागने नहीं दूंगी, समझे मिस्टर माइकल, मछलीमार साहब।

माइक समझ गया। यह ठीक कह रही है। उसने [illegible] लेकर कहा—नहीं-नहीं, मैं भागूंगा क्यों? तुम गलत सोच रही हो [illegible] विश्वसुन्दरी।

—क्या तुम ईरान से सरपट नहीं भागे?

—भागा था, पर ईरान एक छोटा देश है, एक दरवाजे का। [illegible] की बात और है। यहां एक दरवाजा थोड़े ही है। एक दरवाजा [illegible]

चुका, पर दूसरे तो खुले हैं। खालिस्तान न सही प्राचीन, (ब्रह्मपुत्र के गिर्द) मिजोनागिस्तान सही।

सरस्वती खाती रही। चुप रही जैसे कुछ सोचती रही हो। फिर बोली —जो भाग नहीं रहे हो, तो तुम अपने पासपोर्ट मेरे सुपुर्द कर दो।

सुनकर माइक एक क्षण के लिए स्तब्ध रह गया। संक्षेप में बोला—शौक से! जब जाऊंगा तो तुम्हें बताकर जाऊंगा। पर तुम्हें यह भ्रम क्यों हुआ कि मैं भागनेवाला हूं।

—इसलिए हुआ कि यहां तुम हर मोर्चे पर आस्मान देख चुके हो। असल में विश्व पैमाने पर तुम लोग हार चुके हो। तुम्हारे पैरों के नीचे से जमीन खिसककर धंस रही है। तुम कहते हो तुम्हारे हाथों में लोकतंत्र का झंडा है। दक्षिण कोरिया, ताइवान, पाकिस्तान, दक्षिण अफीका, चीन ये हैं तुम्हारे मोहरे। क्या इनमें लोकतंत्र है? स्वयं अमेरिका में गड़बड़झाला है। तुमने मुझे गुमराह किया। मेरे प्यारे जुलियस सीजर, मैं तुम्हारा ब्रूटस हूं।

माइक ब्रूटस वाली बात पीकर बोला—अमेरिका में क्या गड़बड़झाला है? वहां राष्ट्रपति का चुनाव होने वाला है। तुम जानती हो।

सरस्वती चुप रही, फिर बोली—एक-एक करके गिनाऊं? तुम्हारी नोबल पुरस्कार प्राप्त लेखिका पर्ल बक को टाउन्समैन (शहरी) नामक उपन्यास एक पुरुष नाम जान हेंजेस के नाम से लिखना पड़ा क्योंकि जैसा कि उसने लिखा है, अमेरिकन समाज में स्त्रियों के रास्ते में हर क्षेत्र में रोड़े हैं, जो पुरुषों के रास्ते में नहीं है।

माइक सुनकर हंस पड़ा—हा-हा-हा-हा, सरस्वती, यू आर दि लिमिट, तुमने हद कर दी। तुम बाबा आदम के जमाने की बात कह रही हो। अब हमारे यहां स्त्रियां पूर्ण रूप से, हर क्षेत्र में आजाद हैं।

—हां उस कथित यौन-आजादी या क्रांति का क्या स्वरूप है, यह भी मैं जानती हूं। पहले किन्से ने सर्वेक्षण किया था, उस समय शादी के पहले यौन तजुर्बा आधे से अधिक अमेरिकी लड़कियों को था, अब लिंडा वुल्फ के सर्वेक्षण ने यह बताया कि एक औसत अमेरिकी स्त्री के नौ प्रेमिक रहे हैं। ऐसी हालत में यह कहना कि किसी प्रकार की नैतिकता के लिए लड़ रहे हो, गलत है। रोमियो जुलियट की कहानी का अब कोई अर्थ नहीं

रह गया, जब तक कि यह न माने, हर नए प्रेमिक में रोमियो और देवदास का रिसरेक्शन (पुनर्जन्म) होता है। सबसे दुखदायी घटक यह है कि इस प्रकार स्त्रियों को जो कथित आजादी मिली है, उसमें स्त्रियों का यौन शोषण अधिक आसान हो गया है। समलैंगिक मैथुन बढ़ा है, फिर भी किसी को तृप्ति नहीं है। बच्चों की दुर्दशा बड़ी है क्योंकि उनके कई बाप और कई माएं हो गई हैं। कोई उनको समय नहीं देना चाहता, असली मा-बाप भी नहीं। सबसे खतरनाक बात तुम्हारे ऐसे मिशनरियों के लिए यह है कि समाजवादी देशों में कथित यौन क्रांति नहीं है।

माइक सुनकर चुप रह गया। सभलकर बोला—हम आस्ट्रेलियन अभी अमेरिका-यूरोप में पीछे हैं। मैं समझता हूं कि रूस पर अंतिम विजय पा जाने के बाद हम इन आंतरिक झगड़ों से निबट सकेंगे। तुम्हारे भारत में भी तो एक जमाने में तांत्रिकों का उत्पात बढ़ा था, पर बाद को वह शांत हो गया। मैं कथित यौन क्रांति का विरोधी हूं।

—पर तुम जो मुझे छोड़कर भागना चाहते हो, वह क्या है? तुम ईरान में भी किसी सुन्दरी को अपनाकर छोड़ आए होगे। तुम क्रांतिकारी हो कि एक घटिया सामुद्रिक मल्लाह जिसके हर बन्दरगाह में एक प्रेमिका है। छी···

ईरान की बात सच थी। क्या नाम था सुन्दरी का? नाम भूल गया। बोला—नहीं ईरान में ऐसा मौका नहीं था। खुमैनी के मारे कोई स्त्री मेरे पास फटकी नहीं, यद्यपि शाह के जमाने में यह आम बात थी। स्त्रियों को पूरी स्वतंत्रता थी।

सरस्वती झिड़ककर बोली—इसका अर्थ यह हुआ कि तुम खुमैनी को ईसा का दर्जा दे रहे हो या तुम कहोगे कि ईसा अप्रासंगिक है।

दोनों चुपचाप खाने लगे। खाने के बाद फिर एक बार सरस्वती ने प्रकारान्तर से बात छेड़ी। बोली—वैनेसा विलियम्स अमेरिका की सबसे सुंदर स्त्री चुनी जाकर मिस अमेरिका बनी। यह अभी-अभी की बात है। उस औरत ने अपने नंगे फोटो गुक्किओने नामक एक नंगे फोटो के व्यापारी को बेचे। इससे मिस अमेरिका, नंगे फोटो के ग्राहक, सब पर रोशनी पड़ती है। नंगी मिस अमेरिका के फोटो की साढ़े सात लाख

प्रतियां छपी, बाइबल, कुरान, गीता से ज्यादा। मिस अमेरिका को लाखों डालर मिले, तुम क्या कहते हो? क्या यही वह सभ्यता है जिसका तुम प्रचार चाहते हो? जिसका तुम गीत गाते हो?

अब की बार माइक तेजी से बोला—हां वे ही लोग जो मिस अमेरिका के नंगे फोटो के लिए करोड़ों डालर दे रहे हैं, वे ही ओलम्पियाड में चार स्वर्ण पदक विजयी को कई करोड़ डालर दे रहे हैं। टेनिस के खिलाड़ी बोर्ग की हैसियत छह करोड़ डालर की है। अमेरिका के खुली टेनिस प्रतियोगिता में विजयी को छब्बीस लाख डालर मिलते हैं। इसका अर्थ यह हुआ कि एक धनी राष्ट्र सौंदर्यप्रेमी है साथ ही वीरताप्रेमी। और माफ करना, क्लासिकल कलाकारों ने जैसे लिओनार्दोदा ने और तुम्हारे भुवनेश्वर और खजुराहो के कलाकारों ने क्या किया? सशक्त सभ्यता सौंदर्यप्रेमी शक्तिपूजक होती है। तुम स्वयं भी तो शक्तिपूजक हो। लिंग और योनि की खुल्लमखुल्ला पूजा तुम्हारे देश में ही है। मैं भी योनिपूजक हूं। आ-ओ···हे भैरवी!

—नहीं, पहले पासपोर्ट दे दो।

माइक ने पासपोर्ट दे दिया। सरस्वती बोली—नहीं, यह तो आस्ट्रेलियन पासपोर्ट है। ब्रिटिश पासपोर्ट भी दे दो। मैं तुम्हें हमेशा-हमेशा के लिए अपने पास रखूंगी। कभी जाने न दूंगी।

दोनों पासपोर्ट ले लेने के बाद सरस्वती माइक की बाहों में कूद गई। बोली—मैं कब की प्यासी हूं।

—मैं पानी दूंगा। मैं भैरव हूं, तुम भैरवी, हममें संगम हो।

सरस्वती ने हंसकर संस्कृत में कहा—अहम भैरवी त्वं भैरवः आवयोरस्तु संगमः।

माइक ने कहा—तुम मुझे संस्कृत सिखाओ। बड़ी मधुर भाषा है। ज्ञानी थे वे लोग। ताजमहल की इकरस कला (रसालों मुगलों के पास एक ही डिजाइन थी, हुमायूं का मकबरा) भुवनेश्वर, खजुराहो के सामने तुच्छ है। तुम खजुराहो की प्रतिनिधि हो···। लोग ताजमहल को क्यों सप्त आश्चर्यों में कहते हैं?

आगे बात बन्द हो गई क्योंकि प्रेम बातों का देवता नहीं, घातों का

आघातों का देवता है।

अगले दिन व्याकुल होकर दोनो पासपोर्ट लौटाती हुई सरस्वती बोली —मैं पासपोर्ट कहा छिपाऊं प्यारे ? मेरे पास कोई जगह नही।

माइक ने अनायास कहा—छिपाने की कोई जरूरत नही। मैं तुम्हे वचन देता हूं कि मैं उनका इस्तेमाल नही करूगा।

पासपोर्ट सामने ही रख दिए गए ताकि हर समय दोनों की आखो के सामने बने रहें।

फिर भी सरस्वती सन्तुष्ट नही हुई। उसने अगले दिन जैसे जीभ लौट-लौटकर बरावर दुखते दांत को पुचकारने पहुच जाती है, वह पुराने विषय को छेड़ती हुई बोली—माइक, मेरे शरीर पर तुम्हारा पूरा अधिकार है, तुम मेरी गहराइयों में बार-बार उतर चुके हो, पर मेरा मन थोडा अब भी नही मान पा रहा है। पिछले पैरों पर खडा हो जाता है कि तुम जिस व्यवस्था के लिए लड़ रहे हो, वह श्रेष्ठ नही है। ऐसा तो नही कि पाश्चात्य सभ्यता को शिखंडी बनाकर पूजीवाद अपनी लड़ाई···लड रहा है ? तुम लोग उसी दैत्याकार मशीन के छोटे-बडे पुर्जे हो। अक्सर पूजीवाद ऐसे मुखौटे पहनकर लोगों को भरमाता रहा है।

—यह सच नही है। तुम्हें क्यो यह संदेह हो रहा है कि हम पूजीवाद के अलम्बरदार हैं ?

—कई कारणों से।

—एक कारण बताओ।

—बताती हूं—कहकर उसने कहा—मैं पुराने उदाहरणों पर नहीं जाती हू। अभी-अभी अमेरिका के साहित्यिक वृत्तो मे उथल-पुथल मच गई कि प्रसिद्ध लेखक डैनी सैन्तियागो का असली नाम डैन जेम्म है, और वह 73 साल के श्वेतकेश वृद्ध हैं, न कि तीस साल का मुहफट युवक। वह अमेरिकन है, न कि अमेरिका में वसा मेक्सिकन। अभिनेत्री ओड्रे हेपवर्न के केशविन्यास के नमूने के लिए लाखों लड़कियां क्यों सौन्दर्य-सामग्री की दूकानों पर धावा बोलती थी ? केवल स्त्रियां ही नही, पुरुष ग्रेगरी पेक की तरह कोट सिलाना क्यों चाहते थे ? इसके साथ मिला लो न्यूयार्क नगर-

पालिका के आंकड़े कि हर तीन बच्चे मे एक बच्चा विवाह के बाहर उत्पन्न है। तुम मुझे समझाओ। पहले पहल तुम जब मिले, तो ये सन्देह नहीं थे, पर पता नहीं, ज्यों-ज्यो पढ़ रही हूं, ये संदेह फन उठाकर सामने आ रहे हैं।

सरस्वती का एक-एक वाक्य माइक के कानो पर हथोड़े की तरह पड़ रहा था। हर तथ्य अकाट्य और भन्ना देने वाला था। यों ही वह अपने को पराजित समझ रहा था, अब सरस्वती के वचनो से वह और उद्भ्रान्त हो गया। उसे लगा कि यदि वह अधिक समय तक सरस्वती का प्रवचन सुनता रहा, तो वह स्वयं विक्षिप्त हो जाएगा। एकाएक जैसे उसकी समझ मे आ गया कि मेरिलिन मनरो, हेमिंगवे, कावाबाता ने आत्महत्या क्यों कर ली। वे लोग जिस ऊंचाई पर पहुंच चुके थे, वहां से उन्होंने देखा कि सारा जगद्व्यापार निरर्थक है, जिस कच्चे माल से उनका कारोबार था, वह दो कौडी का है और उनकी कला ऐसी मरुभूमि के बालू पर लकीर है जहां हवा बडी तेजी से चल रही है।

माइक तर्क से परास्त हो चुका था, पर उसका मन कह रहा था—नही, ऐसा नहीं हो सकता है।

उसने पासपोर्टों की तरफ ललचाई आंखों से देखा, कैदी जैसे खुले आकाश मे अनायास उडते तैरते हुए कबूतर के जोड़ों को देखता है।

माइक ने निश्चय कर लिया कि सरस्वती उर्फ मिनर्वा से तर्क करना व्यर्थ है। बोला—तुम जो कहती हो, उसमें काफी वजन है। पर हम संक्रांति काल मे हैं। उथल-पुथल के बाद पानी गंदला पड़ गया है। शीत-युद्ध के कारण पानी थिरा नहीं पा रहा है। रूस पर विजय के बाद ही हम कुछ ठोस कर सकते हैं। अभी हमारा सारा ध्यान रूस को शिकस्त देने मे केन्द्रित है।

सरस्वती ने तर्क से मुंह मोड़कर कहा—मैं अपनी जिन्दगी को लेती हूं। मैं अपने आश्रम मे बिलकुल शांति में थी। तुमने आकर सब गड़बड़ कर दिया। मैं तुम पर लट्टू हो गई। जैसा-जैसा तुमने कहा, मैंने किया, क्योंकि मैंने मान लिया कि तुम कोई गलती नहीं कर सकते। खालिस्तान मेरी समझ में नही आया क्योंकि पाकिस्तान उसी आधार पर बना था और

वह 1971 में टूट गया था। यह तुम्हारे प्रचार कार्य की विजय थी कि उसी ध्वस्त आधार पर खालिस्तान का तानावाना खड़ा हो गया और लोग उस पर ईमान लाए। मुसलमानों को गुमराह करने के लिए इकबाल की जरूरत पड़ी, पर सिख यों ही वह गए। पन्दह दिन और मिल जाते तो शायद खालिस्तान बन जाता और चीन, पाकिस्तान, अमेरिका उसे राजनयिक रूप से स्वीकार कर लेते।

—हां, केवल पन्दह दिन।

—मान लिया, पर उससे क्या मिलता ?

पाकिस्तान और कारण से टूटा, खालिस्तान टूटता व्यक्तियों की खट पट के कारण। हरमंदिर में क्या हो रहा था। खानाजंगी शुरू हो चुकी थी। तोहरा, लोंगोवाल भिंडरांवाले को लड़ा रहा था। तुम से यह छिपा न होगा कि यदि पाकिस्तान ताव में आ गया और भारत पर कूद पड़ा, तो उसके तब की बार दो टुकडे हुए थे, अब की चार टुकड़े होंगे।

अब माइक को गुस्सा आ गया। बोला—यदि खालिस्तानी आपस में लड़े, तो हम खालिस्तान को अस्त्र बेचना बंद कर देंगे, उसके नेता फिर आपस में लड़ नहीं पाएंगे, क्योंकि उन्हें पाकिस्तान से, भारत से, खतरा हो जाता।

इस प्रकार फिर एक बार तर्कों का तूफानी दौर चल पडा, जिसका नतीजा कुछ नहीं हुआ। यहां तक कि रात के अंधेरे में शराब के धूमाच्छादित पर्दे की आड में जो सेतु बनता था, वह बंद हो गया। सरस्वती ने एक पेग के बाद पीना बंद कर दिया। ऊपर से ढांचा कायम रहा।

माइक नित्य सवेरे निकल जाता था। कभी अनंत नाग शराब खरीदने, कभी वयालू मछली मारने। पासपोर्ट पड़े रहते। इधर माइक टैक्सी का इस्तेमाल अधिक कर रहा था।

सरस्वती को लग रहा था कि कोई शून्यता पैदा हो चुकी है, जो पटने की नहीं। शारीरिक आकर्षण अब भी था, पर माइक की तरफ से कुछ स्तब्धता आ चुकी थी, जैसा आंधी के पहले होती है।

कैसी आंधी ?

क्या माइक आत्महत्या करेगा? नहीं, वह उस कांठी का बना नहीं था।

तो उसने शराब पीने में कमी क्यों कर दी? मछली पकड़कर लाता है तो खुशी से उबल नहीं पड़ता जैसे पहले होता था। संगीत सुनना भी बंद-सा ही था। हां, वह बड़े चाव से रात नौ बजे की रेडियो बुलेटिन सुनता था। बी० बी० सी०, वायस आफ अमेरिका सुनता था। इसमें कमी या कोताही नहीं आई थी। भारत की खबरों में यही होता था कि पंजाब में इतने आतंकवादी-दहशतपसंद मारे गए, इतने पकड़े गए, इतने हथियार हाथ आए। बचे-खुचे आतंकवादी अब हतोत्साह होकर नहर काट रहे थे, स्कूल जला रहे थे। लौ बुझने के पहले की चकाचौंध?

सरस्वती यह समझ चुकी थी कि माइक अब उसके लिए मरा घोड़ा हो चुका है। शराब और शरीर के चाबुक से मरा घोड़ा जिन्दा नहीं हो सकता। फिर भी चाबुक जारी थे। माइक पीकर कभी-कभी खुल जाता था। बोला—खालिस्तान नहीं बनने का। पर लगता है, बाकी सारे मुहरे भी कमजोर हैं। जीया चाहे जितने भी एफ सोलह विमान पाए, वह शायद लड़ना न स्वीकार करे। वह कहीं रेगन को बेवकूफ तो नहीं बना रहा है? चीन साम्यवादी होने के बावजूद कहां तक लड़ सकता है, यह संदिग्ध है। 1949 के बाद वह पांच बार लड़ चुका है। रूस से वह बराबर पिटता रहा। भारत में वह घुस आया, पर भारत के नींद से जगने ही वह लौट पड़ा। मौका था, आसाम आदि ले लेने का, क्यों नहीं लिया? वियतनाम जिसे वह मदद देता था, अब वह उसका शत्रु बन चुका है। उसके विरुद्ध भी चीन की दाल नहीं गल रही है। मिनर्वा, तुम बताओ, ऐसी हालत में पलायन के सिवा चारा क्या है? आत्महत्या चरम पलायन है।

सरस्वती का सोया हुआ प्रेम अंगड़ाई लेकर जाग पड़ा। बोली—आत्महत्या कायरपन है।

माइक हंसा, बोला—हा-हा-हा-हा। आत्महत्या कायरपन है, पर सभी प्रकार के पलायनवाद कायरपन हैं। वह क्या तुम्हारा संस्कृत श्लोक है, मद्य के बारे में! तुम्हारे मुंह से बड़ा अच्छा लगता है…!

सरस्वती हंसकर बोली—पीत्वा पीत्वा पुनः पीत्वा यावत्पतति भूतले—पीए पीए तब तक पिए जब तक जमीन पर गिर न पड़े…

—हां, बहुत सुन्दर—पीट्वा पीट्वा पुनः पीट्वा। अच्छा वह क्या

दूसरा श्लोक है, मांको छोड़कर ?

—सरस्वती फिर हंसी जैसे चादी की घंटी वजती है। बोली—हां, वह श्लोकार्ध है—

मातृयोनिम परित्यज्य विहरेत सर्वयोनिपु

यानी मा की योनि छोड़कर सब योनियों में बिहार करे।

माइक ने कहा—तुम भारतीयों के पूर्वज बड़े ज्ञानी थे। वे पलायनवाद को तंत्र के रूप में एक दर्शनशास्त्र वना गए। जव शास्त्र अनुमति देते हैं कि मातृयोनि को छोड़कर···। फिर रुकना क्यों ? मिनर्वा, तुम मेरी मा तो नही हो।

—नही। तुम्हें क्या हो गया ?

—नहीं, तो आ-ओ

माइक ने सरस्वती को घसीट कर कहा—पलायनवाद का यह तांत्रिक उपाय सबसे अच्छा है। है न ?

—अब दार्शनिक गुत्थी नही।

दोनों चुप हो गए।

कोकरनाग के प्रसिद्ध गुलाबो की खुशबू, शराव की वू पर फिर एक बार हावी हो गई।

आकाश मे ये वाक्य गूज रहे थे।

—तुम मेरी मां तो नही हो ?

—नही, तो आओ।

आओ ! आओ ! आओ ! आओ ! गुलाव शराब और कवाव परहावी था।

तेरह

पाच जुलाई को श्रीनगर से दिल्ली वबई के लिए दो एयर बस हवाई जहाज उड़ने को थे। एक चार सौ पांच और दूसरा चार सौ अट्ठाईस। कुछ ऐसी वजह हो गई कि चार सौ अट्ठाईस बोइंग उड़ान में बदल गया।

श्रीनगर शहर में कर्फ्यू था, इस कारण उड़ानें निर्दिष्ट समय से कुछ देर में चल रही थी।

इस उड़ान में एक नहीं, दो नहीं, नौ ऐसे व्यक्ति थे, जिनको दिल्ली या बंबई जाने में कोई दिलचस्पी नहीं थी। फिर भी उनके पास सारे यात्रियों की तरह भारत के लिए टिकट थे। दिल्ली के टिकट।

इन नौ यात्रियों में से सिखों ने श्रीनगर के एक होटल में बाल कटा-कर हिन्दू नाम धारण किया था। गुरदीप सिंह बन गया प्रदीप कुमार, मलंग सिंह बन गया संजीव कुमार और पंजाब पुलिस का एक सिपाही मंजीत सिंह बन गया एम० एस० झालावाड़। इनमें से कई जम्मू में छात्र थे। हवाई जहाज सवा चार बजे उड़ा।

उड़ते ही उसे हाइजैक करके लाहौर ले जाया गया। जब वह जहाज लाहौर में उतरा और घेर लिया गया, तारा मसीह उस समय अपने एक ईसाई मित्र डाक्टर रसेल को छोड़ने के लिए एयरपोर्ट में मौजूद था। मित्र को करांची जाना था। वहां से सऊदी अरब।

कानाफूसी में उसने जो कुछ सुना, उसका मतलब यह था कि इस जहाज में वे लोग हैं, जो खालिस्तान बनाना चाहते थे, भागकर इतने दिन कश्मीर में छिपे थे, अब वहां से इस तरीके से चले आए।

तो इसके माने दो और दो चार करते हुए यह हुए कि वह अब चंडीगढ़ का बिशप नहीं बनेगा। उसे मरते दम तक फांसी ही देते रहना पड़ेगा। सोचकर उसे पसीना आने लगा। वह एक कुर्सी में धम्म से बैठ गया। मित्र की उड़ान इसी वक्त थी। पर श्रीनगर से आए हुए अपहृत जहाज के कारण लाहौर की सारी समय-सारणी गड़बड़ा गई थी।

मित्र डाक्टर रसेल ने उद्विग्न होकर कहा—क्या बात है मसीह, तुम घबड़ा क्यों रहे हो? पसीना-पसीना हो रहे हो!

डाक्टर ने रसेल की नाड़ी देखी। देखकर गंभीर हो गया। खैरियत यह रही कि उसके पास दवा की पेटी थी। उसने निकालकर गोली दी। कहा—खा जाओ। तुम्हें एंजीना की बीमारी है न? जहां तक मुझे याद है। है न?

—हां, गोलियां मेरी जेब में हैं।

डा० रसेल चुप हो गया क्योंकि कुछ एलान हो रहा था। एलान में यह कहा गया कि सब उड़ान वाले निश्चिन्त रहें। कुछ देर हो सकती है। कारण नहीं बताया। बताया कि सब यात्री अगले एलानों की इन्तजार करें।

डा० डमेल ने एलान सुनने के बाद कहा—मसीह ! मैं मिसेज मसीह को टेलीफोन करता हूं। वह आकर तुमको ले जाएं। तुम्हें यहां आना नही चाहिए था।

मसीह कुछ नाराज होकर बोला—नहीं, उन्हें न बुलाओ। मेरी यह बीमारी तब से है, जब मैं भुट्टो को फांसी हुई। तुमको बता चुका हूं कि वह मुहतरिम (श्रद्धेय) ड्रामा हो रहा है, समझकर फांसी पर चढ़ गए। मुझे देखा तो घबड़ा गए। वह मुझे पहचानते थे।

दोनों चुप रहे। चारों तरफ जो कानाफूसी चल रही थी, उसमें खालिस्तान का नाम बार-बार आ रहा था।

एकाएक मसीह ने डाक्टर रसेल से कहा—तुम तो डाक्टर हो, एक बात पूछूं ?

—यह कि अगर मर्द आपरेशन करा ले, तो फिर उनका बच्चा हो सकता है ?

—नहीं। हां अगर आपरेशन किसी गलत आदमी, अनाड़ी से कराया हो, तो बात और है। अभी रिसर्च (शोध) चल रहा है कि आपरेशन के बाद फिर चाहे तो आपरेशन का असर खत्म कर दिया जाए।

जल्दी ही लाहौर एयरपोर्ट की स्थिति साधारण हो गई। अपहृत जहाज के यात्री लौंज में आ गए। मसीह तो वहीं रहा। डा० रसेल पता लगाकर आया। बोला—हाइजैकरों (अपहरणकर्ताओं) ने आत्मसमर्पण कर दिया। कुछ लोगोंने अपहरणकर्ता चाहते थे कि यात्रियों को तो माल समेत छोड़ दिया जाए, पर जहाज को बम या डायनामाइट से उड़ा दिया जाए, पर पाकिस्तानी अफसर राजी नहीं हुए। इस पर एक अपहरणकर्ता संजीव कुमार अड़ गया, बोला, हम जहाज वापस नहीं जाने देंगे। कहकर वह पाकिस्तान जिन्दाबाद, खालिस्तान जिन्दाबाद के नारे देने लगा। वह दो कदम आगे गया जहाज की ओर, तो वह गिरफ्तार कर लिया गया।

मसीह सोच रहा था, मैं बिशप नहीं बना, न सही, पर मेरी ने मुझे धोखा दिया। यह असह्य है।

मसीह इतना परेशान था कि डा० रसेल की बात उसके पल्ले नहीं पड़ी। बोला—तो क्या अपहरणकर्ताओं की मांगें मानी गई?

—नहीं। वे तो बहुत कुछ चाहते थे, पर अपहरणकर्ताओं के लीडर ने, जो कैनेडियन या आस्ट्रेलियन था, कह दिया—नथिंग डूइंग—कुछ नहीं। इस पर उसके खिलाफ कुछ विद्रोह-सा हुआ। पर उसने पिस्तौल निकाल ली। बोला—तुम एक मित्र देश में हो। जीया का हुक्म है कि जहाज फौरन वापस भेजा जाए। इसमें गहरी चाल है, तुम लोग नहीं समझोगे।

कहकर वह नेता पाकिस्तान के राष्ट्रपति की गाड़ी में चला गया। मुझे कुछ देर तो हो गई, पर अच्छा तमाशा देखने को मिला।

डाक्टर ने मसीह की फिर से नाड़ी देखी। देखकर बोला—बिलकुल ठीक है। कहो तो मिसेज मसीह को फोन कर दूं?

पर मसीह उत्तेजित होकर बोला—नहीं, हरगिज नहीं। उसी के कारण मेरी यह हालत है। कभी बताऊंगा।

उसी समय करांची की यात्रा का एलान हुआ। डा० रसेल भीतर चला गया। जाते समय क्रास का चिह्न बना गया। बोलता गया—अगले साल मिलूंगा। बाय-बाय।

खड़े होकर मसीह ने मित्र को विदाई दी।

उसके बाद उसे एकाएक ऐसा लगा कि उसके लिए जाने की कोई जगह नहीं है, कोई उसका अपना नहीं। भुट्टो ने ठीक समझा था कि सारा ड्रामा है। मसीह संसार से छुटकारा चाहता था, पर छुटकारा है कहां? डाक्टर चौहान ने उसे लन्दन में कैसे-कैसे सब्जबाग दिखाए, चंडीगढ़ का बिशप बनाएंगे। यह करेंगे, वह करेंगे। भिंडरांवाले ने उसका इसी रूप में स्वागत किया। पर वह कहां है? उसको किसने मारा? क्या उसने आत्म-हत्या की? बहरहाल वह सारा ड्रामा समाप्त हो गया। पर अपन की सबसे अधिक दुर्गति हुई। मुझे चौहान ने धोखा दिया। अब बीवी ने धोखा दिया।

यही सब सोचता हुआ वह मुड़कते-मुड़कते हुए घर पहुंचा।

यार-यार आए । चौहान । सन्तजी । बिशप ।

48 घंटों के अन्दर मसीह का प्राणपखेरू उड़ गया । मेरी फफक-फफक कर बहुत रोई । अखबारों में (अखबार वाले तो तमाशा चाहते हैं) मसीह के फोटो छपे और उसे एक ऐतिहासिक व्यक्तित्व बताया गया । विशेषकर यह बात उछाली गई कि उसने भुट्टो को फांसी दी थी । लिखा गया कि भुट्टो के आखिरी शब्द उसी के साथ दफन हो गए ।

लन्दन से डा० चौहान ने भी एक संदेश भेजा । साथ ही श्रीमती मेरी को सौ पौंड की प्रतीकात्मक भेंट भेजी ।

खबर पाकर एकमात्र बेटा आया । उसने आते ही मसीह के पासबुक मांगे, पर उनका पता नहीं लगा । मेरी पहले ही उन्हें गायब कर चुकी थी । बोली—डा० रसेल के पास होंगे । वही उनके सबसे अच्छे दोस्त थे । वह इस वक्त सऊदी अरब में हैं ।

मेरी ने आशा की कि बेटा रात को उसके पास आएगा, तब पासबुक दे दूंगी । पर वह नहीं आया । आदर्श बेटे की तरह व्यवहार करता रहा । हां, बैंक में जाकर एकाउन्ट रुकवा आया । बाद को कार्रवाई होती रहेगी ।

तीन दिन रहने के बाद, सारी रस्में अदा करने के बाद जब वह चलने लगा, तो मेरी अपना पेट दिखाकर बोली—मुझे ले चलो ।

—वहां तुम क्या करोगी ? मेरी बीवी है, बाल-बच्चे हैं । सास-बहू का झगड़ा । ना बाबा ।

मेरी को बड़ा आश्चर्य हुआ । यद्यपि उसी दिन उसे बाप की मृत्यु पर कम्पनी के दिए हुए पचास हजार रुपये का आधा मिल गया था, पर उसे खुशी नहीं हुई । पति की मृत्यु से उसे कोई विशेष धक्का नहीं लगा था, बल्कि सोचा था कि फ्री (स्वतंत्र) हो गई, पर इस बात से बड़ा धक्का लगा कि मसीह का बेटा शादीशुदा और बाल-बच्चेदार है ।

चौदह

इंदर सिंह और आशा बैठकर अपने हट के सामने लान पर चाय पी

रहे थे। सड़क पर घोड़े वाले और उनके घोड़े खड़े थे क्योंकि यही उनका अड्डा था। इन्दर और आशा रोज कहीं न कहीं पिकनिक को जाते थे। वाईसरन (असल में यह शब्द अंग्रेजी वाइसरीन यानी उपराज्ञी का अपभ्रंश था। किसी वाइसराय की बीवी ने इस स्थान को पसंद किया था, तो इसका नाम ही बाईसरन हो गया) शिकारगाह, चन्दनवाड़ी कहीं न कहीं वे जाते।

उन्हें छोटे शिकारगाह के पास एक जगह बहुत पसंद आई थी। शिव मंदिर से उतरकर लिड्‌डर नदी में आ मिलने वाली एक जलधारा (उसे उपनदी कह लें) के उस पार बड़े-बड़े (पांच से दस किलो तक के) पत्थरों से ढका स्थान था। कुछ पाइप भी थे। पत्थरों का उपहास करते हुए उपनदी के उस पार जाने के लिए एक तख्ता था, मुश्किल से एक फुट चौड़ा। कुछ पेड़ थे, जिनकी छांह में वे बैठे थे। नरायन वहीं खाना ले आया था। फिर लकड़ी बटोर कर आग जलाकर उसे गरम किया था। दूधवाली काफी बनी थी। दुपहर के समय बकरी चराने वालों ने दो सौ बकरियों सहित वहां धावा बोल दिया था। शायद वे रोज आते थे। इन्दर ने बकरियों का दूध खरीदा था और बकरीवालों को काफी पिलाई थी जिससे वे बहुत खुश हुए थे। उन्होंने दूध सुखाकर बनाई हुई रोटी (अमावठ की तरह) इन्दर और आशा को खिलाई। बहुत मजा आया था।

वे यही आलोचना कर रहे थे कि आज भी वहीं चला जाय या नहीं। आशा कह रही थी—पहले दिन जो मजा आता है, वह बाद को नहीं आता। प्रथम आश्चर्य का उपादान खतम हो जाता है न।

इन्दर ने हंसकर कहा—पर मैं तो तुम्हें नित्य नई पा रहा हूं। अतल गहराइयां और ऊंचाइयां भी।

आशा ने मुस्कराकर कहा—मैं भी। कवीन्द्र ने रवीन्द्र से कहा तुम आधी मानवी हो आधी कल्पना।···

वह वाक्य खतम नहीं कर पाई थी कि देखा एक संभ्रात कश्मीरी महिला घोड़े पर से उतरकर उनके हाते में दाखिल हुई।

इन्दर-आशा दोनों कौतूहल से उठ खड़े हुए। इन्दर ने पहचान लिया। बोला—हमारे गरीबखाने में स्वागत है।—फिर बोला—यह है मेरी

पत्नी आशा और आप हैं सरस्वती देवी, तुम इनके बारे में सुन चुकी हो।
दोनों कुर्सियों पर बैठ गए। नरायन दौड़ कर काफी का नया पाट ले आया। दोनों उस तरफ देख रहे थे जिधर लिडर बह रही थी किलकारियां भरती हुई। बादलों के छौनों की अठखेलियां जारी थीं।

इन्दर सोच रहा था, पता नहीं क्या खबर लाई है। आशा सोच रही थी कि कहीं यह बाजनी उसके पति को उड़ाकर फिर खालिस्तानी संघर्ष की आग में झोंकने तो नहीं आई है! कबूतरी की तरह उसका दिल धक-धक धड़क रहा था। आशा के माथे पर पसीना चमक गया।

सरस्वती ने पहले मुंह खोला, बोली—मिस्टर माइकेल भाग गए।...

कहकर वह चुप हो गई, ताकि कही गई बात का महत्त्व मन में पूरी तरह धंस जाए। बोली—वह भाग गए इसका मतलब है, दूसरे मोर्चे पर गए।

इंदर ने कहा—तो यह भागना कहां हुआ? एक मोर्चे से दूसरे मोर्चे में जाकर—लड़ना भागना नहीं है।

ढेर से दूध में काफी बनाकर एक घूंट पीकर सरस्वती बोली—तुम्हारा-हमारा मोर्चा तो भारत तक ही है। हमें बाहरी झगड़ों से क्या मतलब?

इन्दर ने मृदु प्रतिवाद करते हुए कहा—यह आप कैसे कहती हैं? सब मोर्चे एक हैं। रूस हमारा दुश्मन है। उसी की बदमाशी से खालिस्तानी क्रांति नहीं हो सकी।

—मैं इस मूल्यांकन से सहमत नहीं। यह बहस बाद को होगी। पहले खबरें तो सुनो।

—क्या?

—माइकेल बड़े अजीब ढंग से गए। वह एक हवाई जहाज को हाईजैक कराकर लाहौर चले गए।

फिर सरस्वती ने पासपोर्ट रखा लेने से लेकर हवाई जहाज अपहरण, फिर लाहौर एयरपोर्ट में साथियों से मतभेद, हवाई जहाज नष्ट करने से इन्कार आदि सारी बात सुना दी। फिर हंसती हुई बोली—इसके माने यह हुए कि मैंने हवाई जहाज का अपहरण कराया। न मैं पासपोर्ट रखाती, न हाईजैक की जरूरत पड़ती।

आशा एकाएक बोल पड़ी—आप उनके साथ जाने को तैयार होतीं, तो कोई समस्या नहीं पैदा होती।

सरस्वती ने मृदु मतभेद दिखाते हुए कहा—मामला इतना सरल नहीं है, आशा।

इंदर ने आशा को यह नहीं बताया था कि सरस्वती देवी का माइकेल से सम्बन्ध भारत तक सीमित रहा। सरस्वती इस अलिखित शर्तनामे के विरुद्ध एकाएक यह चाहने लगी थी कि सम्बन्ध तब तक रहे जब तक मृत्यु न अलग कर दे, टिल डेथ डु अस पार्ट (till death do us part)

आशा ने ब्योरा नहीं पूछा कि क्यों सरल नहीं है। इंदर ने रोशनी डालने के इरादे से कहा—बात यह है कि मिस्टर माइकेल एक मिशन लेकर चल रहे हैं।

—खालिस्तान?—आशा ने पूछा।

—नहीं, खालिस्तान उसका एक अध्याय मात्र है। मिस्टर माइकेल का मिशन ग्लोबल (विश्वव्यापी) है। हर देश में उसका मोर्चा है।

आशा ने अटकल लगाकर कहा—जैसे रूस का है?

सरस्वती हंस पड़ी, बोली—तुम ठीक समझी हो। पर इसका और ब्योरा यों है कि ये दोनों विश्वशक्तियां एक-दूसरे के विरुद्ध हैं। दोनों ग्लोबल मिशन की दावेदार हैं।

आशा मानो अपने को बचाती हुई बोली—इसमें पति-पत्नी का सबंध कहां आता है मेरी समझ में नहीं आता।

सरस्वती बोली—पर मेरी समझ में आता है। मिशन वाले आदमियों ने अकसर, बुद्ध, ईसा से लेकर आजाद, भगतसिंह तक, सबने स्त्रियों को जंजाल ही माना है। नारी नरकस्य द्वारम्। प्राचीन चर्च पादरों ने इसी विचार को यों कहा—नारी janus diaboli है।

आशा ने फिर भी कहा—पर लेनिन ने तो ऐसा नहीं माना।

सरस्वती ने कहा—लेनिन को अपने ऊपर ईसामूसा से ज्यादा भरोसा था।

इंदर बोल पड़ा—या यह भी हो सकता है, लेनिन क्रुप्स्काया को उसी तरह अपनी बहन मानते थे, जैसे गांधी 37 साल की उम्र के बाद कस्तूरबा

को मानते थे [illegible]

इस विषय में कोई अन्तिम निर्णय नहीं हो सका। सब लोग चुप हो गए।

तीनों उठकर घोड़ों पर सवार होकर कल वाले मनोरम स्थल पर पहुंचे। नरायन वहीं पर खाना ले आया। दिन-भर बकरों-बकरियों, बकर वालों का साथ रहा। उपनदी बहती रही। थकके थककर पथरीले बिस्तरों पर सो गए। उपनदी लोरियां गाती रही।

सन्ध्या समय वे हट में पहुंचे। सरस्वती किसी तरह रात को हट में ठहरने को राजी नहीं हुई। वह अनन्तनाग जाना चाह रही थी। टैक्सी तय थी।

अन्त में वह संदेश के रूप में नहीं बल्कि संदेह के रूप में जाते समय बोली—चारों तरफ अंधेरा है। घोर अंधेरा। पर शायद एक मिशन होना अच्छा है। उससे जीवन अच्छा कटता है। अकेलापन दूर होता है।

आशा अब सरस्वती से बहुत खुल चुकी थी, बोली—पर मिशन ऐसा हो जिसमें अधिक-से-अधिक संख्या का अधिक-से-अधिक हित हो। है न दीदी ?

—हां, पथ का कोई साथी भी तो चाहिए। ठीक कहती हूं न ?

सरस्वती की आंखों में एक बूंद आंसू चमक गया।

—दीदी, तुम्हारी आंखों में आंसू ?

—मैं भी कमजोर हूं, पर तसल्ली यह है कि

It is better to have loved and lost
than never to have loved at all.

प्यार करके खो देना अच्छा है बनिस्बत इसके कि कभी प्यार ही न किया हो।

कहकर सरस्वती बादलों में चांद की तरह मुस्कराने लगी।

फिर से बोली—जीने के लिए यह अच्छा है कि कोई लक्ष्य हो। है न ? उससे जीने में रस और जायका पैदा होता है।

—हां।

सरस्वती ने घड़ी देखी। गर्मियों में पहलगाम में सन्ध्या धीरे से

उतरती है। उसे जल्दी नहीं होती।

इंदर से बोली—अरे मैं तो भूल ही जा रही थी। माइक तुम्हारे लिए एक पत्र छोड़ गया है। इतनी गड़बड़ी के बावजूद वह तुम्हारे लिए लंदन टाइम्स के नाम एक पत्र छोड़ गया। आदमी बहुत ही आनरेबल (आदरणीय) है। पासपोर्ट न इस्तेमाल करने का वादा निभाने के लिए हवाई जहाज अपहरण करा दिया। पर···

कहकर वह रुक गई।

—पर क्या, दीदी? वाक्य पूरा करो।

—काश उसका लक्ष्य सही होता!

—आप यह कहती हैं?—आशा ने आश्चर्य के साथ पूछा।

—कहती हूं—कहकर उसने इंदर के हाथ में वह पत्र दिया। इंदर उसे एक ही दृष्टि में पढ़ गया।

इंदर का चेहरा कड़ा पड़ गया। बोला—इस पत्र का अर्थ यह है कि खालिस्तान बनने की कोई आशा नहीं, मैं रण छोड़कर नौकरी करके शरीफ आदमी हो जाऊं।

सरस्वती बोली—मुझे छोड़ जाने का अर्थ भी यही है। फिर भी तुम सौभाग्यवान हो कि आशा तुम्हारे साथ है। मुझे तो अकेली चलना है, अकेली।

कहकर वह आशा को चूमकर आशा के पेट को हाथ लगाकर चूमकर घोड़े पर सवार हो गई और घोड़ा तेजी के साथ दौड़ने लगा टैक्सी स्टैंड की तरफ।

जब आशा ने लौटकर इंदर को देखा, तो वह फफक-फफक कर रो रहा था।

□□

मेरे सिर की क़सम, आप इसे न पढ़ें

यदि आप केवल उपन्यास में ही रस ले सकते हैं, तो आप इसे न पढ़ें क्योंकि फिर आप चिन्तक हो जाएंगे, जिससे आपकी नींद हराम हो सकती है।

हमारी आंखों के सामने भारत के कई रूप आए। पहले बर्मा भारत का ही एक भाग था। 1934 में वह अलग हुआ। जब यतीन्द्रनाथ दास लाहौर में अनशन कर रहे थे, उन्हीं दिनों फुंगी विजय भी बर्मा मे अनशन कर रहे थे। यतीन्द्रनाथ दास 13 सितम्बर 1929 को अपने अनशन के 63वें दिन शहीद हुए। उनका शव लाहौर से कलकत्ता ले जाया गया। हर स्टेशन पर भीड़ रही। कलकत्ते मे 6 लाख नागरिकों ने यतीन्द्र को अश्रु-भरी विदाई दी। फुंगी विजय भी इसी के आसपास शहीद हुए।

भारत मे इन दोनों की शहादतों को साथ-साथ उछाला गया। दोनों के फोटो साथ-साथ छपे। मैं उस समय जेल में लम्बी सजा काट रहा था। हमारे जैसे सैकड़ों लोग उस समय जेल मे थे। हम सबने दोनो की शहादत से अनुप्रेरणा ली। बहुत-से भारतीय बर्मा में रहे। इनमें शरत चटर्जी का नाम सबसे प्रमुख है। उनके कई उपन्यासों का ताना-बाना बर्मा तक फैला है।

इसके बाद ब्रिटिश सरकार ने बर्मा को भारत से अलग कर दिया। पर हम यह कैसे भूल सकते हैं कि भारत के बहुत-से क्रांतिकारी जैसे लोकमान्य तिलक, सुभाषचन्द्र बोस, मान्डले जेल मे वर्षों रखे गए, सोहन-लाल पाठक को बर्मा मे फांसी हुई। हमारे इतिहास की ये घटनाएं कभी भुलाई नही जा सकती। लोकमान्य तिलक ने प्रसिद्ध पुस्तक 'गीता रहस्य' इसी भूमि मे लिखी थी।

1947 को हम आजाद हुए, पर हमारे दोनों तरफ पाकिस्तान बना। उसे हमने मान लिया। गांधी शुरू में विरोधी थे, पर जब पाकिस्तान सिर

पर आ गया तो वह बदल गए। इसका पूरा इतिहास मैंने 'गांधी और उनका युग' नामक अपनी अंग्रेजी पुस्तक मे लिखा है। जवाहरलाल ने एक अंग्रेज लेखक से कहा हम बूढ़े हो रहे थे, हममे से अधिकतर लोग अब जेल नही जाना चाहते थे, इस लिए हमने जैसा जो कुछ मिला, उसे ग्रहण कर लिया।

यह समझना भूल है कि जो मुसलमान भारत मे रह गए, वे अशफाक, अबुल कलाम, डा० अन्सारी, अजमल खां के विचारो के कारण यहां रह गए। नही। इसके पहले वोटों के आंकड़े देखने पर पता चलता है कि बहुत-से मन से पाकिस्तानी, जिन्ना और मुहम्मद इकबाल के द्वारा भटकाए हुए लोग प्रमाद या आलस्य से यहां रह गए। ऐसे लोग नही जा पाए, इसलिए और भी कट्टर हो गए। अवश्य वे तो अधिकाश मर चुके होंगे। यह जरूरी नहीं कि वे अपने वंशजों को विरासत मे अपने विचारों से संक्रामित कर गए। कई घटनाएं ऐसी हुई जिनके कारण उनका विषैला बीज दुर्बल या नष्ट हो सकता था।

भारत के दो टुकड़े उसी कारण से बने, जिस कारण से जर्मनी के दो टुकड़े, कोरिया के दो टुकड़े, चीन के दो टुकड़े (चीन और ताइवान) वियतनाम के दो टुकड़े बने हैं। इनमे एक वियतनाम ही फिर से जुड़ पाया क्योंकि वहा जिन्ना, इकबाल ऐसे पैदा नही हुए थे। प्रथम महायुद्ध के बाद सेव्रस के सन्धिपत्र (10 अगस्त 1920) के अनुसार तुर्की साम्राज्य तोड़कर अरबो के बारह, कनौजिए के तेरह चूल्हे बना दिए गए। नतीजा यह है कि अपार धनराशि (पेट्रो डालर) के बावजूद अरब एक इस्राइल के सामने पनाह मांग रहे हैं। जैसा कहा वियतनाम के लोग ही ऐसे शूरवीर निकले कि अमेरिकनों के दांत खट्टे करके देश का एकीकरण करा लिया। यहां चलते हुए बात बता दी जाए। सारे अरबों की एक माता है, एक ही धर्म, फिर भी वे एक नही।

1971 मे पूर्व पाकिस्तान भारत की बहादुर सेना के सहयोग से अलग देश बन गया। इस प्रकार पाकिस्तान जिस अवैज्ञानिक जिन्नावादी, मुहम्मद इकबालवादी अदूरदर्शी सूत्र के आधार पर बना था, यानी दो राष्ट्र सिद्धांत यानी हिन्दू अलग जाति है, मुस्लिम अलग जाति, उसकी

ऐसी की तैसी हो गई। प्रमाणित हो गया कि जिन्ना और मुहम्मद इक़बाल ने अपनी उच्चाकांक्षाओ को तृप्त करने के लिए (इकबाल बेचारे पाकिस्तान देख न सके क्योंकि 193९ में मर गए) मुसलमानो को गुमराह किया। प्रमाणित हो गया कि भाषा यानी बंगला भाषा इस्लाम से प्रबलतर शक्ति है। यहा यह बताने की जरूरत नही कि पूर्व बंगाल मे कलह भाषा आन्दोलन से ही शुरू हुआ था। वही झगडा बढते-बढ़ते पाकिस्तान के दो टुकडे हो गए। पर नही, यह भी प्रधान कारण था, पंजाबी मुसलमानों द्वारा बंगाली मुसलमानों का शोषण। पंजाबी मुसलमान बगाली मुसलमानों को दोयम दर्जे का नागरिक मानते थे और उनका उसी प्रकार शोषण कर रहे थे, जैसे अंग्रेज हमारा करते थे। यह भी याद दिला दूं कि पंजाबी मुस्लिम सैनिकों ने 1970-71 में तीस लाख (90 फीसदी मुसलमान) बंगालियों को मार डाला और एक लाख स्त्रियों के साथ बलात्कार किया। अफसोस है कि इन बलात्कारी सैनिको को न मुजीब ने सजा दी, न इन्दिरा ने। भारत ने नब्बे हजार बलात्कारियों को छोडते समय पाकिस्तान पर वे करोड़ो रुपये भी छोड़ दिए जो भारत को अन्तर्राष्ट्रीय कानून के अनुसार मिलता। पर इस उदारता से कट्टर मुसलमानों पर कोई असर नही हुआ।

यद्यपि पाकिस्तान इस सिद्धांत पर बना था कि मुस्लिम एक अलग नेशन है फिर भी पंजाबी मुसलमान, बंगाली मुसलमानो को अपने बराबर मानने को तैयार नही थे, इसलिए जब चुनाव में मुजीब को सबसे अधिक आसन (संसद मे) मिले, तो भुट्टो मुजीब को पूरे पाकिस्तान का प्रधानमंत्री मानने को तैयार नही हुआ, इसी से पाकिस्तान टूट गया। भुट्टो ने पाकिस्तान तोडा न कि मुजीब ने।

स्वराज्य के बाद भारत में काफी मुसलमान रह गए। जिन्ना को चाहिए था कि उनको बुलाता, पर उसको तो शक्ति पाने से मतलब था। वह चुप्पी साध गया। इससे जाहिर है कि सिद्धात उसके लिए महज़ एक सीढ़ी था। इसके विपरीत गांधी और नेहरू ने मुसलमानो को रोका। महात्मा ने तो पाकिस्तान को रुपये दिलाने के लिए अनशन की धमकी दी। अन्त में महात्मा गान्धी के ऐसे विचारों से क्षुब्ध होकर कुछ हिन्दुओं को यह विश्वास हो गया कि महात्मा मुसलमानों के साथ पक्षपात कर रहे हैं,

तभी इस धारणा के प्रमाद और उन्माद में एक हिन्दू ने उनकी हत्या कर दी थी।

प्रश्न यह था कि क्या देश के दो टुकड़े होने के बाद भारत में साम्प्रदायिक स्थिति सुधरी ? अधिक नही, क्योंकि जो मुसलमान भारत में रह गए थे, उनमें से अधिकांश वे लोग थे जो हमेशा मुस्लिम लीग ऐसी सस्थाओं को वोट देकर पाकिस्तान बना चुके थे। वे आलस्य, लालच और कायरता के कारण पाकिस्तान नही गए थे। स्वराज्य के पहले के वोटों के विश्लेषण से यही अर्थ निकलता है। इस प्रकार विभाजन मे इतना ही हुआ कि जिन्ना आदि कुछ व्यक्तियो की उच्चाकाक्षाए पूर्ण हुई। अफसोस, जिन्ना कैंसर से पीड़ित थे, पर मुसलमान जहा के तहा रह गए। पाकिस्तान में आम मुसलमानों को कोई अधिकार नही रहा। मुस्लिम लीग के नवाबों और दूसरे लोगों के पीछे कोई त्याग और तपस्या की परम्परा नही थी, जैसे गाधी, नेहरू, बिस्मिल, अशफाक, अन्सारी, अजमल खा, मौलाना आजाद के पीछे थी। लोगों आपस मे लडे, नतीजा यह हुआ कि सेनापतियों की बन आई। सैनिक शासन हो गया। पहले अय्यूब रहे फिर जिया आए। ये कुरान के व्याख्याता बन गए। सैनिक डिक्टेटरों का पहला काम होता था पाकिस्तान की गाढी कमाई के दस-बीस करोड रुपये विदेशी बैंको में जमा करना। पाकिस्तान मे कभी नागरिक आजादी नही रही। फिर भी कुछ नासमझ भारतीय मुसलमान पाकिस्तान को अपना स्वर्ग मानते रहे, जहां वे जा न सके। न जा पाने की छटपटाहट में वे बराबर आक्रामक बनते गए। शासक कांग्रेस दल के नेता उनकी मनोवृत्ति से मुंह फेरते रहे। वामपंथी भी ऐसा ही करते रहे। यह सब वोट के लोभ से। इतिहास का यह पृष्ठ बहुत ही लज्जाजनक है। कुछ वामपक्षी नामधारी गाठ के पूरे और अक्ल के खोटे लोगों ने पाकिस्तान का समर्थन किया था। मुहम्मद इकबाल पाकिस्तान के दूसरे पिता थे, उनके नाम मे अकादमी, चेयर बन रहे हैं, कहते हैं सरकार ने उसकी जन्म-शताब्दी पर प्रेमचन्द जन्म-शताब्दी से अधिक खर्च किया। सब वोट के लालच में। टेलीविजन पर अली सरदार द्वारा प्रस्तुत इकबाल पर फिल्म दिखाई गई, जिसमें यह बात छिपाई गई कि इकबाल पाकिस्तान विचार के

में। मैंने इस पर मंत्रीवर साठे को पत्र लिखा, पर उत्तर नहीं मिला। भारत के मुस्लिम लेखक इस बात को छिपाते हैं कि इकबाल का सहारा न होता, तो पाकिस्तान का सौदा ढह-वह जाता। पाकिस्तान के लेखक इसको गौरव के साथ उछालते हैं। मुझे इस कारण पाकिस्तान से साहित्य मगाना पड़ा, असलियत जानने के लिए। इस सम्बन्ध मे इकबाल के पत्र जिन्ना के नाम बहुत महत्त्वपूर्ण हैं। यह पुस्तक शाह मुहम्मद अशरफ, कश्मीरी बाजार, लाहौर से छपी है। *इसके अनेक संस्करण हुए हैं।*

हिन्दू-मुस्लिम मेल के पुराने फार्मूले ईश्वर अल्ला तेरे नाम फेल हो गए। गाधी की शहादत से भी उस फार्मूले की भरी हुई नसों मे रक्त का संचार न हो सका। जाकिर हुसेन, फखरुद्दीन अली अहमद, लतीफी से किसी की कट्टरता में कमी नही आई। जब तब खेल के मैदान में पाकिस्तान जिन्दाबाद का नारा सुन पड़ता है।

इस स्थिति की दो ही दवाएँ हैं—

(1) गाजी मुस्तफा कमाल पाशा का वह सूत्र अपनाया जाये कि मुसलमान मस्जिद के अन्दर मुसलमान है, बाहर वह नागरिक है। भारत में इसको प्रसारित कर कहना पडेगा, हिन्दू मन्दिर मे हिन्दू है, बाहर वह नागरिक है। सौभाग्य से हमारे पास दो शहीद हैं, जिनमें कमाल पाशा से पहले उनका यह सूत्र वास्तविक होकर सार्थक हो चुका था। वे शहीद हैं रामप्रसाद बिस्मिल और अशफाक उल्ला, जिन्हें 1927 के 19 दिसम्बर को काकोरी षडयंत्र मे क्रमश: गोरखपुर और फैजाबाद जेल में फांसी लगी थी। रामप्रसाद बिस्मिल नित्य (जब छुट्टी मिली) हवन करते, अशफाक कन्धे पर कुरान लटकाकर फासी पर चढ़े। बिस्मिल, अशफाक बहुत घनिष्ठ मित्र थे।

(2) दूसरी दवा है मार्क्स का सूत्र कि धर्म जनता के लिए अफीम है। भगतसिंह (फांसी 23 मार्च 1931) और चन्द्रशेखर आजाद (27 फरवरी 1931 को गोलियों का जवाब गोलियों से देते हुए शहीद) इसको अपनाने पर विवश हुए थे क्योंकि उन्होंने देखा कि सब बिस्मिल, अशफाक नही बन सकते। सबके पास वह पूर्जी नहीं। भगतसिंह की पुस्तक 'मैं क्यों नास्तिक हूं' सबके लिए पाठ्य है। अस्तु।

रहा आसाम और पंजाब मे जो कुछ हो रहा है, उसको हम देख रहे हैं। स्वराज्य के समय आसाम मे मेघालय, नागालैंड, मिजोरम थे, वे क्यों अलग हुए ? विदेशी धन इसमें कहां तक है ? मैंने इस ओर ऐसे सारे विषयो को लेकर एक उपन्यास लिखा है । आंध्र वालो को कांग्रेस नापसंद थी, उन्होंने चुनाव मे एक अभिनेता को गद्दी पर बैठा दिया । रेगन भी अभिनेता है । आसामी तथा अकाली आन्दोलनकारी यदि बहुसख्या में होते तो वे सरकार उलट देते । वे उस रास्ते को नही अपना रहे है, इससे स्पष्ट है कि एक अल्पसंख्या बहुसख्यको पर येन-केन प्रकारेण अपना मत लादना चाहती है । इसमे और भी पेंच है ।

यह बड़े दु:ख की बात है कि 1971 मे बांगलादेश के उदय से जिस प्रकार दो राष्ट्र सिद्धात की कमर टूट गई, जिन्ना और इकबाल के मुह पर इतिहास का करारा थप्पड पडा, उससे विदेशों में बैठे कुछ गुमराह सिख नसीहत नही ले पाए । अब वे उसी मरे हुए घोड़े पर चाबुक मारकर त्रिराष्ट्र सिद्धात को लेकर सामने आए और उन्होंने केवल हिन्दुओं को ही नही अपने से मतभेद रखने वाले सिखों को भी मौत के घाट उतार दिया । हमें दु:ख इस बात का है कि कभी गदर पार्टी की मशाल अमेरिका से जलकर मुख्यत: पजाबियों के हाथो आई थी और एक-दो नही आठ हजार देशभक्त अपनी कमाई छोड़कर सिर पर कफन बांधकर आगे आए थे । पर तब अमेरिका और था ।

जिन विदेशी कूटनीतिज्ञो ने यह नारा दिया है कि सन् 2000 तक भारत को तोड़ना है, तभी हम उसे पाकिस्तान की तरह अपनी कठपुतली बना सकते हैं, उनका यह मनसूबा कभी पूरा नही होने का । पर इसके लिए हमे वैज्ञानिक वृत्ति अपनानी पडेगी । ऐसा लगता है कि अन्ततोगत्वा भगतसिह आजाद के चिन्तन को हमे अपनाना पड़ेगा । और कोई रास्ता दिखाई नही देता ।

यह इन्दिरा गाधी की शहादत के पहले लिखा गया था, इस कारण पाठक इसका वोल्टेज कम-से-कम दसगुना बढ़ा लें—

—मन्मथनाथ गुप्त

—

हमारा सम्पूर्ण कथा-साहित्य

दिन दहाड़े···	मन्मथनाथ गुप्त	25.00
उस पार का मर्द	आबिद सुरती	18.00
भगोड़ा	मुद्राराक्षस	18.00
हम सब मंसाराम	,,	18.00
अनुलघ्य	क्रांति त्रिवेदी	30.00
तपस्विनी	क्रांति त्रिवेदी	30.00
मधुमती	हरिस्वरूप गौड़	18.00
स्वर्णिम शिखर प्रांगण में	समरेश बसु	22.00
मृगान्तक	गंगाप्रसाद विमल	25.00
मंत्रीजी के निजी सचिव की डायरी	डा० बरसानेलाल चतुर्वेदी	15.00
किस्सा एक खरगोश का	से० रा० यात्री	25.00
आवारा सूरज	बाला दुबे	25.00
चीख के आर-पार	ज्योत्स्ना मिलन	15.00
शोर	महीपसिंह	18.00
मिट्टी की गाड़ी	महाकवि शूद्रक	16.00
स्पार्टकस	हावर्ड फास्ट	15.00
आराधना	उदय चौधरी	25.00
आन	उदय चौधरी	12.00
उपनिवेश	धर्मपाल	20.00
मृत्यु-संगीत	यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र'	22.00
'हलो'	राजकृष्ण मिश्र	(शीघ्र प्रकाश्य)